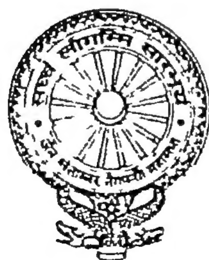
भिक्खु दृष्टान्त

संग्रहकर्ता :

श्रीमद् जयाचार्य



प्रकाशक :
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कलकत्ता



प्रथमावृत्ति
जून, १९६०



प्रति संख्या
१५००



पृष्ठ संख्या
१४८



मूल्य :
दो रुपये पच्चास नये पैसे



मुद्रक :
रेफिल आर्ट प्रेस
कलकत्ता—७

प्रकाशकीय

भिक्षु-विचार ग्रन्थावली का यह द्वितीय ग्रन्थ पाठको के समक्ष है। इसमे तेरापन्थ के आद्य आचार्य स्वामी भीखणजी के कतिपय जीवन-प्रसंगो का संग्रह है। इन बहुमूल्य संस्मरणों का तेरापंथ-इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनसे स्वामीजी के जीवन की वास्तविक झाँकी पाठकों के सामने आयगी और उनको उनकी भावनाओं के मूलस्रोत तक पहुँचने का अवसर प्राप्त होगा।

आशा है, पाठकों को प्रस्तुत प्रकाशन अत्यंत प्रिय प्रतीत होगा।

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह व्यवस्था उपसमिति
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,
कलकत्ता—१
१ जून, १९६०

श्रीचन्द रामपुरिया
व्यवस्थापक,
साहित्य-विभाग

भूमिका

यह पुस्तक आकार में इतनी छोटी होने पर भी सामग्री की दृष्टि से बहुत ही महत्व-पूर्ण है। इसमें स्वामीजी के ३१२ जीवन-प्रसगो का संकलन है। ये जीवन-प्रसग मुनि श्री हेमराजजी के लिखाये हुए हैं जो स्वामीजी के अत्यन्त प्रिय शिष्य थे और शासन के स्तम्भ स्वरूप माने जाते थे। इन प्रसगों को श्रीमद् जयाचार्य ने लिपिवद्ध किया। इस पुस्तक के अन्त में जयाचार्य की कृति 'भिक्षु यश रसायण' के जो दोहे उद्धृत हैं उनसे यह वात स्पष्ट है। इन प्रसगो में सहज स्वाभाविकता है। रग चढाकर उन्हे कृत्रिम किया गया हो ऐसा जरा भी नही लगता। इन हूवहू चित्रित जीवन-पटो से स्वामीजी के जीवन, उनकी वृत्तियो, उनकी साधना और उनके विचारो पर गभीर प्रकाश पडता है। स्वामीजी की सैद्धान्तिक ज्ञान-गरिमा, प्रत्युत्पन्न वुद्धि, हेतु-पुरस्सरता, चर्चा-प्रवीणता, प्रभावशाली उपदेश - शैली और दृढ अनुशासनशीलता आदि का इन जीवन प्रसगो से वडा अच्छा परिचय होता है। जीवन प्रसगो का यह संकलन एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक कृति है जो स्वामीजी के समय की जैन धर्म की स्थिति, उस समय के साधु-श्रावकों की जीवन-दशा तथा उनके आचार-विचारो की यथार्थ भूमिका को प्रामाणिक रूप से उपस्थित करती हुई स्वामीजी की जीवन-व्यापी अखण्ड साधना का एक सुन्दर चित्र उपस्थित करती है। श्रीमद् जयाचार्य ने इन दृष्टान्तो का संकलन कर स्वामीजी के जीवन और शासन के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं को ही सुरक्षित नही किया वरन् उस समय की स्थिति का दुर्लभ इतिहास भी गुम्फित कर दिया है, जिसके प्रकाश में स्वामीजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व का सही मूल्याङ्कन किया जा सकता है।

मुनि हेमराजजी की दीक्षा स० १८५३ में हुई थी। उनकी दीक्षा का प्रसंग वडा रसपूर्ण है। उसमे स्वामीजी की वैराग्यपूर्ण उपदेश-शैली का उत्कृष्ट उदाहरण मिलता है। साथ ही उससे मुनि हेमराजजी के व्यक्तित्व की सुन्दर झांकी मिलती है। इस पुस्तक में मुनि हेमराजजी और स्वामीजी के साथ घटे हुए अन्य भी कई प्रसगो का उल्लेख है जो दोनो की जीवन-गरिमा पर गहरा प्रकाश डालते हैं। मुनि हेमराजजी दीक्षा के वाद चार वर्ष तक स्वामीजी की सेवा में रहे। वाद मे स्वामीजी ने उनका सघाडा कर दिया और उन्हें अलग विचरना पड़ा। इस पुस्तक में दिये गये प्रसंगों में से कुछ हेमराजजी स्वामी के रूबरू घटे हुए हैं। कुछ उन्होने स्वामीजी से सुने। कुछ दृष्टान्त ऐसे हैं जो दूसरो से उन्होने सुने और प्रामाणिक समझ श्री जयाचार्य को लिखाये।

स्वामीजी से चर्चा करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकृति और धर्मों के लोग आते। कुछ स्वामीजी को नीचा दिखाने के लिए आते, कुछ उनकी बुद्धि की परीक्षा करने, कुछ धर्म-चर्चा के नाम पर उनसे झगडा करने, कुछ सैद्धान्तिक चर्चा करने और कुछ जडभरत—दूसरो के सिखाए हुए। जो व्यक्ति जैसा होता उसके अनुरूप हेतु तर्क, बुद्धि-कौशल, दृष्टान्त अथवा सूत्र-साक्षी से स्वामीजी चर्चा करते या उत्तर देते। लिफाफा देख-कर मजमून समझ लेना यह उनकी बुद्धि की सबसे बडी विशेषता थी और इस विशेषता के कारण वे आगन्तुक व्यक्ति के मानस का चित्र पहले से ही खीच लेते और अपनी औत्पातिक बुद्धि से युक्ति-पुरस्सर प्रत्युत्तर दे चमत्कार-सा उत्पन्न करते। इन दृष्टान्तो मे उनकी इस विशेषता के अनेक अद्‌भुत चित्रण मिलते हैं।

उनकी वाणी सहज ज्ञानी की वाणी है। वह स्वय स्फुरित है। उसमें अध्यात्म, संवेग तथा वैराग्य-रस भरा हुआ है। निर्मल ज्ञान-रश्मियो का प्रकाश है। स्पष्ट और सही सूझ तथा दृष्टि है। उसमें जैन दर्शन के मौलिक स्वरूप पर दिव्य प्रकाश है तथा क्रांत वाणी की तीव्र भेदकता और उद्‌बोधन है।

स्वामीजी महान् धर्मकथी थे। छोटे-छोटे दृष्टान्तो के सहारे गूढ दार्शनिक प्रश्नो का उत्तर उन्होंने इतने सुबोध और सरल ढग से दिया है कि उन्हें पढ कर हृदय विस्मय-विमुग्ध हो जाता है।

स्वामीजी की सी दृढता बहुत कम देखी जाती है। न्याय मार्ग-पर चलते हुए वे विघ्न-बाधाओ से कभी नही घबडाए। वे दुर्दान्त योद्धा का सा मोर्चा लेते हैं और कभी पीछे नही ताकते।

शिष्यो के साथ उनका व्यवहार जितना वात्सल्यपूर्ण होता उतना ही अवसर पर कठोर भी। अनुशासन के समय यदि वे वज्रादपि कठोर थे तो अन्य प्रसंगो पर कुसुमादपि मृदु भी।

चर्चा के समय वे दुर्भेद्य व्यूह से देखे जाते हैं। सिद्धान्त-बल, बुद्धि-बल, तर्क-बल, हेतु-बल, परम्परा-बल—इनकी अनोखी छटा सूर्य की रश्मियो की तरह एक चकाचौंध पैदा कर देती है। गभीर ज्ञान और लक्ष्य-भेदी गिरा समुद्र की ऊर्मियो की तरह छल-छल निनाद करते हुए देखे जाते हैं। पैनी तर्क-शक्ति और अवसर-अनुकूल व्यङ्गोक्ति तीक्ष्ण तीर की तरह सीधा लक्ष्य-भेद करती सी दीखती है।

स्व-समय और पर-समय का सूक्ष्म विवेक उनकी लेखनी द्वारा जैसा प्रगट हुआ है वैसा अन्यत्र नही देखा जाता। जैन धर्म को मलीन करने वाली मान्यताओ और आचार का धान और तुस की तरह पृथक्करण जैसा उन्होंने किया अन्यत्र दुर्लभ है। मिथ्या अभिनिवेशो और मान्यताओ पर उनके प्रहार तीव्र रहे।

उनका बल शुद्ध आचार पर रहा। केवल वेष के वे जीवन भर विरोधी रहे। इसके लिए उन्हें बड़े कष्ट सहने पड़े पर वे कभी पश्चात्पद नही हुए। शुद्ध श्रद्धा और आचरण के साथ सयमी का प्रमाणपुरस्सर वेष हो, यदि साधु का बाना धारण किया हो तो उसके साथ शुद्ध श्रद्धा और आचार भी हो—यही उनका प्रतिपाद्य रहा। 'कृत्रिम ब्राह्मणी', 'खोटा सिक्का', 'छिद्रवाली नौका', 'लूकडी का चौधरपन' आदि दृष्टान्त उनकी इस भावना के प्रतीक हैं।

उन्होने एक व्यग किया है· 'पति के मरने पर स्त्री को उसकी अरथी के साथ बांधकर जला दिया गया और उसे सती घोषित कर दिया गया। यदि कोई इस तरह जबरदस्ती सती की गई स्त्री का स्मरण कर प्रार्थना करे—हे सती माता! मेरा बुखार दूर करो तो स्वय क्रूरता की शिकार बनी वह सती क्या बुखार दूर करेगी ? वैसे ही यदि रोटी का भूखा कोई साधु का वेष पहरे और उससे कोई कहे कि तुम श्रामण्य का अच्छी तरह पालन करना तो वह क्या खाक पालन करेगा ?'

अनेक दृष्टान्तो में बडा सुन्दर तत्त्व निरूपण मिलता है। उदाहरण स्वरूप थोडे से दृष्टान्तो की हम यहां चर्चा करेंगे।

पुस्तक और ज्ञान में क्या अन्तर है, इसकी भेद-रेखा एक दृष्टान्त मे बडी ही सुन्दर रूप से प्रगट हुई है· 'पुस्तक के पन्नों को ज्ञान कहते हो सो पुस्तक के पन्ने फट गये तो क्या ज्ञान फट गया ? पन्ने अजीव हैं, ज्ञान जीव है। अक्षरो का आकार तो पहचान के लिए है। पन्नो में लिखे हुए का जानना ज्ञान है। वह आत्मगत है। स्वय के पास है। पन्ने भिन्न हैं।' (२०८)

संगठन का प्रश्न अनेक बार सामने आता है। स्वामी जी के सामने भी वह आया था। उनका चिन्तन है· 'विचार और आचार की एकता के बिना साधु जीवन की एकता सम्भव नही। श्रद्धा और आचार की एकता हो जाने पर द्वैध नही टिकता। उसके अभाव में द्वैध नही मिट सकता।' (२०६)

आइस्टीन से उसकी स्त्री ने पूछा—'तुम्हारा सापेक्षवाद क्या है सरलता से बतलाओ।' आइंस्टीन ने उत्तर दिया—'सुहाग रात्रि छोटी लगती है और एक क्षण का भी अग्नि का स्पर्श बडा दीर्घकालीन लगता है यही सापेक्षवाद है।'

स्वामी जी रात्रि में व्याख्यान दिया करते। जैन साधु को रात्रि मे एक प्रहर के बाद जोर से बोलने का निषेध है। द्वेषी हल्ला मचाते—'रात्रि बहुत हो गयी। १। पहर १॥ पहर बीत गई फिर भी व्याख्यान चलता है। यह साधु का काम नही।' स्वामी जी ने एक बार उत्तर दिया 'विवाहादि सुख की रात्रि छोटी मालूम देती है। यदि मनुष्य संध्या-समय मर जाय तो दुःख की वह रात्रि अत्यन्त दीर्घ हो जाती है। इसी तरह

जिन्हे द्वेपवश व्याख्यान नही सुहाता उन्हे रात्रि अधिक आई दिखाई देती है। जो अनुरागी हैं उन्हे तो वह प्रमाण से अधिक आई नही दिखाई देगी।' (१८) स्वामी जी ने लोगो को समझाने में ऐसे सापेक्षवाद का अनेक जगह उपयोग किया है।

धन और ज्ञान के साथ गठबन्धन होता ही है ऐसा मानना निरी भूल है। धनी जो कुछ करता है वह ज्ञान से ही करता है—यह सिद्धान्त नही हो सकता। उत्तमो जी ईराणी बोले—'आप देवालयो का निषेध करते हैं पर पूर्व में बडे-बडे लखपति करोडपति हो गये हैं उन्होने देवालय बनवाये हैं।' स्वामी जी ने पूछा—'तुम्हारे पास ५० हजार की सम्पत्ति हो जाय तो देवालय बनवाओगे या नही ?' वह बोला—'अवश्य बनवाऊँगा।' स्वामी जी ने पूछा—'तुममे जीव के कितने भेद हैं ? कौन सा गुणस्थान है ? उपयोग, योग, लेश्या कितनी है ?' वह बोला—'यह तो मुझे मालूम नही।' स्वामी जी बोले—'पूर्व के लखपति करोडपति भी ऐसे ही समझदार होंगे। सम्पत्ति मिलने से कौन-सा ज्ञान आ जाता है।' (३६)

इन दृष्टान्तो मे कई अनुभव-वाक्य भरे पडे हैं 'आत्म-प्रदेशो मे क्षामना हुए बिना निर्जरा नही होती', (१२०), 'धान मिट्टी की तरह लगने लगे तब सथारा कर लेना चाहिए', (१२१) 'आडम्बर न रखने से ही महिमा है' (१२५), 'साधु गृहस्थ के भरोसे न रहे', (२६०-२६१), 'जिस चर्चा मे भ्रम उत्पन्न हो वैसी चर्चा नही करनी चाहिए' (२५६)। आदि आदि।

उनकी दृष्टि भविष्य को भेदती। वे बहुत आगे की देखते। उनका कहना था छिद्र से दरार होती है। पहले कोपल होती है और फिर वृक्ष। एक बार किसी ने कहा 'आप काफी वृद्ध हो चुके हैं। अब बैठे-बैठे प्रतिक्रमण क्यो नही करते ?' स्वामी जी बोले 'यदि मैं बैठ कर प्रतिक्रमण करूगा तो सम्भव है बाद वाले लेटे-लेटे करें।'

अहिंसा के क्षेत्र मे उन्होने जितना सोचा, विचारा, मनन किया, मथन किया उसकी अपनी एक निराली देन है। 'आत्मवत् सर्वभूतेपु' की भावना के वे एक सजीव प्रतीक थे। 'छहो ही प्रकार के जीवो को आत्मा के समान मानो'—भगवान की यह वाणी उनकी आत्मा को भेद चुकी थी।

अहिंसा विपयक कितने ही सुन्दर चिन्तन इस पुस्तक मे हैं। स्वामी जी से किसी ने पूछा—'सूत्रो में साधु को छायी-रक्षक कहा है। जीवो की रक्षा करना उसका धर्म है।' स्वामी जी ने कहा—'छायी ठीक ही कहा है। उसका अर्थ है जीव जैसे हैं उन्हें वैसे ही रहने देना, किसी को दुःख न देना।' (१५०)

उस समय एक अभिनिवेश चलता था—'हिंसा बिना धर्म नहीं होता।' इस बात की पुष्टि में उदाहरण देते—'दो श्रावक थे। एक को अग्नि के आरम्भ का त्याग था, दूसरे को नहीं। दोनो ने चने खरीदे। पहला उन्हें यो ही फाकने लगा, दूसरे ने उन्हें भूनकर भूने

बना लिए। इतने में साधु आये। पहले के पास कच्चे चने होने से वह बारहवां व्रत निष्पन्न नही कर सका। दूसरे ने भूने बहरा कर बारहवां व्रत निष्पन्न किया। तीव्र हर्ष के कारण उसके तीर्थंकर गोत्र का बधन हुआ। यदि अग्नि का आरम्भ कर वह भूने नही बनाता तो इस तरह उसके तीर्थंकर गोत्र का बधन कैसे होता ?'

स्वामी जी ने उत्तर में दृष्टान्त दिया—'दो श्रावक थे। एक ने यावज्जीवन के लिए ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। दूसरा अब्रह्मचारी ही रहा। उसके पाच पुत्र हुए। बडे होने पर दो को वैराग्य हुआ। पिता ने हर्षपूर्वक उनको दीक्षा दी। अधिक हर्ष के कारण उसके तीर्थंकर गोत्र का बधन हुआ। यदि हिंसा में धर्म मानते हो तो सन्तानोत्पत्ति मे भी धर्म मानना होगा। हिंसा विना धर्म नही होता तब तो अब्रह्मचर्य बिना भी धर्म नही होना चाहिए ?'

किसी ने कहा—'एकेन्द्रिय मार पचेन्द्रिय जीव पोषण करने मे धर्म है।' स्वामी जी बोले—'अगर कोई तुम्हारा यह अगोछा छीनकर किसी ब्राह्मण को दे दे तो उसमे उसे धर्म हुआ कि नही ?' वह बोला—'इसमे धर्म कैसे होगा ?' स्वामी जी ने पुन पूछा—'कोई किसी के धान के कोठे को लुटा दे तो उसे धर्म होगा या नही ?' उसने कहा—'इसमें धर्म कैसे होगा ?' स्वामीजी बोले—'धर्म क्यो नही होगा ?' वह बोला—'मालिक की इच्छा बिना ऐसा करने में धर्म कैसे होगा ?' स्वामीजी बोले—'एकेन्द्रिय जीवो ने कब कहा—हमारे प्राण लेकर दूसरे को पोषो। एकेन्द्रियो के प्राण लूटने से धर्म कैसे होगा ?' (२६४)

किसी ने प्रश्न किया 'एक बालक पत्थर से चीटियो को मार रहा था। किसी ने उससे पत्थर छीन लिया तो उसे क्या हुआ ?' स्वामीजी ने पूछा 'छीनने वाले के हाथ क्या लगा ?' उसने जवाब दिया—'पत्थर।' स्वामीजी ने कहा—'तुम्ही विचार लो छीनने वाले को क्या होता है ?' (५३)

दूसरा अभिनिवेश था—'एकेन्द्रिय को मार पचेन्द्रिय को पोषण करने मे धर्म अधिक होता है।' स्वामीजी बोले 'एकेन्द्रिय से द्वीन्द्रिय के पुण्य अनन्त होते हैं। द्वीन्द्रिय से त्रीन्द्रिय के। त्रीन्द्रिय से चोइन्द्रिय के और चोइन्द्रिय से पचेन्द्रिय जीव के। एक मनुष्य पचेन्द्रिय को पैसे भर लट खिला कर उसकी रक्षा करे तो उसे क्या हुआ ?' इस प्रश्न का वह जवाब देने में असमर्थ हुआ। स्वामीजी बोले 'जिस तरह द्वीन्द्रिय को मार पचेन्द्रिय को बचाने मे धर्म नही, वैसे ही एकेन्द्रिय मार पचेन्द्रिय बचाने मे धर्म नही।' (२४८)

किसी ने कहा—'भगवान् ने वनस्पति खाने के लिए बनाई है।' स्वामीजी ने पूछा 'गांव मे अगर एक भूखा सिंह आ जाये तो तुम क्या करोगे ?' वह बोला : 'मैं भाग

कर गाँव के बाहर चला जाऊँगा।' स्वामीजी ने कहा . 'भगवान् ने मनुष्य को सिंह का भक्ष्य बनाया है। तुम सिंह के भक्ष्य होकर क्यो भाग कर गाँव के बाहर चले जाओगे ?' वह बोला 'मेरा जी कष्ट पाने को तैयार नहीं। इसलिये भाग कर चला जाऊँगा।' स्वामीजी बोले 'सर्व जीवो के विषय में यही बात जानो। मौत सबको अप्रिय है। उससे सब जीव दुःख पाते हैं।' (२३६)

स्वामीजी के सामने जिज्ञासा थी—'किसीने पैसा देकर सर्प छुडाया। वह सीधा चूहे के बिल मे गया। वहाँ चूहा नही था। सर्प छुड़ाने वाले को क्या हुआ ?' स्वामीजी ने कहा 'किसी ने काग पर गोली चलाई। काग उड गया, उसके गोली नही लगी। गोली चलाने वाले को क्या होगा ? काग उड गया इससे उसके गोली नही लगी यह उसका भाग्य पर गोली चलाने वाले को तो पाप लग चुका। इसी तरह किसी ने सर्प को छुडाया, वह चूहे के बिल मे गया अन्दर चूहा नही यह उसका भाग्य। पर सर्प को छुडाने वाला तो हिंसा का कामी हो गया।' (२७२)

स्वामीजी ने एक बार कहा 'एक मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य को कटारी से मारने लगा। वह मनुष्य बोला—'मुझे मत मारो।' तब वह बोला—'मेरे तुझे मारने के भाव नही हैं। मैं तो कटारी की परीक्षा करता हूँ। देखता हूँ वह कैसी चलती है।' तब वह बोला—'गनीमत तुम्हारे कीमत आकने को। मेरे तो प्राण जाते हैं।' (१०१)

अहिंसा के क्षेत्र मे कार्य और भावना दोनो पर दृष्टि रखनी पडती है यह उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है। स्वामीजी ने अहिंसा के क्षेत्र मे तुच्छ एकेन्द्रिय जीवो के प्राणो का भी उतना ही मूल्यांकन किया है जितना कि सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य के जीवन का। एकेन्द्रिय जीवो के भी प्राण हैं। उन्हें भी सुख-दुःख होता है। मनुष्य के लिए उनके संहार में पाप नहीं, यह धर्म और अहिंसा के क्षेत्र मे नही टिक सकता।

स्वामीजी कइयो को प्रिय थे और कइयो को अप्रिय। कइयो के लिए स्वागतार्ह थे और कइयो के लिए एक महान् भय। इस तरह एक ही व्यक्ति के अलग अलग रूप दिखाई देते हैं। इसके कारण की स्वय स्वामीजी ने ही मीमासा की है। इसमें अपेक्षा-वाद है। स्वामीजी कहते हैं—'एक ही पकवान दो मनुष्यो के सामने आता है। निरोग को वह मीठा लगता है और रोगी को कडवा। यह वस्तु का अन्तर नही उसके भोक्ता का अन्तर है। सम्यक् दृष्टि को साधु अच्छा लगता है और मिथ्या दृष्टि को बुरा।' (२०३)

'गांव के मनुष्य दो व्यक्तियों के सामने आते हैं। एक व्यक्ति पीलिये का रोगी है वह उन सबको पीला ही पीला देखता है। दूसरा व्यक्ति स्वस्थ है। उसे वे पीले नहीं मालूम देते। वैसे ही मेरे श्रद्धा-आचार उनको प्रपंच मालूम देते हैं जिनमे स्वयं मे प्रपंच है। जिनमें शुद्ध दृष्टि है उन्हें मेरे श्रद्धा-आचार में कोई खोट नहीं दिखाई देती।' (२००)

स्वामीजी के विचारो को सही रूप से तोलने की यदि कोई शुद्ध तुला हो सकती है तो वह आगम-वाणी है। स्वामीजी जैन-मुनि थे। जैन-शास्त्रो के आधार पर वे मुण्डित हुए थे। उसमे उनकी अनन्य श्रद्धा थी। उनके आचार, विचार और व्यवहार मे जिन-वाणी का प्रत्यक्ष प्रभाव है। इस कसौटी पर देखा जाय तो वे सौ टंच सोने की तरह खरे उतरते हैं।

स्वामीजी के इन दृष्टान्तो का श्रीमद् जयाचार्य ने अपने 'भिक्षु यश रसायण' नामक सुन्दर चरित्र-काव्य में भरपूर उपयोग किया है। सगीतमय मधुर पद्य में उन्हें गुम्फित कर स्वामीजी के एक मार्मिक जीवन-चरित्र की धरोहर उन्होंने भावी पीढी को सौंपी है।

लेखक की 'आचार्य सत भीखणजी' नामक पुस्तक मे अनेक दृष्टान्तो का हिन्दी अनुवाद और भाव स्फोटन है। इसी पुस्तक के द्वितीय खण्ड (अप्रकाशित) में अवशेष अन्य दृष्टान्तो का प्रकरणानुसार उपयोग किया गया है।

सद्य प्रकाशित 'भिक्षु-विचार दर्शन' नामक सुन्दर पुस्तक मे भी अनेक दृष्टान्तो के गांभीर्य उद्घाटित हैं।

स्वामीजी के दृष्टान्त आज तक हम लोग व्याख्यानो मे सुनते रहे। प्रथम वार वे सम्पूर्ण रूप में मूल राजस्थानी भाषा में पाठको के सामने उपस्थित हैं। यह प्रकाशन तेरापन्थ द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर अवश्य ही बडा समीचीन माना जायगा। इन दृष्टान्तो मे स्वामीजी का जीवन-सन्देश भरा पडा है। तेरापन्थ के वे शिलान्यास से हैं और उच्च धार्मिक जीवन की प्रेरणा देते हैं।

१५, नूरमल लोहिया लेन,
कलकत्ता
१ जून, १९६०

श्रीचन्द रामपुरिया

विषय-सूची

—·०·—

भिक्खु दृष्टान्त

: १ :

बून्दी में सवाईराम ओस्तवाल चर्चा करतां भिक्खु कह्यो : गाय भैंसरा मूहडा आगै घणो चारो नाख्यां ओगालो करै। जब तेह कहै : मौनें ढांढो कह्यो। वैराजी थयो। तब स्वामीजी कह्यो : थें ढाढा थया म्हारो ज्ञान चारो थाय। इम कह्यां राजी थयो। पछै सवाईराम गुरु किया।

एकदा सवाईराम ने ··· ···· कह्यो : म्है तेरापन्थ्यां नै यूँ जाब दिया यूँ हठाया। जद सवाईराम बोल्यो : दोयां रे झगड़ो लागा एक जणै तो पोतारो घर कृष्णार पुन कियो। दूजो कजियो करतो डरै। घर को जावतो करै, सो बोलता डरै। थें थारो घर कृष्णार पुन कियो। साध पणांरो जावतो नहीं। सो मन आवै ज्यूँ बोलौ। इम कही कष्ट कीधो।

एक दिन चरचा करता सवाईराम ने ···· ··· कह्यो : थें म्हांनै दोपीला कहो, पिण थांरा गुरां ने पिण किंवारिया रो दोष लागै छै। जब सवाईराम कह्यो : एक राजा रो प्रधान राजा रो माल खावै नहीं, पिण दूजा प्रधान द्वेषी। सो राजा कने चुगली खाधी ए प्रधान आपरो माल उड़ावै छै। जब राजा दोयां नें भेलाकर पूछ्यो। तब ते चुगलखोर कहै : डावड़ा नें दरबार रा पाना स्याही लेखणा दीधी। जद प्रधान कह्यो : पाना स्याही लेखणा तो भणवानै दीधी छै। ए भणिया राजा रै इज काम आवसी। राजा सुणीनै राजी थयो। चुगल फीटो पड्यो, चुगल झूठी चाड़ी खाधी, अणहुंतो खूँचणो काढ्यो, ज्यूँ थें किंवाड़िया रो दोप बतावो सो थें पिण झूठा छो। ❀

: २ :

पाली में भिखणजी स्वामी आज्ञा लेइ नै एक हाट मे ठहर्या। सो रुघनाथजी उण दुकान वाला रै घरे जाय बाइ ने कह्यो ' ए काती सुद नमपू

ताई जाय नहीं। जद तिण बाइ स्वामीजी ने कह्यो : म्हारी आज्ञा नहीं। जद भिक्खु कह्यो : चोमासै में पिण तू कहसी जद परहा जासा। जद बाइ कह्यो : मोनें थां सरिखां कहि गया—चौमासौ लागा पछै जाय नहीं, तिणसूँ आज्ञा नहीं। पछै स्वामीजी आप गौचरी ऊठ्या। उदैपुरिया बाजार में एक मैड़ी जाची। आप वेठा ने साधा नें मेल उपगरण मंगाय लिया। दिने ऊँचा रहै। रात्रि हेठे दुकान में वखाण देवै। परखदा घणी होवै। लोक घणा समज्या। रुघनाथजी सिज्यातर ने घणोई कह्यो—थे जागा क्यूँ दीधी। ए अवनीत निन्हव छै। जब ते कहै—काति सुदी १५ ताई ना कहुँ नहीं। पछै थोड़ा दिना में मेह घणों आया थी पहिली उतरिया तिण हाट रो पाट भागो। सैंकड़ा मणा बोझ पड्यो। ए बात स्वामीजी सुण कह्यो : म्हाने हाट छुड़ाई त्या ऊपर छद्मस्थ रा स्वभाव थी लहर आवारो ठिकाणो, पिण म्हा सूं तो उपगार ईज कीधो, ऐसा खिमावान। ❀

: ३ :

पींपाड़ में भीखणजी स्वामी ने रुघनाथजी रो साध जीवणजी कहै : साधु रो आहार अव्रत प्रमाद में है। जद स्वामीजी कह्यो : भगवान री आज्ञा छै सो काम चोखो। पिण जीवणजी मान्यो नहीं। फेर स्वामीजी पूछ्यो : साधु आहार करै सो काम चोखो के खोटो ? जीवणजी बोल्यो : साधु आहार करे, ते खोटो काम, त्यागै ते चोखो काम। दिशा आदि जाता मिलै जद स्वामीजी पूछे जीवनजी ! खोटो काम कीधो के करणो है ? इम वार-वार पूछना लातरियो। कहै—भीखणजी ! साधु आहार करै सो काम चोखोइ है। ❀

: ४ :

कंटालीया में भीखणजी स्वामी रो मित्र गुलोजी गाधइयो। तिणने स्वामीजी पूछ्यो। गुला ! काइ खेती कीधी ? हाँ स्वामीनाथ कीधी। स्वामीजी पूछ्यो : उपत खपत कीकर है ? जद गुलजी बोल्यो : स्वामीनाथ। रुपिया दश लागा, कायक हल रै भाड़ारा, कांयक निनाणरा कांयक बीजरा, सर्व दस रुपिया लागा। स्वामीजी पूछ्यो : पाछो कितरोक आयो ? जब

गुलजी कह्यो : स्वामीनाथ ! रुपिया दशेक रो माल पाछो आयो। इतराक रुपिया का मूँग, इतरोक चारो, इतरीक बाजरी, सर्व रुपया दशेक रो माल पाछो आयो। लागो जितरो तो आ गयो, खेती बापरी मे तो चूक नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : गुला ! दश रुपिया कोठा री माली में पड़िया रहता तो इतरो पाप तो न लागतो ! इसो आरम्भ क्यूँ कीधो। ❀

: ५ :

देसूरी नों नाथो साधु स्त्री चेटी मां छोड दिक्षा लीधी, पिण प्रकृति करड़ी, आछी तरह आज्ञा मे चालै नही। तीन वर्ष आसरे टोला में रह्यो। पछै टोला बारै निकल गयो। कनै हुंतां त्यां साधां स्वामीजी ने आय कह्यो : नाथो छूट गयो। जद स्वामीजी कह्यो · किणहिरे गूमड़ो दुखतो घणो ने पछै फुट गयो तो ऊ राजी हुवै के वैराजी हुवै ? जद कह्यो · राजी हुवै। ज्यूँ दुखदाइ छूटा वेराजीपो नहीं। ❀

: ६ :

राग द्वेष ओलखायवा स्वामीजी दृष्टांत दियो। किणहि डावरा रे माथा में दीधी। जद तो लोक उणनें ओलंभो देवे। भला आदमी छोहरा ना माथा में क्यू दे। अनै किणही डावरा ना हाथ में लाडू दियो। तथा मूलो दियो। उणने कोई वरजै नहीं। ओ राग ओलखणो दोहरो, अनें ऊ द्वेष ओलखणो सोहरो। तिण सूं वीतराग कह्या, पिण वीतद्वेष न कह्या। राग मिट्या द्वेष तो पहिलाइज मिट जाय। ❀

: ७ :

जयमलजीरा टोला मांहि थी संवत १८५२ रें आसरे गुमांनजी, दुर्गदासजी, पेमजी, रतनजी, आदि सोले जणा नीकल्या। थानक, नित्य पिण्ड, कलालरो पाणी वहिरणो आदि छोड, नवो साधपणो पचख्यो, पिण सरधा तो वाहिज पुन री। जद लोक कहिवा लागा : भीखणजी नीकल्या ज्यू एहि नीकल्या। जद स्वामीजी बोल्या : सिरोईना राव वालों पालख्यो खड़ो कियो है। सिरोईनां रावना अमराव, कामदार, आदि मतो कियो :

उदैपुर, जैपुर, जोधपुर, वाला रे पालखी आपारेइ पालखी वणावो। इम विचार वास बांध ऊपर छाया करी लाल वस्त्र ओढाय पालखो वणायो। पालखी रो वास तो लाक सहित वक्र पणै हुवै, तिणमें तो समझै नहीं, अनै यां पालखो वणायो ते पाधरो वास घाल। विपरीत पणै दीसै। एहवा पालखा में रावनें वेसाण हवा खावा नीकल्या। साथै मनुप आगै पाछै घणा गाम वारे आया। जब खेत कने रूंखरी छाया विश्राम लियो। जद करसणी वोल्या : अठै मां वालो रे मा वालो। छोहरा छोहरी वीहेला। जद त्यारा चाकर साथै हुंता ते वोल्या : मां वोल रे मा वोल रावजी है रे रावजी। जद करसणी वोल्या : वूडगइ वात रावजी मर गया ! म्है तो रावजी री मा जाणी थी। जद चाकरा करसण्या नें कह्यो : जयपुर, जोधपुर, उदयपुर वाला रे पालखी तिणसूं यांरेइ पालखो वणायो है। सो रावजी अठै हवा खावा आया है। जद करसण्यां कह्यो : डोल सरिखो क्यूं वणायो ? स्वामीजी कह्यो : जेसो सिरोइना रावनो पालखो जिसो या नवो साधपणो पचख्यो हे। पिण सरधा खोटी। जीव खवाया पुन सरधै। सावद्य दान में पुन सरधै तिणसूं समकत चारित्र एक ही नहीं। ❋

: ८ :

गुमानजी रो साध दुर्गदासजी तिणनें भीखणजी स्वामी कह्यो : म्है आधाकर्मी थानक मे दोष वतावता, जद थे मानता नहीं अनै अवै उणानैं छोड्यां पछै थेइ थानक निषेधवा लागा। जद दुर्गदासजी वोल्या : रावण रा उमराव रावण नें खोटो जाणता था, पिण गोली राम कानी वाहता। ज्यूं उणां भेला हुंता, जद म्है पिण थानक न निषेधता। अने थे थानक निषेधता जद म्है द्वेष करता। ❋

: ९ :

गुमानजी रो साध पेमजी, हेमजी स्वामी ने वोल्यो : हेमजी तीन तूंबड़ा वधता हुंता ते आज फोड न्हाख्या। जद हेमजी स्वामी कह्यो : उणा माहिं थी नीकलने नवो साधपणो पचख्या ने तो घना दिन थया, अनें तीन तूम्बड़ा

वधता परठ्या कहो ते किण कारण? जद पेमजी कह्यो : ढीला पड़िया था सो सांकड़ा ह्वैतां २ हुस्यां। पछै हेमजी स्वामी भीखणजी स्वामी नें कह्यो : महाराज! आज पेमजी इसी बात कही : ढीला पड्या सो सांकड़ा ह्वैता २ हुस्यां। जद स्वामीजी बोल्या : थे यूँ क्यूँ नहीं कह्यो। किणहि जावजीव शील आदर्यो। छव महिना पछै बोल्यो : एक स्त्री म्है आज छोड़ी। जद किण ही कह्यो : थे शील आदर्यां नें तो घणा महिनां थया है नी? जद ते बोल्यो : ढीला पड्या हा सो सांकड़ा ह्वैता २ हुस्यां। ॐ

: १० :

पादुरा उपाश्रय मे भीखणजी स्वामी ने हेमजी स्वामी गोचरी उठता था। इतरे सामीदासजी रा दोय साध मेला वस्त्र, खांधे पोथ्यांरा जोड़ा, विहार करता 'भीखणजी कठै' 'भीखणजी कठै' इम करता आया। स्वामीजी कह्यो : म्हारो नाम भीखण। तब उवे बोल्या : थाने देखवारी मनमें थी। जद स्वामीजी कह्यो : देखो। जद उवे बोल्या . थे सर्व बात आछी करी पिण एक बात आछी न करी। स्वामीजी कह्यो . काइ? जद त्यां कह्यो : बावीस टोलांरा म्है साध, त्यानें असाध कहो छो ते। जद स्वामीजी कह्यो : थे किणरा साध? जद त्यां कह्यो ' म्है सामीदासजी रा साध। जद स्वामीजी कह्यो : थारा टोलां में इसो लिखत है—इकीस टोलां रो थामें आवै तो दिक्षा देइ माहैं लेणो। इसो लिखत है सो थे जाणो हो? जद त्या कह्यो : हां जाणा छा। जद स्वामीजी कह्यो : इकीस टोला तो थेइ उथाप्या। गृहस्थ नेइ दीक्षा देइ लेवो। अनें त्यानेइ दीक्षा देइने माहै लेवो। इण लेखै त्या इकीस टोलानें गृहस्थ बरोबर गिण्यां। सो इकीस टोला तो थेइ ऊथाप्या। एक थारो टोलो रह्यो सो भगवान कह्यो—बेलो प्रायश्चित्त रो आया तेलो देवे तो देवणवालानें तेलो आवै। थे उणाने साध सरधो हो ने फेर उणानें नवो साधपणो देवो, सो थारे लेखे थानें साधपणो आवे। इण लेखै थांरो पिण टोलो ऊथप गयो। ते सुणनें बोल्या : भीखणजी थांरी बुद्धि जबरी। इम कहि जावा लागा। स्वामीजी कह्योः अठै रहो तो आज चरचा करां। जद ते बोल्या : म्हारै तो रहिवारी थिरता नहि। ईम कहि चालता रह्या। ॐ

: ११ :

एक गाम में स्वामीजी ऊतऱ्या। अमरसिंहजी रा दो साध, इसरदासजी कोजीरामजी, आया। उवै ऊतऱ्या तिहा स्वामीजी जाय ऊभा प्रश्न पूछ्यो। अणुकम्पा आणने किणही भूखा मरता नें मूला दिया, तिणमें कांइ हुवो ? जद उवे बोल्या : इसो प्रश्न मिथ्याती हुवे सो पूछै। जद स्वामीजी बोल्या : पूछणवाला तो पूछ लीवी। पिण कहिणवाला कह्या मिथ्याती हुवै तो मत कहो। जद ते बोल्या : म्है तो कहां छां—मूलामें पाप। जद स्वामीजी कह्यो : मूलांमें तो पुण्य पाप दोनू है। पिण मूला अणुकंपा आणनें खुवाया केइ मिश्र कहै। जद कह्यो : मिश्र कहै सो पापी। फेर पूछ्यो—केइ पाप कहै। जद कह्यो : पाप कहे सोई पापी। फेर पूछ्यो केइ पुण्य कहै। जद त्यां कह्यो : पुन कहै सोइ पापी। जद स्वामीजी फेर विचारणा ऊँड़ी करनें बोल्या : केइ पुन सरधै है। जद त्या कह्यो : सरधसी मन आइ ज्यूँ। जद स्वामीजी कह्यो थारे श्रद्धा पुन री। थे पुन परूपो नहीं। पिण पुन सरधो हो। इत्यादिक कहि कष्ट करी ठिकाणे पधाऱ्या। *

: १२ :

पाली में एक जणो भीखणजी स्वामी सूँ चरचा करतां ऊंधो अँवलो बोलै। कहे—थारा श्रावक इसा दुष्टी सो किणही रा गला माहि थी पासी नहीं काढै। घणो विपरीत बोलता स्वामी भीखणजी बोल्या : थारा ने म्हारा मत कहो, समचेइ वात करो। जब कोयक नजीक आयनें कहै : काइ समचै वात कहो। तब स्वामीजी बोल्या : एक जणै रूँखड़ा सू पासी खाधी। दोय जणा मारग जाता उणनें देखी। पासी काढै ते किसोयक ? अनें नहिं काढै ते किसोयक ? तब ते बोल्यो : पासी काढै ते महा उत्तम पुरुष, मोक्षनों जाणहार, देवलोक में जाणहार, दयावंत। घणा गुण कीधा। नहीं काढै जिको महापापी, महादुष्टी, नरक रो जावणहार। जद स्वामीजी कह्यो : थें नै थारा गुरु दोनूं जणा जाता हा। उणरी पासी कुण काढै। जब उ बोल्यो : हूँ काढूँ। म्हारा गुरु काढ़े के नहीं। जब कहै उवे कदातैं काढै। थे तो साधु

है। जब स्वामीजी कह्यो : मोक्ष देवलोक रो जाणहार तो तूं ठहर्‌यो। थारे लेखै नरक जावणहार थांरा गुरु ठहर्‌या। जब घणों कष्ट हुवो। जाव देवा समर्थ नहीं। ❀

: १३ :

किण ही कह्यो : अहो भीखणजी। बाइसटोला वाला थांरा अवगुण काढै है। जद स्वामीजी कह्यो : अवगुण काढै है के घालै है? जब ते बोल्यो : अवगुण काढै है। जद स्वामीजी कह्यो : छोनी काढता। कायक तो उवे काढै। कायक म्है काढा। म्हारै अवगुण काढणा इज है। ❀

: १४ :

पीपार में कितरा इक जणां मनसोबो करनें पूछ्यो—भीखणजी! लोक में यूँ कहै छै—'सात-सात तो देस्यूँ अने एक-एक गिणस्यूँ', तेहनो अर्थ काई? जद स्वामीजी कह्यो : एतो पाधरो अर्थ छै। सात सुपारी देवे अनें एक सातो गिणै। लोक सुणनें आश्चर्य थया। ❀

: १५ :

भीखणजी स्वामी देसूरी जाता घाणेरावनां महाजन मिल्या। पूछ्यो : थांरो नाम काइ? स्वामीजी बोल्या : म्हारों नाम भीखन। जब ते बोल्या : भीखण तेरापन्थी ते तुम्हें? जद स्वामीजो कह्यो : हाँ, उवेहीज। जब ते क्रोधकर बोल्या : थारो मूँहडो दीठा नरक जाय। तिवारे स्वामीजी कह्यो : थारो मूँहडो दीठा? जब त्या कह्यो : म्हारो मूँहडो दीठा देवलोक ने मोक्ष जाय। जद स्वामीजी कह्यो · म्हे तो यूं न कहा—मूँहड़ो दीठाँ स्वर्ग नरक जाय पिण थांरी कहिणी रे लेखे थांरो मूँहडो तो म्हें दीठो सो मोक्ष ने देवलोक तो म्हे जास्या। अने म्हारो मूँहड़ो थें दीटो सो थांरी काहिणी रे लेखे थांरे पानें नरक ईज पडी। ❀

: १६ :

संवत अठारे पैंतालीस रे वर्ष पीपार चोमासो कीधो। हस्तुजी, कस्तु... पछै · ...
...जी रो पिता जग्गू गाँधी, तिण रे चरचा करतां श्रद्धा बेठी।

गाँधी ने कह्यो : भीखणजी री श्रद्धा खोटी। किण ही श्रावक ने वासती दीधा में ई पाप कहै। किण ही गृहस्थ री वासती चोर ले गयो तिण में ई पाप कहै। इम चोर ने श्रावक सरीखो गिणै। तव जगू गाँधी स्वामीजी नें ए वात पूछी। एक न्याय किम ? जद स्वामीजी कह्यो : उणाने पूछणो थारी पछेवड़ी एक तो चोरनें ले गयो, एक थे श्रावक नें दीधी थाने किण बातरो प्रायश्चित्त आवै ? जो उवे चोर ले गयो तिणरो प्रायश्चित्त न कहै अनें श्रावक नें पछैवडी दीधी रो प्रायश्चित्त कहै तो उणारे लेखे इज देणो खोटो ठहर्‌यो। पछै जगू गाँधी उणानें छोडने स्वामीजी नें गुरु किया। ❀

: १७ :

संवत अठारे पैंतालीसे पीपार चोमासै घणां लोक समझ्या। जगू गाँधी पिण समज्यो। जिणरो· ·रे श्रावका ने दोरो घणो लागो। जव लोक कहै · भीखणजी जगूजी समजतां बीजा ने इ दोरो लागो पिण खेतसीजी लुणावत ने तो दोहरो घणों इज लागो। सोच घणों करे। जद स्वामीजी कह्यो : परदेश में चल्यांरी सुणावणी आया सोच तो घणाइ करे, पिण लाबी कांचली तो एक जणी पहरै। ❀

: १८ :

तिणहिज चोमासै वखाण सुणनें लोक राजी घणा हुवै। कोई द्वेषी कहै रात्रि घणी आई सवापोहर, दोढपोहर। जव स्वामीजी कहै : दु ख री रात्रि मोटी लखावै। विवाहादिक सुख री रात्रि छोटी लखावै अनें समीं सांझ मनुष मूँया ते दुख री रात्रि घणी मोटी लखावै। ज्यूँ वखाण न गमें ज्याँनें रात्रि घणी मोटी लखावै। ❀

: १९ :

तिणहिज चोमासै केइ वखाण तो नहिं सुणैं अनें अलगा वेठ निंदा करै। जद किणही कह्यो : भीखणजी! थे तो वखाण देवो अनें ए निंदा करे। जद स्वामीजी कह्यो : श्वान रो स्वभाव झालर वाज्यां रोवण को पिण यूँ न समझै या झालर विवाह री छै कै मूआरी छै। ज्यूँ ए यूँ न समझै वखाण

में ज्ञानरी बात आवै, तिणसूँ राजी होणो जठैइ रह्यो अपूठी निंदा करै। यांरै निंदारो स्वभाव छै, तिणसूँ ऊंधी सूझै। ❀

: २० :

तिण पींपार में एक गैवीराम चारण भगत थयो। ते लोकांमे पूजावै। भगतां ने लापसी जीमावै। तिणने लोकां सीखायो ' तूं भगताने लापसी जीमावे तिणमें भीखणजी पाप कहै। जब ते गेवीराम घोटो हाथ में ले गूघरा घमकाव तो स्वामीजी कनें आयो। कहै हे भीखण बाबा! हूँ भगतांनें लापसी जीमाऊँ सो काइ हुवै ? स्वामीजी बोल्या : लापसी में जैसो गुल घालै जैसी मीठी हुवै। इम सुणने घणो राजी हुवो। नाचवा लागो। भीखण बाबै भलो जाब दीधो। लोक बोल्या : भीखणजी पहिला उत्तर जाणै घड़इज राख्यो हुँतो। ❀

: २१ :

संवत अठारे तेपनैं सोजत में चोमासो किधो। लोका घणा समझ्या। जब किणहि कह्यो : भीखणजी। उपगार तो आछो कियो। घणा नें समझाया। जद स्वामीजी बोल्या : खेती कीधी पिण गाम रै गोरवे है सो गधा आय न वडिया तो टिकसी बाकी काम कठिन। ❀

: २२ :

स्वामीजी नीकल्या। साधवियां न हुई तठा पहिलां किणहि कह्यो : थांरे तीरथ तीन हीज है ? लाडू है पिण खांडो है। जद स्वामीजी बोल्या : खाड़ो है पिण चोगुणी रो है। ❀

: २३ :

रीयां में वखाण वाचता आचार नीं गाथा सुणनें मोतीराम बोहरो बोल्यो : भीषणजी! बादरो बूढो हुवो है तो हि गुलाच खेलणी छोड़े नहिं। ज्यूं थे बूढा थया तोहि बीजानें निषेधणा छोड्या नहिं। जद स्वामीजी बोल्या : थांरै बाप हूंड्यां लीखी, थारे दादे हूंड्या लिखी, पाटा पाटी थेइ संवेट्या कोइ नहीं। दीपचंद मुणोत मन में भरो देई आपरा हेतू मित्रांने कह्यो—भीखणजी

री वचन इसो निकल्यो सो पाटा-पाटी समेट तो दीसे है। जब त्यां आप आप रा रुपइया खाच लीया। पछै थोडा दिना में परवार गयो। पाटा पाटी सावट लिया। ❀

: २४ :

रीया में अमरसाहजी रो साधु तिलोकजी स्वामीजी कनै आय बोल्यो : सूत्र में अन्न पुण्ये पाण पुण्ये आदि नव प्रकारे पुण्य कह्या है। भगवंत प्रदेशी री दानशाला कही पिण पापशाला न कही। भगवंत अन्न पुण्य कह्यो पिण अन्न पाप न कह्यो। अरे थे दान दया उठाय दीधी। स्वामीजी बोल्या : अनुकंपा आणनें कोइ ने सेर बाजरी दीधी तिणमे छै तो पुण्यक ? जद बोल्यो : हम क्या जाणै। हम तो मंड़िया वाचते। हम आगरे के पाणी पीधे। हम दिल्ली के पाणी पीधे। जद स्वामीजी बोल्या : दिल्ली आगरा में तो गाया कटै। इण बात में कांइ सिधाई। सूत्र भण्या ह्वै तो कहो। इतलै रतनजी जती लूंको आयो। ए बात सुण तिणनें निषेधनें बोल्यो : म्है ढीला पड़ गया हां तो ही माना एक दांणा में च्यार पर्याय च्यार प्राण ते खुवाया पुण्य किम हुसी अनैं थै मुंहपती बाधनें क्यूँ खोटी हुवा ? एकेन्द्रि खुवाया पुण्य कहो छो ! इम कष्ट कीधो जब चालतो रह्यो। ❀

: २५ :

रीयां में हरजीमल सेठ कपड़ा री वीनती कीधी। स्वामीजी बोल्या : थें साधां रे अर्थे मोल लेइ कपड़ो वहिरावो ते म्हानै कल्पै नहीं। जब सेठ बोल्यो : वीजा तो लेवै। हूँ माल लेइ वहिरावू मौनैं कांइ हुवो ? जद स्वामीजी बोल्या : उणानें इज पूछ लेवो। जद सेठ बोल्यो : कहिण में तो मोल ले दियां में उवे ही पापइ कहै पिण लेवे तो उरहो। म्हारा पहिरण ओढण मांहिलो कपड़ो आप लेवो। जद स्वामीजी बोल्या : उ पिण नहिं ल्या। वीजा पिण कपड़ो ले गया भीखणजी पिण ले गया। कुण तार काढै। ❀

: २६ :

हरजीमल सेठ रागी थयो जद रुघनाथजी से डरजोजी साधु मोटो ओलिया लेइ वांचवा लागो। भीखणजी उठै असकड़ियै गामें काचो पाणी

लीधो, अमकडिये गाम कंवाड़ जड़नें सूता, अमकढ़िये नित्य पिण्ड लीधो, इत्यादिक अनेक दोष पाना सूं वांचवा लागो। जब सेठजी बोल्या : जोधपुर जावो राजा कनै पुकारो। आ तो व्यावट है। ओ झगड़ो म्हांसूं नहीं मिटे। थे इतरा दोष बतावो अनें उवें कहसी एकइ दोष न सेव्यो। इणरो तार किसतरा काढा ? जद उरजोजी बोल्या : भीखणजी पिण म्हानै कहै उ थानें दोष लागै। जद सेठ बोल्या उवे तो सूत्ररी साख सूं समचै दोष कहै—साधानै ओ काम करणो नहीं। इम कहि कष्ट कीधो। ❀

: २७ :

पींपार में बखाण में घणां लोक सुणता ताराचंद संघवी बोल्यो : थे बखाण सुणो थारे दाहो लाग जावेला। जद स्वामीजी बोल्या : दाहो लागै ते निला रूंखड़ा नै लागै पिण सूकां ठूठा नें कांइ दाहो लागै ? सुणनें लोक घणा राजी थया आछो जाब दियो। ❀

: २८ :

कृष्णगढ में स्वामीजी पधार्‍या। गोचरी ऊठ्या। · · चरचा करवा पूठे आया। स्वामीजी पांडियां रा वास मोहला में गोचरी पधार्‍या।··· मोहला रे मूंहडै ऊभा चरचा करण रे मते। जद मलजी मूंहतो बोल्यो : इण चरचा में स्वाद न पावोला। मोकलो कह्यो पिण मान्यो नहीं। इतलै स्वामीजी गोचरी करने पाछा पधार्‍या। जद · · ए कह्या : भीखणजी ! थे वैरागी वाजो नें इण मोहला में नुखतो थयो तिणरा घर सूं पकवान लाया ! तिवारै भीखणजी स्वामी बोल्या : इणरो दोष काइ ? जद·· ए कह्यो थे वैरागी वाजो नें इसा काम करो ! मनुष मोकला भेला थया। स्वामीजी बोल्या : म्हे तो न आण्यो। जद····· ए कह्यो न ल्याया हो तो पात्रा खोलो। जद स्वामीजी घणीं वेला ताइ पात्रा खोल्या नहीं। पछै ए पात्रा खोलवारी घणी खांच कीधी, जद घणां लोक देखतां पात्रा उघाड्या। लाडू न दीठा जद ए घणां फीटा पड्या। जद मलजी कह्यो : म्हे थानें पहिला वरज्या हुता—थे भीखणजी सूं चरचा मत करो। घणा लोका में भूंडा दीठा। ❀

: २९ :

खेरवा में स्वामीजी कनें ओटौ स्याल उंधो अँवलो बोल्यो : थे श्रावक नें दियांइ पाप कहो नैं वेश्या नें दियाइं पाप कहो छो, इण लेखै श्रावक अनै वेश्या सरीखा गिण्या। जद स्वामीजी बोल्या : ओटाजी लोटी भरने काचो पाणी थांरी मांनै पायां कांइ हुवै ? जद ते बोल्यो पाप हुवै। जद स्वामीजी फेर बोल्या : एक लोटी पाणी वेश्यानै पायां कांइ हुवै ? जद बोल्यो : इणमैइ पाप हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : थारै लेखै थारी मा ने वैश्या सरीखी गिणी कांई ? जब घणो कष्ट हुवो। लोक बोल्या ओटैजी मां नै वैश्या सरीखी गिणी। ❀

: ३० :

ढूंढार मैं स्वामी भीखणजी पासे श्रावगी चरचा करवा आया। बोल्या: मुनी नें तार मात्र वस्त्र राखणो नहीं। राखै ते परीसह थी भागा। जद स्वामीजी कह्यो ' परीसह कितरा ? जब ते बोल्या : परीसह बावीस। स्वामी जी कह्यो : पहलो परीसह किसो ? जब त्यां कह्यो क्षुधा रो। स्वामीजी पूछ्यो : थारा मुनि आहार करे कै नहीं करै ? जब त्यां कह्यो एक टक करै। जब स्वामीजी कह्यो ' थांरा मुनी प्रथम परीसह थी थारे लेखै भागा। जब ते बोल्या : भूख लागा आहार करै। जद स्वामीजी कह्यो म्हैइ सी लागां कपड़ो ओढा। वलि स्वामीजी पूछ्यो : थांरा मुनी पाणी पीवै कै नही ? जब त्यां कह्यो पाणी पिण पीवै। जद स्वामीजी कह्यो : इण लेखै थारे मुनी दूजा परीसह थी पिण भागा। जद ते बोल्या : तृषा लागा पाणी पीयै। जद स्वामीजी कह्यो : सीता-दिक टालवा म्हे पिण वस्त्र ओढा अनें जो भूख लागा अन्न खाया, तृषा लागां पाणी पीधां परीसह थी न भागै तो सीतादि टालवा वस्त्र राख्यां पिण परीसह थी न भागै। इत्यादिक अनेक चरचा सूँ कष्ट कीधो। हिवै दूजै दिन घणां भेळा होय नें आया। स्वामीजी दिशां पधारता था सो साहमां मिल्या। करड़ा होय ने बोल्या : म्हे तो चरचा करवा आया नैं थे दिशां जावो छो। उणांरी नूराणी देखने स्वामीजी बोल्या : आज तो थे कजिया रे मते आया दीसो छो। जब ते बोल्या : थांनै किस तरै खबर पड़ी ?

स्वामीजी कह्यो म्हां में अवधि आदि ज्ञान तो छै नहीं। पिण थांरी नूराणी देखने कह्यो। जद साच बोल्या : आया तो कजिया रे मतै, दान दयारी चरचा करणी। जद स्वामीजी बोल्या : थारा जावतो घणांइ लिख्या पड्या है चरचा तो काल कीज करड़ी थी। पछें त्यां माहिला केयक चरचा करनें समज्या।

: ३१ :

एक दिन घणां श्रावगीयां स्वामीजी नें कह्यो : आप वस्त्र न राखो तो आपरी करणी भारी घणी। जद स्वामीजी कह्यो : म्हें श्वेताम्बर शास्त्र थी घर छोड्या है। तिणमें तीन पछैवड़ी, चोलपटो आदि कह्या है जिणसूँ राखा हाँ। दिगम्बर शास्त्र री प्रतीत आया वस्त्र न्हाख नग्न होय जावाला। पछै कपड़ो नहीं राखा। ❀

: ३२ :

एक बाइ स्वामीजी सूं आहार नी वीनती घणी वार करै—कदेइ म्हारे घरेइ गोचरी पधारो। एक दिन स्वामीजी पधार्‌या। ते देख घणी राजी होय वहिरावा लागी। जद स्वामीजी पूछ्यो : थांरै हाथ तो धोवणा पड़ता दीसै है। जद ते बोली : हाथ तो धोवणा पडसी। जद स्वामीजी पूछ्यो : हाथ काचा पाणी सूँ धोवसी के उन्हा पाणी सूँ ? जद ते बोली : ऊन्हा पाणी सूं धोवसूँ। जद स्वामीजी कह्यो : कठै धोवसी ? जद तिण मोख री जागा बताइ—अठै धोवसूँ। जद स्वामीजी कह्यो : ओ पाणी कठै पडसी ? जद तिण कह्यो : हेठै पड़सी। स्वामीजी कह्यो : इहां पाणी पड़तां वाउकाय आदि जीवांरी अजयणा है। सो मोनें ए आहार लेणो न कल्पे। जद तिण कह्यो : आपतो आहार देखनें लीजै, लारै म्हें गृहस्थ कार्य सारां तिणमें आपरै कांइ अटकै ? म्हारी संसार नीं क्रिया है किस तरां छोडा। जद स्वामीजी कह्यो : हे बाई ! थारी घर्म ढंधवारी सावद्य क्रिया ही तू नहीं छोडै तो रोटी रे वासते म्हारी साची क्रिया हूँ किम छोडू ? इम कहिनै चालता रह्या। ❀

: ३३ :

माधोपुर मे भाया तो घणां समज्या सो गोचरी गयां कहै आधा पधारो। वायां रो मन नहीं। जद भायां वायां ने कह्यो : सगलां में सिरै तो मस्तक, देही मे उत्तरता पग। यांरे पगां में तो माथो देवां फेर चोका री किसी गिणत ? इम कही नें समझाय स्वामीजी नें माही लेजाय नें वहिरायो। ए कला पिण भायां नें स्वामीजी सिखाइ दिसै। ❀

: ३४ :

काफरला मे साध गोचरी गया। एक जाटणी रे धोवण, पिण वहिरावै नहीं। कहै—देवै जिसो पावै सो धोवण म्हांसू पीवणी आवै नहीं। साधां आय स्वामीजी ने कह्यो : एक जाटणी रे धोवण मोकलो। पिण इम कहै। जद स्वामीजी पधार्‌या। वाइ नै कह्यो : धोवण वहिराव। जव ते वाइ कहै : जिसो देवै जिसो पावै सो धोवण म्हांसूँ पीवणी आवै नहीं। जद स्वामीजी कह्यो : गाय नें चारो देवै नाखे ते दूध देवे ज्यू साधांने धोवण दियां आगै सुख पावै। इम सुणनै कह्यो : ल्यो महाराज। पछै धोवण लेइ ठिकाणै पधार्‌या। ❀

: ३५ :

खारचिया में स्वामीजी पधार्‌या। एक वाई कह्यो स्वामीजी म्हार भैंस व्यावै जव पधारो तो लाहो लेवूँ। ते किम भैंस व्याया एक महिनां ताइ दूध दही वावर देवै, पिण विलोवै नहीं। ते देवी रे टाणै पधारज्यो। जद स्वामीजी कह्यो : थांरै कद भैंस व्यावै ने कद देवी हुवै। म्हानै कद समाचार हुवें नें म्है आवा। ❀

: ३६ :

केलवा में एक वाई कहै स्वामीजी पधारै तो साधपणो लेवूँ। इम वात करवो करै। पछै स्वामीजी पधार्‌या। धसका सूँ वाई ने ताव चढ़ गयो। सामै दर्शण करवा आई जद स्वामीजी पूछ्यो : कांइ थयो ? यूँ क्यू वोलै है। जद री राटा करती कहै स्वामीजी ! आपरो पधारणो हुवो नें मोनें ताव चढ गयो। जद स्वामीजी पूछ्यो दिक्षा रा धसका सूं तोने ताव न चढ्यो

हैक। जद तिण कह्यो मन में आइ तो खरी। जद स्वामीजी कह्यो : यूं धसको पड़ै तो दिक्षा रो काम जाव जीव रो है । ❀

: ३७ :

खैरवा रो चतुरो साह स्वामीजी नें कह्यो : महाराज ! साधपण रा भाव ऊठै है। जद स्वामीजी कह्यो : थांरो हीयो काचो है। घर रा पुत्रादिक रोवै जद थेइ रोवणा लाग जावो तो पछै काम कठण। जद त्यां कह्यो आंसु तो आय जावै। जद स्वामीजी कह्यो : सासरै आणो लेवा जमाई जावै जद स्त्री तो रोवै। पिण उणरै देखादेख जमाई रोवा लाग जावै जद लोक में भूँडी लागै। ज्यूँ साधपणो लेवे जरे उणरा न्यातीला रोवै ते तो आपरै स्वार्थ पिण उणरी देखादेख दीक्षा लेणवालो रोवा लाग जावै तो वात विपरीत। ❀

: ३८ :

पींपार में स्वामीजी गोचरी पधार्‌या। एक वाई इम वोली : भीखणजी री श्रद्धा लीधी तो उणरो धणी मर गयो। जद स्वामीजी वोल्या : वाई ! तूं ही वालक इज दीसै। थारो धणी किणसूँ मूवो ? तूं तो भीखणजी री निंदा करै है। जद ओर वायां वोली : भीणखजी एहीज छै एहीज। तिवारे लच-काणी पडणै घरमे न्हास गई। ❀

: ३९ :

आऊवा में उत्तमोजी ईराणी वोल्यो : भीखणजी थें देवरा निषेधो छो पिण आगै तो वड़ा-वड़ा लखेसरी कोड़ेसरी त्यां देवल कराया। जद स्वामीजी वोल्या थांरा घरै पचास हजार रो डेरो थया देवल करावो के नहीं। जब ते वोल्यो : हूँ करावूं। जद स्वामीजी पूछ्यो थामे जीवरा भेद, गुण स्थान, उपयोग, जोग, लेश्या किती ? जद ते वोल्यो : या तो मोनें खवर नहीं। जद स्वामीजी वोल्या : इसा समझणा आगैइ हुवैला। डेरो फिल्यां किसो ज्ञान आय ज्ञावै ? ❀

: ४० :

आऊवा में नगजी सादूलजी रो बेटो बोल्यो : भीखणजी तस्सुत्तरी में 'ता' कितरा ने 'तं' कितरा ? जद स्वामीजी बोल्या : भगवती में 'का' कितरा ने 'कं' कितरा ? 'खा' कितरा ने 'खं' कितरा ? 'गा' कितरा ने 'गं' 'कितरा' ? 'घा' कितरा नें 'घं' कितरा ? जब कष्ट हुवो। ❀

: ४१ :

किणही पूछ्यो भीखणजी थे यूँ कहो एक महाव्रत भागा पांचूई भागै सो यूं साथे पांचू किम भागै ? जद स्वामीजी बोल्या : पापरो उदै हुवै जब संसार में इ जीव दुःख भोगवै। जिम एक भिक्षाचर नें शहर में फिरतां पांच रोटी रो आटो मिल्यो। रोटी करवा लागे। एक तो रोटी उतारने चूला लारै मेली। एक रोटी तवै सिकै। एक रोटी खीरां सिकै। एक रोटी री लोयो हाथ में। अनै एक रोटी रो आटो कठोती में। एक कुत्तो आयो सो कठोती में एक रोटीरो आटो ते ले गयो। तिण कुत्ता लारै भिख्यारी न्हाठो। हेठै पडियो सो हाथ मांहलो लोयो धूल में मिल गयो। पाछो आय देखै तो चूला लारै रोटी पडी हुंती ते मिनकी ले गइ। तवेरी तवे बल गइ। खीरां री खीरां वल गइ। इण रीते एक महाव्रत भागा पांचु भाग जावै। ❀

: ४२ :

स्वामी भीखणजी वीलाड़ै पधार्‌या। गाम में लोक लुगाइ द्वेष घणो करै। आहार पाणी री संकड़ाई। जद स्वामीजी साधां नें कह्यो : मासखमण इहां रहिवा रा भाव है। जद साधु बोल्या : आहार पाणी री संकड़ाइ घणी। घणा लोक आहार दे नहीं। जद स्वामीजी एक गोचरी तो बाहरला गाम री करावै। एक गोचरी वड़ेर री। एक गोचरी महाजनां री करावै। सो स्वामीजी गोचरी ऊठ्या पिण लोकां रै वंदोवस्ती, भीखणजी ने एक रोटी देवे तो इग्यारै समाइ दंड री। जठै जाय जठै आहार पाणी री जोगवाइ पूछ्या कहै म्है तो थानक मांह समाइ करां। एक जायगा आहार पाणी री जोगवाइ पूछ्यां कहै म्हारी नणद थानक समाइ करै। सो भीखणजी नें रोटी दियां

नणंदरी समाइ गल जावै। एहवी ऊँधी सरधा। इम कठेइ भायो दे देवै, कठेइ वाइ दे देवै। कितरायक दिन नीकल्या। रुघनाथजी ने खबर हुइ जद जोधपुर सूँ चाल्या आया। लोक बखाण सुणवा आया पिण ताकीदरा विहार सूं रुघनाथजी नें ताव चढ़ गयो। कनै ठोट चेला नें ल्याया ते बखाण दे जाणे नहीं। जद परिषद पाछी फिरी। बजार में केयक स्वामीजी रो बखाण सुणवा लाग गया। पछै लोक कहै आपस में चरचा करो। पछै ब्राह्मणा ने सिखाया म्हारे चेलो अवनीत होय गयो सो ब्राह्मणां नें दियां पाप कहै। पछै ब्राह्मण स्वामी जी कनैं आय वेदो करवा लागा। जद रामचन्द कटारियो बोल्यो थांनें दियां रुघनाथजी धर्म कहै तो पच्चीस मण गुहां री कोठी भरी है ते परही देऊं। जद ब्राह्मण रामचन्द सारा रुघनाथजी कने आया। रामचन्दजी रुघनाथजी नें कह्यो, थे धर्म कहो तो पच्चीस मण गोहांरी कोठी भरी है जिका ब्राह्मणां नें गाठ बंधाय देऊं। कहो तो घूगरी रंधाय देऊं। कहो तो आटो पीसाय देऊं। कहो तो रोट्यां करायनें दो मण चणा रे आटा रो खाटो कराय नें ब्राह्मणा नें जीमावूँ। घणो धर्म हुवै सो बतावो। जद रुघनाथजी बोल्या : म्हैं तो साध हां। म्हारै कठै कहणो है रे ? म्हारै तो मूंन है। जद रामचन्द बोल्यो : थारे नहिं कहणो तो उवे किम कहसी ? था बिचे तो उवे सांकड़ा चालै। मोटा होयने काइ लोका ने लगावो हो। चरचा करणी है तो न्याय री चरचा करो। यूँ कहीनें पाछो आयो। स्वामीजी रे मास खमण होवारी त्यारी थई। जद भारीमलजी स्वामी ने रुघनाथजी कने मेल्या थांरा श्रावक चरचा री कहै है सो चरचा करणी हुवै तो करो। जद रुघनाथ जी बोल्या किणरै चरचा करणी है रे ? पछै घणों उपकार कर घणां नें समझाय स्वामीजी विहार कीधो। ꕥ

: ४३ :

कंटालिया मे १ भायो दीक्षा लेवा त्यार थयो पिण बोल्यो म्हारै माता री मोहणी है सो माता जीवै जितै तो दीक्षा आवती दीसै नहीं। कितरायक दिना पछै माता आऊखो पूरो कियो पछै फेर स्वामीजी उपदेश दियो। जद बोल्यो : स्वामीजी मगरे व्यापार करूं हूं सो मेरण्यांरी मोहणी लागी।

जद स्वामीजी बोल्या : माता तो एक हुतो ते मर गइ पिण मेरे मेरण्या तो घणीं सो कद मरे न कद थनें दीक्षा आवै। ❋

: ४४ :

दान ऊपर भीखणजी स्वामी दृष्टंत दीधो। पाच जणां सीरमें चणा रो खेत वाह्यो। पांच सो मण चणा नीपना। पांचू जणां मतो कीधो—घर में धन तो मोकलो है यां चणारो दान धर्म करो। जब एक जणै सोमण चणां भिखार्‌यांनें लूंटाय दिया। दूजै सोमण रा मूंगड़ा सेकाय दिया। तीजे सोमण चणांनीं घूगरी रंधाय खुवाइ। चौथे सोमण चणा री रोट्या कराय पाखती खाटो करायनें जीमाया। पांचमें सोमण चणां वोसरायनें हाथ लगावारा त्याग किया। सावद्य दान में पुण्य धर्म कहै ज्यानें पूछीजै घणो धर्म किणनें थयो। ❋

: ४५ :

वलि दान ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : एक बूढो डोकरो भिक्षा मागतो फिरै। किणही अनुकम्पा आणने सेर चणां दिया। जब डोकरै किणहीने कह्यो : एक जणै मोनें सेर चणा दिया है पिण दांत नहीं सो मोने पीस दे। जब दूजी बाई अनुकंपा आणनें पीस दिया। आगै जायनें किणहीनें कह्यो ' मोने एक जणै धर्मात्मा सेर चणा दिया है दूजी बाई पीस दिया तिणसूं तूं मोनें रोटी कर दे। जब तीजी बाई अनुकंपा आण नें लूण पाणी घालने सेर चून री रोट्यां कर दीधी। ते रोटी खाय तृप्त थयो। थोड़ी देर मे तृषा घणी लागी जद आगै जायनें कहै : है रे कोइ धर्मात्मा! मोनें पाणी पावै। जद चोथी बाई अनुकंपा आणनें काचो पाणी पायो। एक जणै चणा दिया, दूजी पीस दिया, तीजी रोट्याकर जिमायो, चोथी पाणी पायो, सो चारा में घणो धर्म किणनें थयो ? ❋

: ४६ :

टीकमजी रो चेलो कचरोजी जालोर रो वासी सिरयारी मे स्वामीजी कनें आयो। कहै भीखणजी कठै ? जद स्वामीजी बोल्या : भीखण म्हारो

नाम है। जद ते बोल्यो : आपने देखवारी म्हारै मनमें घणी थी। स्वामीजी बोल्या : देखो। पछै कचरोजी बोल्यो : मोने चरचा पूछो। स्वामीजी बोल्या : थे देखवाने आया थानें काइ चरचा पूछां। तव ते बोल्यो : कायक तो पूछो। जद स्वामीजी बोल्या : थारे तीजा महाव्रत रो द्रव्य खेत्र काल भाव गुण काइ है। जद ते बोल्यो आ तो मोनें कोइ आवै नहीं पानां में मंडी है। स्वामीजी कह्यो : पानों फाट गयो अथवा गम गयो ह्वे तो काई करस्यो ? जद ते बोल्यो : म्हारा गुरा थानें चरचा पूछी, जिणरो थानें जाब न आयो। जद स्वामीजी कह्यो : थारा गुरां चरचा पूछी तिकाही ज चरचा थे मोनें पूछो। ऊणानें जाब दियो है तो थानेइ घाला। जद कचरोजी बोल्यो : थे तो म्हारै लेखा रा दादा गुरु हो सो हूँ थासू कठासूं जीतू ? जद स्वामीजी बोल्या : म्हारै तो इसा पोता चेला कोइ चाहिजै नहीं। ❀

: ४७ :

उदेपुर में स्वामीजी कनें एक ·आयो अनें बोल्यो : मोनै चरचा पूछो। जद स्वामीजी कह्यो : थे ठिकाणैं आयानें काइ चरचा पूछां ? जद बोल्यो : काइक तो पूछो। जद स्वामीजी कह्यो थे सन्नी के असन्नी ? ते बोल्यो : हूँ सन्नी। स्वामी पूछयो : किण न्याय? जद ते बोल्यो : ना, मिच्छामि दुक्कडं, हूँ असन्नी। स्वामीजी पूछ्यो : असन्नी ते किण न्याय ? जद ते बोल्या : नहीं २, मिच्छामि दुक्कडं, सन्नी असन्नी एक ही नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : ते किण न्याय ? जद ते रीस करनें बोल्यो : थे न्याय २ करनें म्हारो मत विखेर्यो। जातो थको छाती में मूकी री देइ चालतो रह्यो। *

: ४८ :

मांढ्हा माहैं स्वामीजी रात्रि रो वखाण वाचता। आसोजी नींद घणी लै। जद स्वामीजी कह्यो : नींद आवै है ? आसोजी बोल्यो : नहीं महाराज। वार वार पूछ्यो नींद आवै है ? जद ते कहै नहीं महाराज ! जद स्वामीजी कूठरो उघाड़ करवा वासते उत्पात बुद्धी सूँ वली पूछ्यो : आसाजी ! जीवो हो कै ? नहीं महाराज। *

: ४९ :

साधा मांहो मांही बात कीधी, जब खेतसीजी स्वामी बोल्या : अबै तो अखैरामजी स्वामी आतमां वस कीधी दीसै है। जब स्वामीजी बोल्या : पूरी प्रतीत नहीं। आ बात किणही अखैरामजी ने जाय कही। त्यांनें गमी नहीं। पछै राजनगर चोमासो कीधो। तिहां स्वामीजी में अनेक दोष पानां में उतार आहार पाणी तोड्यो। चोमासो उतार्‌या स्वामीजी स्यूँ मिल्या। खेतसीजी स्वामी अखैरामजी नें वंदनां करवा ताकीद सूँ गया जब अखैरामजी बोल्या : आपांरे आहार पाणी भेलो नहीं। पछै खप करनें अखैरामजी नें समझाया। जब अखैरामजी स्वामीजी कनें आसू काढनें बोल्या : आप म्हारी प्रतीत न दीधी जिणसूँ म्हारो मन उदास थयो। खेतसीजी तो म्हारी प्रतीत दीधी। जद स्वामीजी बोल्या : म्हे प्रतीत न दीधी तोही थे साचा तो म्हाने इज कीधा। गरीब साध खेतसीजी थारी प्रतीत दीधी तिणनें झूठो कीधो। इम सुणनें राजी हुवा। ❋

: ५० :

स्वामीजी पुर पधार्‌या जब मेघो भाट आय चरचा करवा लागो। कालवादी इम कहै—"भीखणजी गाथा में तो इम कहै—एकलड़ो जीव खासी गोता, नव पदार्थ में पांच जीव कहै तिण लेखे पांचलड़ो जीव खासी गोता इम कहिणो।" जद स्वामीजी बोल्या : सिद्धा मे आतमा उवे किती कहै ? जद मेघो भाट बोल्यो : सिद्धां में तो कालवादी आतमा चार कहै है। स्वामीजी पूछ्यो : त्या च्यार आतमा नें कालवादी जीव कहै अथवा अजीव कहै ? जब मेघो भाट बोल्यो : च्यार आतमां नें उवे जीव कहै है। जद स्वामीजी बोल्या : सिद्धा मे आतमां च्यार कहै ते च्यारा नें कालवादी जीव कहै इण लेखै चोलड़ो जीवतो उणारेइ ठहर्‌यो। एक लड़ म्हारी वधती ठहरी। इम कही समझायो। ते सुणनें घणो राजी थयो। ❋

: ५१ :

माधोपुर में गूजरमलजी श्रावक रे अनें केसूरामजी रे चरचारी अड़बी थइ। श्रावक मे आतमां गुजरमलजी तो आठ कहै अनें केसूरामजी सात

कहै। गूजरमलजी बोल्या : चारित्र आतमां श्रावक में नहीं हुवै तो नीलोती रा त्याग रो काइ काम ? इतलै स्वामीजी पधार्‌या। उणांरै मांहो मांही अड़वी देखने एक जणो नेड़ो आयने छाने वातचीत कर सकै नहीं तिणसूँ दोइ पासे बाजोट मेल दिया। पछै न्याय बतायनें दोयाने स्वामीजी समझाया। स्वामीजी कह्यो : श्रावक में पांच चारित्र नहीं ते लेखै सात आतमा इज कहणी अनै त्यागनीं अपेक्षा देशचारित्र कहियै इम कहीनें अड़वी मेटी। ❀

: ५२ :

गूजरमलजी सू स्वामीजी चरचा करता पानों बाचनें बोल कह्यो। जद गूजरमलजी कह्यो . आप मोनें अक्षर बतावो। जब स्वामीजी अखर बताय दिया अनें बोल्या : गूजरमलजी ! थारै सम्यकत्व रहणी कठिण है आसता कची तिणसूं। लोक सुणनै आश्चर्य थया। पछै अंतकाल गूजरमलजी बोल्या—केसूरामजी आदि भाया नें—स्वामीजी ओर तो श्रद्धा आचार चोखा परूप्या पिण नदी उतर्‌या धर्म या बात तो स्वामीजी पिण खोटी परूपी। भायां घणोइ कह्यो : नदी उतरवारी आज्ञा सूत्रमे भगवान दीधी छै तिणसूँ पाप नहीं। गूजरमलजी बोल्या : हीये बेसै नहीं। जब लोक बोल्या : भीखणजी स्वामी कह्यो थो, थारे सम्यकत्व रहणी कठण है सो वचन आय मिल्यो।

: ५३ :

पालीमें रात्रि वखाण ऊठ्या पछै स्वामीजी तो बाजोट ऊपर बैठा। अनें दो भाया दुकान हेठे ऊभा। चरचा करता २ दोयानेइ समझायनें गुरु कराय दिया। इतरै पाछली रात्रि पड़िकमणै री वेला थइ। साधा नें कह्यो ऊठो पडिकमणो करो। ❀

: ५४ :

करेड़ै स्वामीजी पधार्‌या। लोक कहै—नगजी स्वामी रो तेज घणो। स्वामीजी पूछ्यो : काइ तेज ? जद लोक बोल्या : नगजी गोचरी पधार्‌यां। कुत्ती घणी भूसै। घणोंइ कह्यो— हे कुत्ती! साधानें मत भूस मत भूस पिण कह्यो मानें नहीं। जद टाग पकड़नें फेरने वणण-वणण फेंक दीधी। कुती पाधरी होय

गइ। जठै पछ फेर भूसी नहीं। जद स्वामी बोल्या : कुनी पड़ी जठैं जायगा पूँजी के नहीं ? जद ते गृहस्थ बोल्या : थे पूंजो जायनें। निकमा खूचणा काढो। इसा मूर्ख गृहस्थ। ❀

: ५५ :

पाली में मयारामजी गोचरी में आहार मंगायो तिणसूं आठ रोटी वधती ल्यायो। स्वामीजी गिणी नें कह्यो : आहार मंगाये उपरंत ल्याया। जब मयारामजी बोल्यो : अठै मेल द्यो अठै। जद स्वामीजी आठ रोटी काढ दीधी। मयारामजी सांधा नें धामी पिण कोइ लै नहीं। जब बाल्यो : परठ देवारा भाव है। स्वामी बोल्या : परठ नें दूजे दिन विगै टालज्यो। जब क्रोध करनें अकवक बोलवा लाग गयो। कहै : हूँतो इसा आचार्य राखूँ नहीं। अकबक बोल्यो। कहै नव पदार्थ में पांच जीव च्यार अजीव री श्रद्धा ही झूठी। एक जीव आठ अजीव है। जद स्वामीजी खिमाकर विश्वासी आहार अवेर नें बोल्या : आ थारे संका है तो चरचा करांला। इम कहि उण वेला इज तावडै मे विहार कीधो। उतमूण में सूत्र उत्तराध्येन थी संका मेट दीधी। प्रायश्चित्त दीधो। पछै वेणीरामजी स्वामी नें सूंप-दीधो। कितरायक दिनों में छूट गयो। ❀

: ५६ :

स्वामीजी दिशां जातां एक··· ··· साथे थयो। तेनें नीला ऊपर चालतो देखी स्वामीजी बोल्या : छतै चोखै मारग नीला ऊपर क्यूं हालो ? जद ते बोल्यो : म्हारो नाम लियो तो हूँ गाम में जाय कहिसूँ भीखणजी नीला ऊपर दिशां गया। ❀

: ५७ :

रीयां पीपार बीचै एक··· ···मिल्यो। स्वामीजी नें एकंत लेगयो। थोड़ी वेलासूँ पाछा पधार्‌या। जद हेम पूछै : स्वामीनाथ ! आपने कांइ बात पूछी। स्वामीजी बोल्या : आलोवणा कीधी। वलि हेम पूछ्यो : कांइ आलोवणा कीधी ? जद स्वामीजी बोल्या : कैहणो नहीं। ❀

: ५८ :

पुर वारे स्वामीजी दिशां पधार्‌या। एक ·· ·· आड़ो फिर्‌यो। टोलो कूंडियो काढ्यो। झखर करवा लागो। जव एक गुवालियो आय उणनें कह्यो : या गुरां सूं मतकर। भारमलजी स्वामी कनें ऊभा ज्यां आश्री कह्यो यां सूं कर, लडनो ह्वै तो यांसूं लड़। ❀

: ५९ :

साधुपणो लेइ चोखो पाले ते मोटा पुरुप। कइ कहै—पांचमें आरा मे साधुपणो पूरो पलै नहीं, इसो हिज अकारू निभै। तिण ऊपर स्वामीजी दिष्टात दियो : किणही चौकारा नौहता फेर्‌या अने जीमण वेला एकीका नें माहे आवा दे। लोक कहै—तें चौकारा तो नोहता दिया अनें एकीका नें आवा दे ते क्यूं ? जद कहै : म्हारी पोंहच इतरीज है। अम-कडिये तो आपरै वापरै लारै धूल उड़ाई, किरियावर कीधो नहीं। हूँ तो एकीका नें तो आवा देवूँ छूँ। जव लोका कह्यो तेंई न कीधो हूँतो कुण थारै वारणै वैठे हैं ? तें चोकारा नौहता देनें एकी का नें जीमावे है सो थारो जमारो विगडै है। ज्यूं लेवारी वेलां तो पाच महाव्रत आदर्‌या अनें पालवारी वेला पूरा पालै नहीं तिणरो पिण इहलोक परलोक विगडै। ❀

: ६० :

साधु रो आचार वताया सूँ केइ ढीला भागल निंदा जाणै। तिण ऊपर दिष्टांत दियो : एक साहुकार वेटा नें सीख देवै : लेवे जिणरो पाछो देणो। न दिया लोक दिवाल्यो कहै। पाडोसी दीवाल्यो हुंतो ते सुणनें कूदै। कहै—वेटा नें सीख न दे म्हारी छाती वालै है। ज्यू साधु साधु रो आचार वतावै जद भेपधारी सुण नें कूदै। कहै—म्हारी निंद्या करै है। ❀

: ६१ :

कोइ कहै सावद्य दान में म्हारै मौन है। यू न कहाँ—तू दै। हम वदै अनें पुण्य दरसावै। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो। किण ही स्त्री कह्यो : लोटी म्हारै हाटै दीजो। समझू मन में जाणै पोतारा धणी नें दीराइ छै।

ज्यूं सावद्य दान में पूछ्यां कहै : म्हारै मूंन है। रहस्य में पुण्य मिश्र दरसावै। समजू जाणैं यांरै पुण्य मिश्र री श्रद्धा छै। ❀

: ६२ :

पुन्य री श्रद्धा वाला मिश्र री श्रद्धा वाला चौड़ै तो पुन्य मिश्र न परूपै पिण मन में पुन्य मिश्र श्रद्धे। ते श्रद्धा ओलखायवा स्वामीजी दृष्टान्त दियो : किण ही स्त्री नें कहै—थारे धणी रो नाम पेमो है ? जब ते कहै क्यां नें हूवै पेमो। नाथू है ? क्या नै हूवै नाथू। पाथू है क्या नै हूवै पाथू ? धणी रो नाम आया अण बोली रहै जद समझणो इण रै धणी रो नाम ओहीज है। ज्यूं सावद्य दान में पाप है इम पूछ्या कहै क्या नै हूवै पाप। मिश्र है ? क्या नै हूवे मिश्र। पुण्य है ? जब मूंन रहै। जब समजू जाणै यारै पुण्य री श्रद्धा है। ❀

: ६३ :

..... यानैं कहै थानक थारे अर्थे कीधो जब कहै म्हे कद कह्यो थानक म्हारे वासते कीजो। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दीयो : ज्यूं डावडो कद कहै म्हारी सगाइ कीजो, पिण सगाइ किया परणीजै कुण ? डावडो। वहु किण री बाजै ? डावड़ा री। घर किण रो मंडै ? डावडा रो। तिम थानक पिण त्यांरो इज बाजै। तेहिज माहैं रहै तेहिज राजी हूवै। ❀

: ६४ :

तथा जमाइ कद कहै म्हारै वासते सीरो करो ? पिण जीमें परहो। जद दूजी वार फेर करै। सीरा ना सूंस करै तो क्या नें करै। ज्यूं ये कहै म्है कद कह्यो थानक म्हारै वासते करो। पिण त्या रै वासतै कीधां माहै रहै परहा। जद दूजी वार फेर करै। थानक में रहिवारा त्याग करै तो क्या नें करावै ? ❀

: ६५ :

केइ कहै म्हे जीव बचावा भीषणजी जीव बचावै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : थारा बचावणा रह्या थें मारणांइ छोड़ो। अंधारी रात्रि में किंवाड़

जड़ो हो अनेक जीव मरे है। किंवाड जड़वारा सूँस करो तो अनेक जीवां री दया पलै। ज्यूं चोकीदार हो सो चोकी तो छोड़ दीधी ने चोरया करवा लाग गयो। लोका नें कहै हूँ चोकी देऊं छूँ। सो जावता रा पइसा देवो। जब लोक बोल्या : थारी चोकी दूर रही तूं चोरया ही छोड़। तूं दिन रा हाट घर देंख जावै ने रात्रि रा फरै चोरी करै। पइसो-पइसो घर बेठाने परहो देस्या। तू चोंरया छोड़। ज्यूं ये कहै म्है जीव बचावा। स्वामीजी बोल्या : थारा बचावणा रह्या मारणा छोड़ो। ❀

: ६६ :

केइ इम कहे—हिवड़ा पांचमो आरो छ सो पूरो साधपणो न पलै। जद तिण ने स्वामीजी कह्यो : चोथा आरा मे तेलो कितरा दिना रो ? जद ते कहै : तीन दिनां रो। स्वामीजी कह्यो : एक भूंगड़ो खावै तो तेलो रहै के भागे ? जद ते कहै—भागै। वलि स्वामीजी पूछ्यो : पांचमां आरा मे तेलो कितरा दिना रो ? जद त्या कह्यो तीन दिनां रो। स्वामीजी पूछ्यो : हिवड़ा एक भूंगड़ो खावै तो तेलों रहै के भागे ? जद त्या कह्यो—भागै। जद स्वामीजी बोल्या : आरा रे माथे क्यूं न्हाखो ? एक भूंगडो खाधा तेलो परहो भागै तो दोष री थाप सूं साधपणो किम रहसी ? ❀

: ६७ :

केइ कहै—ए दोष लगावै तोहि आपां विचै तो आछा है। काचो पाणी तो न पीवै स्त्री न राखै। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो : एक जणै तो तीन एकासणा किया। एकेक टक में छै छै रोटी खाधी। एक जणै तेलो करनें आधी आधी रोटी खाधी। यांमें भागल कुण ने साबत कुण ? तेलावालो भागल खोटो अने एकसनावालो साबत चोखो। ज्यूं गृहस्थ लिया व्रत चोखा पालै ते तो एकसणावाला सारीखो अनै साधुपणो लेइनै दोष सेवे ते तेलामे रोटी खाधी ते सरिखो। ❀

: ६८ :

पालीमें लखजी वीकानेरयो मूवो जद इकावन रुपियां थानक रे निमित्त उदकिया। तिण रुपियां री जायगा लेयनें लकड़ा री खटकड़ कीधी। आरंभ

थोड़ो। जद स्वामीजी नें किणही कह्यो : इनमे काइ आरम्भ है ? विशेप आरंभ नहीं। जद स्वामीजी कह्यो : कोइ जनमे जद पहिला अंकूरो करै। जन्म पत्री वर्षफल तो पछै हुवै। ज्यू ओ थानक अंकूरो जिम तो हुवो। पिण लाबा आऊखावालो देखेला इण ऊपर चूनो चढ़तो दीसे है। पछै कितरायक वर्षां पछै थानक ऊपर चूनो चढ्यो जद ठेकचन्द पोरवाला कह्यो—भीपणजी कहिता था इण थानक ऊपर चुनो चढतो दीसै सो अवै चढै। ❀

: ६९ :

आगला नें समझावा दृष्टात करड़ा दै, जब किणही स्वामीजी नें कह्यो : आप दृष्टात करडा देवो। जद स्वामीजी कह्यो : रोग तो गम्भीर रो उठ्यो अनें कहै म्हारै खूजालो। पिण खूजाल्या साता न हुवै। हलवाणी रा डाम दिया साता हुवै। ज्यूं रोग तो मिथ्यात्व रूप करड़ो। ते करड़ा दृष्टात सूं दटै। ❀

: ७० :

तिलोकचन्दजी नें चन्द्रभाणजी आचार्य पदवी रो लोभ देयनें फंटायो। जद स्वामीजी कह्यो : थानें आचार्य पदवी आणी तो कठिन है नें सूरदास री पदवी तो आवै तो अटकाव नहीं। थानें चन्द्रभाणजी ऊजाड़ मे छोड़तो दीसै है। कितरायक वर्षां पछै तिलोकचन्दजी नें निजर कची रो नाम लेयनें चन्द्रभाणजी ऊजाड में छोड्यो। स्वामीजी रो वचन मिल्यो। ❀

: ७१ :

एक लाडू में जहर अने एक में नहीं। पिण समझणो हुवै ते संका मिट्या विना दोनूं नहीं खावै। ज्यूं साध तथा असाध री संका मिट्या विना वंदणा करै नहीं। ❀

: ७२ :

कई सावद्यदान मे पुण्य कहै। समजू हुवै ते किमत पक्की करै। असंजती नें दियां पुण्य कहो छो तो थें असंजती ने देवो के नहीं ? जद कहै म्हानें तो दियां दोष लागं म्हांनें कल्पै नहीं। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टंति दियो।

एक पुरुष नें किणही कह्यो : थारे वाई रो रोग है सो सतखंडिया महिल थी पड्यां थारी वाई मिटै। जद ते बोल्यो : ए वाई नों रोग नो थारे पिण छै सो पहली थे पड़ो। जद ते कहै म्हारा तो हाड़का परहा भागै तूं पड़। जद ऊ बोल्यो : थारा हाड़का परहा भागै तो म्हारो रोग किसतरां जासी। ज्यूँ… कहै असंजती नें दियां म्हारो तो साधपणो परहो भागै। थें देवो थांनै पुण्य होसी। जद समजू बोल्यो : थांरो साधपणो भागै तो इसो दान दीधां म्हांनें पुण्य किम हुसी। ❋

: ७३ :

तथा दोय जणारै घणां काल रो वैर हुंतो। पछै हेत कीधो। तिणनें नूं हतीनै जीमावा घरे ले गयो। भोजन परुसी कहै भाइजी जीमो। जब ते बोल्यो थे पिण भेला जीमवा वेसो। ऊ भेलो वेसे नहीं। जद ते बोल्यो : था विनां ए भोजन जीमण रा त्याग है। कारण भोजन में जहरादिक है जद तो भेलो वेसै नहीं। अनै सुद्ध हूंता तो साथै वेससी। ज्यूँ असंजती नें दियां पुण्य कहै। जद समजू जाणें पोते तो देवै नहीं अनें दूजा नें पुण्य बतावै। पिण ए वात तो मूरख हुवै ते मानें। पुण्य हुवै तो पहिला पोतें कर दिखावै जद दूजा पिण मानें। ❋

: ७४ :

एक ··बोल्यो : भीषणजी नें कटारी सूँ परहा मारूं। तो बाइस टोला रो वैरो मिट जावै। पछै केतलायक काले तिणरो शील भागो। जद तिणनें नवो साधपणो दियो। लोकां में वात फैलाई—भीषणजी नें कटारी सूँ मारवारो कह्यो तिणसूँ नवी दीक्षा दीधी। ए वात स्वामीजी पिण सुणी। बुद्धि सूँ विचार्यो इणरो शील भागो दीसे छै पछै ते मिल्यो जद स्वामी जी पूछ्यो : थारो शील घर री स्त्री सूँ भागो के ओर स्त्री सूँ भागो। जद ते बोल्यो : पर स्त्री सूं तो न भागो घर स्त्री सूँ पिण संघटा रूप हुवो। पूरो तो न भागो। तिण सूँ नवी दीक्षा दीधी। ❋

: ७५ :

कुसलो तिलोक संकडाइ में चालवा लागा। अनै मन में जाणें भीषणजी रा श्रावका नें फेरा। परूपणा साकड़ी करवा लागा—साधू ने तीजा पहर नीं गोचरी करणी। गाम मे रहिणो नहिं। पछे स्वामीजी मिल्या : आगै देखै तो पहलै पहर नीं गोचरी करैं। जद स्वामीजी पूछ्यो : थें तीजा पहर नीं गोचरी कहो। अनैं पहले पहर किम करो। तब तड़कने बोल्या : म्है तो धोवण पाणी रे वासते फिरां छा। स्वामीजी बोल्या : धोवण पाणी रो दोष नहीं तो दोय रोटी ल्याया काइ दोष? जद वले बोल्या : साधू नें लाडू खाणा नहीं। साधू नें घी खाणो नहीं। साधू नें किसा बछेरा बछेरी जनमावणा है। स्वामीजी बोल्या : थे कहो छो साधू नें लाडू खाणा नहीं तो देवकी रा पुत्रा लाडू वहिर्‌या इम सूत्रा मे कह्यो छै। जब ते बोल्या : ऊवे तो मोटा पुरुष छा। जब स्वामीजी बोल्या : मोटा पुरुष ह्वै सो वली खावै इन है। जद क्रोधकर बोल्या : तुमै तेरापन्थी दान दया उठाय दीधी सो तुम नें जगत मे भाड कर देस्या। स्वामीजी बोल्या : दो हजार आगे कहे है। जो घटता है तो दोय हजार पूरा हुवा। अनै दोय हजार पूरा है तो दोय वधता सही। पछै उठासूँ नैणावै गया। स्वामीजी रा श्रावका रे संका घालवारो उपाय करवा लागा। जद श्रावक पिण उणारै ठागारो उघाड़ करवा लागा। दोया में एक जणो वेलै २ पारणो करै तिणनें कह्यो : थें तो तपस्या ठीक करो छों पिण दूजो ते तो करै नहीं। जद ते बोल्यो : लोलपणो छूटा तप ह्वै। अनै ए लोलपी छै। जद श्रावकां तिणनें कह्यो : उवे तो थाने लोलपी कहै। तव ते बोल्यो : ओ तपस्या करै पिण क्रोधी छै। जद दूजाने कह्यो थानै ऊ क्रोधी बतावै छै। जद दोनूं भेला होय झगड़वा लागा जद लोक बोल्या :

जोड़ी तो जुगती मिली। कुशलो ने तिलोक।
ऊथपै ऊ ऊथपै। किण विध जासी मोख॥

पछै फीटा पड़नें चालता रह्या।

❀

: ७६ :

वावीस टोला मांहो मांही उवै इणानें भूठा कहै उवै उणांनें भूठा कहै। जद स्वामीजी बोल्या : कहिणी रे लेखै दोनूं साचा है। उवे ही भूठा है। अनै उवे ही भूठा है। इण लेखै दोनूं साच बोलै है। ❀

: ७७ :

पादू में एक भाये कह्यो : हेमजी स्वामी री पछेवड़ी मोटी दीसै। जद स्वामीजी लम्बपणै चोड़पणै माप दिखाइ। उनमान नीकली। पछै स्वामीजी तिणनें निषेध्यो घणो। कह्यो : च्यार आंगुल रा वटकारै वासते म्हारो साधपणो म्हे गमावा, इसा म्हानें भोला जाण्या ? इनरी थानें प्रतीत नहीं तो रसता में काचो पाणी पीवै तो थानें काइ खबर इत्यादि घणो निषेद्यो। जव ते हाथ जोड़ने बोल्यो : म्हारै भूठी संका पडी। ❀

: ७८ :

टोला में थकां रुघनाथजी साथै स्वामीजी गोचरी ऊठ्या। एक भायो चरखो लोढ़तो तिण रा हाथ सूँ आहार वहिर्‌यो। आगे रुघनाथजी बोल्या : भीखणजी ! संका पडी ? जद स्वामीजी बोल्या : साक्षात् असूजतो ईज बहिर्‌यो। इणमे फेर संका कांइ ? जद रुघनाथजी बोल्या : भीखणजी ! दृष्टी ऊंड़ी राखणी। थागै था सरिखो एक नवो चेलो गुरां साथै गोचरी में असूजतो लेतां गुरा नें वरज्या जद गुरां ते आहार न लीयो। पछै एकदा विहार करता उजाड मे तृपा घणी लागी। गुरां नें कह्‌यो मोने तृपा घणी लागी गुरां भणो : साधू रो मारग है सेंठाइ राखो। पिण चेलै तृपा मरतै काचो पाणी पीधो। मोटो प्रायश्चित्त आयो। नहि तरतो थोडा मेड गुदरतो। जद स्वामीजी जाण्यो यानें इसो इ दरसै। ❀

: ७९ :

केइ इम कहै : हिवड़ा पांचमो आरो है। पूरो साधोपणो पलै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : खतमंडै तो साहूकार रे माथै अनें दिवल्या रै माथै सरिखो मंडै। भणो गांगमी तिवारे तुरत देसी। उजर काण पावै नहीं।

आकरा दीपता लेहणा। पिण साहूकार दीवाल्या री खबर तो मारया पड़ै। साहुकार तो व्याज सहित देवै अनें दिवाल्यो मूल ही में तोटो घालै। ज्यूं भगवंते सूत्र भाख्या तिम प्रमाणै चालै ते साधू अनें पाचमो आरा नों नाम लेइ सूत्र प्रमाणै न चालै ते असाध। ❀

: ८० :

वैद किण ही री आंख्या री कारी कीधी। आख ठीक हुवां वैद बधाइ मागै। जद कहै पंचा नें पूछसूं। पंच कहसी सूझतो हुवो तो बधाइ देसू। जद वैद बोल्या : तो नें काइ दीसे है ? जद फेरबोल्यो : पंच कहसी सूझतो हुवो तो देसूँ। जद वैद जाण्यों बधाई आय चूकी। ज्यूँ कोइ रे श्रद्धा वेसाणी नें कहै हिवै तूं गुरु कर। तब ते कहै दोय च्यार जणांनें पूछसूं तथा आगला गुरु नें पूछसूं। ते कहसी तो गुरु कर सूं। जब जाणनी इणरै श्रद्धा पक्की बैठी नहीं। ❀

: ८१ :

कोइ· · ने छोडनें साची श्रद्धा लीधी। गुरू कीधा। पिण ऊणा रो परचो छूटै नहीं। वार वार जावै। जद स्वामीजी पूछ्यो यारो परचो क्यूं राखै ? जद ते बोल्यो : म्हारै आगलो सनेह है। जद स्वामीजी बोल्या : किण ही नें मेरां पकड ले गया। डेरो खोस लीधो। फाटका पिण दीधा। पछै घर रा मेहनत कर छुडा ल्याया। केतलायेक काले मेला मे भेला थया। ओलखनें मेरा सूं मिल्यो। लोकां पूछ्यो--थारै काइ सैंहद ? जद बोल्यो : म्हांरै भाइजी रा हाथ था फाटका लागा है सहलाणी है। आ भाइजी रा हाथ री सहलाणी है। जद लोका जाण्यो ओ पूरो मूरख है। ज्यूं यौं कुगुरा रे जोग सूं तो खोटा मत मे पड्यो हो। तिण नें उत्तम पुरुषा चोखो मारग पमायो। अनै ते वली कुगुरा सूं हेत राखै तौ बड़ो मूरख। ❀

: ८२ :

सरियारी में स्वामीजी चोमासो कीधो। तिहा कपूरजी पोतीया बंध हुंतो अनै पोत्यावंध री वायां पिण हुंती। संवत्छरी आया कपूरजी कह्यो : भीखणजी ! वायां सूँ बोलाचाली हुइ सो खमावाने जाऊं हुँ। स्वामीजी

बोल्या : खमावा तो जावो छो पिण रखै नवो कजियो करोला। जद कपूरजी कह्यो : नवो कजियो क्याने करूं ? पछै बाया कनै जायने बोल्यो : आपारै खमतखामणा है। थे तो अजोगाइ घणी कीधी पिण म्हारै तो रागद्वेष राखणो नहीं। जद बायां बोली : अजोगाया थे कीधी के म्है कीधी ? इम आपसमें झगड़ो घणो लागो। पाछो आयने स्वामीजीने कह्यो : भीषणजी ! कजियो तो अपूठो घणो हुवो। जद स्वामीजी बोल्या : म्है तो थाने पहिला इज कह्यो थो। ❀

: ८३ :

हेमजी स्वामी स्वामीजी ने कह्यो : तिलोकजी, चन्द्रभाणजी, सन्तोषचन्दजी, शिवरामदासजी, आदि टोला बारै जू जूवा फिरै ते सर्व भेला होयनै एकठा रहै तो यांरोई टोलो होय जावै। जद स्वामीजी बोल्या : इसी करामात हुवै तो अठा सूंइ क्यूं जावै ? अठै काइ दुख थो ? ❀

: ८४ :

....कह्यो : भीषणजी कोइ कसायां विचैई खोटा। जद स्वामीजी बोल्या : उणारै लेखै तो यूं ही कारण कसाइ तो बकरा मारै उणारो कांइ विगाड्यो ? म्है उणांरा श्रावक समजाय लेवां, उणारो मत खंडन करा छां तिण सूं कहै छे। ❀

: ८५ :

भीखणजी स्वामी सरियारी सूं विहार करता सामेंजी भंडारी पगा में पाग मेली बोल्यो : आज तो विहार मत करो। जद स्वामीजी बोल्या : आज तो रहां छां पिण आज पछै इसी वीणती कीज्यो मति। ❀

: ८६ :

आगरिया सूं स्वामीजी विहार करता भाया हठ घणो कीधो। पिण स्वामीजी मान्या नहीं, विहार कीधो। गाम बारै कितोयेक दूर गया। भारमलजी स्वामी बोल्या : आज तो भाया बेराजी घणा हुआ, आप विणती न

मानी तिण सूं। जद स्वामीजी बोल्या : आज तो पाछा चालो पिण आज पछै इसी विणती कीज्यो मति। ❀

: ८७ :

केलवामें परषदा वेठां ठाकर मोहकम सींहजी पूछ्यो। आपनें गाम-गाम विणतीयां आवै। घणा लोग लुगाइ आपनें चावै। नरनारी आपनें देखने राजी घणां हुवै। बाई भायाने आप वलभ घणा लागो। सो कांइ कारण? आप में इसो कांइ गुण? जद स्वामीजी बोल्या : कोइ साहूकार प्रदेश थो। तिण घरे कासीद मेल्यो। खरची मेली। सेठाणी कासीद नें देखनें राजी घणीं हुइ। उन्हा पाणी सूं उणरा पग धोवाया। आछी तरह भोजन करनें जीमावे। कनै वेठी समाचार पूछै। साहजी डीला में कीसायक है? सुखसाता है? साहजी कठै पोढै है? कठै वेसै है? कासीद जिम-जिम समाचार कहै तिम-तिम सुणने घणी राजी हुवै। पिण कासीद नें देखने राजी हुवा रो कारण धणीं रा समाचार कहै तिण सूं। तिम म्हैं भगवान रा गुण वतावां छा। संसार मोक्ष रो मार्ग वतावा छा। तिण कारण लोग लुगाइ म्हासू राजी हुवै छै। ❀

: ८८ :

वले केलवा में ठाकरां पूछा कीधी। आप आगामिक तथा गया काल नां लेखा वतावो छो सो कुण देख्या है? जद स्वामीजी वोल्या : थारा बाप, दादा, पड़ दादा आदि पीढ़ियां रा नाम तथा त्यारी पूराणी वाता जाणो हो सो किण देखी है? जद ठाकर वोल्या : भाटा री पोथ्या में वड़ेरां रा नाम वारता मंडी है तिण सू जाणां हा। जद स्वामीजी वोल्या : भाटा रे झूठ वोलण रा सूंस नहीं। त्यांरा लिख्या पिण थे साचा जाणो हो तो ज्ञानी पुरषा रा भाख्या शास्त्र भूठा किम हुवै? ऊवै तो साचा ही है। इम सुणनें ठाकर घणां राजी हुवा भला जाव दीधा। ❀

: ८९ :

ढुँढार में एक गाम में स्वामीजी पधास्या, जद ठाकर अधेली रा टका पगा मे मेल्या। जद स्वामीजी वोल्या : म्है तो टका पइसा काइ ल्या नहीं।

जद ठाकर बोल्या : आप मोहोर लायक हो पिण म्हारी पोहच इतरीज है। अबके पधारस्यो जद रुपइयो निजर करसूँ। जद स्वामीजी बोल्या : म्हे तो रुपयो मोहर आदि काइ न राखां। इम सुणनें ठाकर घणो राजी हुवो। गुणग्राम करवा लागो—आपरी करणी मोटी है। ❀

: ९० :

पुर में स्वामीजी कने गुलाब ऋषि दोय जणा सूँ·· ····रा श्रावक घणां साथे लेइने चरचा करवा आयो। ··· ··· रा श्रावक ऊंधा अवला बोलै। जद स्वामीजी बोल्या : होली में राव बणाय साथै गहरीया तमासा रूप हुवै। ज्यूँ थें याने तो राव बणाया नें थें गहरीया ज्यूँ बणीया दीसो हो। पिण ज्ञान री बात तो काइ दीसै नहीं। हिवै स्वामीजी गुलाब ऋषि नें पूछ्यो : शीतलजी रा टोला रा साधा ने साध सरधो के असाध ? जद ते बोल्यो : असाध सरधू छू। शीतलजी रा साध संथारो करे त्यांने काइ सरधो ? जद बोल्यो : इणां रो अकाम मरण। रघुनाथजी, जयमलजी आदि टोला वाला नें कांइ सरधो ? जद बोल्यो : असाध। इणारा टोला में संथारो करें जद ? बोल्यो : अकाम मरण। ❀

पछै ·· ·रा श्रावक बोल्या : भीषणजी नें काइ सरधो। तब स्वामीजी पहिला ही बोल्या : म्हे तो यानें आगै देख्याइ नहीं अनै म्हारै यांरै श्रद्धा आचार मिल जासी तो आहार पाणी भेलो कर लेवा तो अटकाव नहीं। तिवारै इणांरा श्रावक फितायक बिखर गया। हिवै गुलाब ऋषि नें स्वामीजी पूछ्यो : समदृष्टि नें पाप लागै के नहीं लागै ? जब ते बोल्यो : न लागे। स्वामीजी पूछ्यो समदृष्टि स्त्री सेवै तो ? जद बोल्यो— पाप तो न लागे, पिण भेष मे सोभै नहीं। स्वामीजी बोल्या : मांडै पोतियो बाधने सेवे तो ? इत्यादिक अनेक प्रश्न पूछ्या, जद पाछा जाब देवा असमर्थ थयो, घणो कष्ट हुवो। जद क्रोध कर बोल्या : म्हांसूं चरचा करो हो पिण गोगूंदा रै भाया सूं चरचा करो तो खबर पडै। गोगूंदा ना भाया तूंगिया नगरी ना श्रावक छै। गोगूंदा नां श्रावक अकबरी मोहर छै। जद स्वामीजी बोल्या - थारै तीसो खेत्र

हुवै सो बतावो। गुलाब ऋषि बत्तीस सूत्र खाधै लिया फिरतो पिण सरधा खोटी। वली पंच महाव्रत नां द्रव्य क्षेत्र काल भाव पूछ्या। जद बोल्यो : पानां में मंड्या है। स्वामीजी बोल्या : पानो फाट जासी तो ? साधापणो थे पालो हो कै पानो पालै ? इत्यादिक घणो कष्ट कीधो। पछै स्वामीजी गोगुंदे पधास्था। गोगूंदे रै भायां सू चरचा करनें समझाया। सुणनें गुलाब ऋषि आयो। स्वामीजी सूँ चरचा करवा लागो। जद भाया बोल्या : महाराज यांसूँ चरचा म्हैं करस्यां। म्हांरा आगला गुरु है। पछै भायां गुलाब ऋषि सूँ चरचा करनें घणों कष्ट कीधो। जद क्रोध करनें बोल्यो : गोगूदा नां भाया ठीकरी रा रुपिया छै। घणों फीटो पडने चालतो रह्यो। पछै गोगूँदा रा भाया स्वामीजीनै अठारै सो बाइस पानां री भगवती वैराइ। अनें पन्नवणा। सूत्र वहरायो। ❀

: ९१ :

पाली में खंतिविजय संवेगी रुघनाथजी सूं चरचा कीधी। किण ही साधा नें मिश्री रे भेळो लूण वहिरायो। खंतिविजय तो कहै फाक जाणो पात्रे आय पड्यो तिण कारण अनें रुघनाथजी कहै धणींनें भूलावणो अथवा परठ देणों। ब्राह्मण नें साइदार थाप्यो। ते पिण बोल्यो फाक जाणो। पछै रुघनाथजी आचारंग काढ्यो। जद खंतिविजय रुघनाथजी कनें सूँ पानो खोसनें फाड़ न्हाख्यो। घणा लोग लुगाया सुणता कष्ट कीधो। जद संवेगिया री बायां गावा लागी— ❀

ज्ञानी गुरु जीता रे जीता सूत्र रे प्रताप ज्ञानी गुरु जीता रे।

जद रुघनाथजी घणा उदास हुवा। पछै श्रावका ने कह्यो : इणनें जीतै जिसो तो भीखण है। म्हे बाइसटोला साचा ज्यानेंइ झूठा पाडै है तो ओ तो साक्षात तावा रो रुपइयो है सो इणनें तो हठावणो सोरो है। जद त्यांरा श्रावक स्वामीजी रा श्रावका नें कहिवा लागा थारा गुरु मेवाड़ में है सो विणती मेलनें बोलावो। पछै स्वामीजी पिण मेवाड़ सूँ मारवाड़ पधास्था। पाली मे उणांरा श्रावक स्वामीजी ने कहिवा लागा : पूजजी कह्यो है— खंतिविजय नें चरचा करनें हठावो। खंतिविजय उंधो घणो बोलै। ढढीयारै

मूँढै में आंगुली घाती पिण दात देख्यो नथी। एक भीखन कालियो रह्यो है। इसो ऊंधो बोलै। पछै स्वामीजी विचरता-विचरता काफरला पधास्या। खंतिविजय पिण पींपार ना घणां श्रावका सूँ देवल नी प्रतिष्ठा हुवै त्यां आयो। ❀

खंतिविजय नें घणा लोक कहै भीषणजी सूँ चरचा करणी। एकदा कुँभारा रे वास में मारग वहता साह्मां मिल्या। स्वामीजी नें पूछ्यो ताहरो नाम काइ ? स्वामीजी बोल्या : म्हारो नाम भीखण। खंतिविजय बोल्यो : उवे तेरापंथी भीखणजी ते तुम्है ? जद स्वामी बोल्या : हा उवे इज। जद खंतिविजय बोल्यो : तुमारै सूँ निक्षेपां नीं चरचा करवी छै। स्वामीजी बोल्या : निक्षेपा किता ? ते बोल्यो : निक्षेप। चार—नाम १, स्थापना २, द्रव्य ३, भाव ४। स्वामीजी पूछ्यो यां च्यारा मे वंदनां भक्ति किसानी करणी ? खंतिविजय बोल्यो : च्यारूं ही निक्षेपा नीं वंदना भक्ति करवी। स्वामीजी बोल्या : एक भाव निक्षेपो तो म्है पिण वादा पूजा छा। बाकी तीन निक्षेपां नीं चरचा रही। तिणमे प्रथम नाम निक्षेपो। किणहीं कुम्भार नो नाम भगवान दियो। तिणनें थे वादो के नहीं ? जद ते बोल्यो : तिणनें सूँ वादीयै ? प्रभूना गुण नथी। स्वामीजी बोल्या : गुण-वालानें तों म्हैइ वादा छा। इम सुण जाव देवा असमर्थ थयो। हिवै स्थापना री चरचा स्वामीजी पूछी। रत्नारी प्रतिमा हुवै तो वादो के नहीं ? ते बोल्यो : वादा, सोना री वांदा, रूपा री तथा सर्व धात री हुवै तो वादा। पाषाण-री हुवै ता वांदो कै नहीं ? तब ते बोल्यो : वादा। वली स्वामीजी पूछ्यो गोबर नीं हुवे तो ? खंतिविजय क्रोध करनें बोल्यो : तुम सू निक्षेपा नी चरचा करवी नहीं। तूं तो प्रभू नीं आसातना करै। अम्हनें गमे नहीं। इम कही चालतो रह्यो। स्वामीजी पिण ठिकाणें आया। पछै खंतिविजय नें ना कह्यो : भीखणजी सूँ चरचा करो। इम बार-बार कहिवा थी खंति-जय घणां लोकां सहित आसरे दश हाटरै आय बेठो। हिवै स्वामीजी लोकां आय कह्यो : खंतिविजयजी चरचा करवा आया है। सो आप पण चालो। जद स्वामीजी बोल्या : म्हारा भाव तो अठै इज छ। खंति-वजयजीइ इतरी दूर आया है, चरचा करवा रो मन हुसी इतरी र और

आ जावेला। जद लोका वली खंतिविजय ने जाय कह्या। आप चालो। इम कहिने एक हाट रे आतरे ल्याय वेसाण्यो। वोल्यो: अठा सूँ तो नहीं सरकीस। पछै लोका स्वामीजी नें आय कह्यो : अबे तो आप ही पधारो। जद स्वामीजी अनें भारमलजी स्वामी पधास्या। हिवै चरचा माडो। स्वामीजी बोल्या : चरचा आचारंग आदि इग्यारा अंग सूत्रा री करणी। आचारंग सूत्र में एहवो कह्यो छै : ❋

सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता हतव्वा—सर्व प्राण भूत जीव सत्त्व हणवा। एत्थ पि जाणह नत्थीत्थ दोसा—इहा धर्मनें काजें जीवहत्या दोप नहीं। अणारिय वयणमेय—ए अनार्य नो बचन छै।

एह पाठ स्वामीजी बतायो। जद खंतिविजय बोल्यो : इणमे खोट है। ल्यावरे चेला आपारी पड़त पोथी खोलेनें देख तो। तिण में पिण इम हीज नीकल्यो। तिवारे स्वामीजी वोल्या : वाचो। जद परपदा मे वाचै नहीं। हाथ धूजवा लागो। तिवारे स्वामीजी बोल्या . थारो हाथ क्यूँ धूजे ? हाथ ता ४ प्रकारै धूजै—एक तो कंपण वाय सूँ। के क्रोध रै वस हाथ धूजै। अथवा चरचा में हास्या हाथ धूजै। के मैथुन रे वशीभूत। जद क्रोध रे बस वोलियो—साला रो माथो छेदिये। जद स्वामीजी बोल्या : म्हारे जगत् मे स्त्रिया ते मा वहिन समान है। अनैं थारे घर मे कोइ स्त्री हुवै ते म्हारै वहिन। इण लेखै सालो कह्यो हुवै तो जाण्या। पिण घर मे स्त्री नहीं हुवै अनै मोनै सालो कहो तो भूठ लागै। अनै थैं साधपणो लियो जद छ काय हणवारा त्याग किया सो मोनै साध तो न सरधो पिण त्रसकाय मे तो छूँ। माथो छेदवारो कह्या सो मोने हणवारो काइ आगार राख्यो। इम सुण घणो कष्ट हुवो। पछे मोतीरामजी चोधरी कह्यो : उठो परहो म्हानैं लजावो। एहता क्षमावंत साधू छै अनै थे अरल विरल वोलो। इम कही हाथ पकड उठाय ले गया। पछे स्वामीजी ने खंती-विजय पींपार आया जब लोका जाण्यो अबै चरचा हुसी। स्वामीजी गोचरी जायै जठै रा श्रावक कहै—पूजजी कह्या है : खंतिविजय सूँ चरचा कष्ट करो। जद स्वामीजी बोल्या : उवें करसी ता करवारा

भाव छै। पछै सरूपजी मूंहतो खंति विजय ने जाय कह्यो। × × × × भीखणजी कहै है सो चरचा करो। × × पिण खंती विजय तो फेर स्वामीजी सूँ चरचा करी नहीं। स्वामीजी मास खमण रही विहार कीधो। विहार करता खंतिविजय रे उपाश्रय कने ऊभा रह्या तो पिण बोल्यो नहीं। फेर एकदा पाली में खंति विजय सूं चरचा हुइ। मिश्री रे बदलै लूंण आया खंतिविजय कहै पात्रे आय पड़्यो तिण सूँ खाय जाणों। जद स्वामीजी बोल्या : गुल रै बदलै किण ही अमल वहिरायो, मिश्री रे बदलै सोमलखार वहिरायो ते पिण थांरै लेखै खाय जाणो पात्रे आय पड़्यो तिण कारण ! जब घणों कष्ट हुवो शुद्ध जाब देवा असमर्थ। ❀

: ९२ :

पींपार नों वासी चोथजी वोहरो पाली मे दुकान माडी। चोमासो उतर्‌या स्वामीजी तिण रो कपडो लेवा गया। दोय वासती वहिराय पूछा कीधी—हूँ थानें असाध सरधूं। थानैं वासती दीधी मोनें काइ हुवो ? जद स्वामीजी बोल्या : किण ही खाधी तो मिश्री नै जाण्यो जहर तो ऊ मरै के न मरै ? जद ऊ बोल्यो : न मरै। उणरो गुण मारवारो नहीं। तिम म्है साध। त्यानें तुमें असाध जाण नें वहिरायो तो थारै जाणपणा री खामी, पिण साधा नें वहिरायां धर्म छै। ❀

: ९३ :

स्वामीजी अमरसींगजी रे स्थानक गया। मांटे खेजड़ी नो रूंख देखी स्वामीजी बोल्या : रात्री में लघु परठता हुस्यो जद इणरी दया किम रहै ? तब त्यारो साधु स्वामीजी री कूट काढने बोल्यो। जद स्वामीजी बोल्या : आ कूट काढवा री चांचणी थारे मनसूं उपजी कै गुरां सीखी ? जद अमरसींगजी चेला नें निहेड्यो। स्वामीजी नें बोल्या: ओ तो मूरख छै थें मनमें कांइ आणज्यो मती। ❀

: ९४ :

गुमानजी रो चेलो रतनजी बोल्यो हूँ भीखणजी सूँ चरचा करूं। जद गुमानजी बोल्या : म्है पिण भीखणजी सूँ चरचा करतां संकां छा। सो थांरी कांइ आसंग? जद रतनजी पूछ्यो—क्यूं सको? जद गुमानजी बोल्या : भीखणजी सूँ चरचा करतां तिणरो जाब पकड़ उणरी जोडकर ग्रहस्थ ने सीखायने गाम २ में खराबी कर देवै। तिण कारण भीखणजी सूँ चरचा करता संका। ❀

: ९५ :

पाली में स्वामीजी चोमासो कीधो जद बावेचा हाटरा धणी नें कह्यो : तोनै भाडो द्यां तूं हाट म्हानै दे। जद हाट रो धणी बोल्यो : अबारूं तो स्वामीजी उतर्‍यां है, सो आखी पेडी रुपिया सूं जड़ देवो तो ही न द्यूं। स्वामीजी विहार किया पछै भलाइ लीज्यो। पछै बावेचा जेठमलजी हाकम कनैं जाय कूँचींया न्हाखी। कह्यो—के तो भीखणजी रहसी के म्है रहस्यां। जद हाकम बोल्यो : इसो अन्याय तो म्है नहीं करां। बसती में वेश्या कसाई पिण रहै त्यां नें पिण न काढा। तो भीषणजी नें किम काढां, हाकम दृष्टान्त दियो—विजयसिंहजी रो राज है मोती बालदियो। तिणरे लाख बलद तिण सूँ लखी बालदियो बाजतो। ते लूण लेवा मारवाड़ आवतो। जद जाटां रा खेत भेलै। जद जाटां विजयसिंहजी कनै पुकार करी। राजाजी बालदिये नें कह्यो—जाटा रा खेत भेलो मती। जद मोती बोल्यो : म्है तो आवसूँ जद यूँ ही होसी। राजाजी कह्यो : यूं ही होवै तो म्हारे देश में आयो मती। म्हारै लूंण है तो दूजा बालदिया घणाइ आवसी। अन्याय तो करवा देवां नहीं। तिम हिज जेठमलजी कह्यो थे—जास्यो तो ओर व्यापारी आण वसासा पिण साधा नें काढा इसो अन्याय म्है करा नहीं। जद बावेचां कूचियां लेइ आप आपरे घर गया। ओर कोइ उपाय नहीं मिल्यो। जब ब्राह्मणानें कह्यो : थांने दान देवां तिणमें भीपणजी पाप कहैछै। सो म्है तो अब दान देवां नहीं। जद ब्राह्मणा स्वामीजीनें आय कह्यो : म्हाने दियां आप पाप कहो सो बावेचां म्हांने देवे

नहीं। जद स्वामीजी कह्यो : थांनै बावेचा पांच रुपइया देवै तो पिण म्हांरै नां कहिवारा त्याग है। जद ब्राह्मण बावेचा नें जाय कह्यो : बापूजी पांच रुपइया रो हुकम कियो है। इम सुण बावेचा घणां फीटा पड्या। तो पिण स्वामीजी रात्रि में बखाण बाचै जठै बावेचा ढोलक बजावै। गावै। बखाण में विघ्न पाड़ै। जद भायां कह्यो : महाराज! दूजी जायगाँ उतरो : स्वामीजी बोल्या : खेतसीजी नव दिक्षित है सो देखा परीषह खमवा किसायक सेंठा है। कितरायक दिनां वेदो कियो पछै बावेचा लातर गया। पर्यूषणां में इंद्रध्वज काढ्यो। स्वामीजी रा मूंढा आगै घणी वेलां ऊभा रही गावै बजावै तान करै। जद केइ श्रावक बावेचा सूँ वेदो करवा लागा जद स्वामीजी कह्यो : वेदो मत करो। याने रोको मति कारण ए प्रतिमा ने भगवान न माने है सो के तो भगवान कनै करै अनै के भगवान रा साधां कनै करै। जद बावेचा बोल्या एतो समी समी विचारै। इम कही चालता रह्या। ॐ

: ९६ :

नाड़ोलाइ रो सोभाचन्द सेवग तिणनं बावेचा कह्यो : भीखणजी खैरवे है सो त्यांरा अवर्णवाद विश्वर जोड। सतरै प्रकार नीं पूजा रचे है तिण माहीं सूँ तोने दश वीश रुपया देश्यां। जद सोभाचन्द बोल्यो : भीखणजी सूं बात करनैं पछै विश्वर जोडसूं। इम कही खैरवै आयो। स्वामीजी नें वंदना कीधी। स्वामीजी बोल्या : थारो नाम सोभाचन्द ? जद ते बोल्यो : हां महाराज। वली स्वामीजी पूछ्यो : तूँ रोडीदास सेवग रो बेटो ? ते बोल्यो : हा महाराज। पछै सोभाचन्द बोल्यो : आप भगवान नें ऊत्थापा हो ए बात आछी न कीधी। जद स्वामी बोल्या : म्हे तो भगवान रा वचनां सूँ घर छोड साधपणो लियों सो म्हे भगवान नें क्याने उथापां। वले सोभाचन्द बोल्यो : आप देहरो उथापो। जद स्वामीजी बोल्या : देवल रो तो हजारां मण पत्थर हुवै। म्हे तो सेर दाय सेरड क्यांने ऊथापां। जद ते बोल्यो : आप प्रतिमा ऊथापी प्रतिमां नें पत्थर कहो। जद स्वामीजी बोल्या म्हे तो प्रतिमां नें क्यां न ऊथापा। म्हारै झूठ बोलवा रा त्याग है। सो मैं तो सोनां री प्रतिमा नें सोना री, रूपा री नें रूपा री, सर्वधात री प्रतिमां ने सर्वधात री कहा। पाषाण री प्रतिमां ने

पाषाण री कहां। इम सुण सोभाचन्द घणो हरख्यो। ओ हो इसा पुरुषां रा हूं अवगुण किम बोलूँ। इसा पुरुषां रा तो गुण करणा चाहिजै। इम विचार दोय छंद जोड़्या। स्वामीजी नें सुणाय बंदनां कर पाछो आयो। वावेचां पूछ्यो छंद जोड़्या के ? सोभाचन्द बोल्यो : हा जोड्या। बस इम सुण उण सेवग नें साथे लेइ स्वामीजी रा श्रावका कने आय बोल्या : ओ सोभाचन्द सेवग निरापेक्षी है। भीखणजी नें जाणै जिसा कहसी। कहै भाइ भीखनजी किसायक है। जद सोभाचन्द बोल्यो : कांइ कहिवावो उणांरी श्रद्धा उणां कनैं आपारी श्रद्धा आपा कनै है। तो पिण वावेचां मानें नहीं बोल्या : तूँ कह। पछै सोभाचन्द बोल्यो : भीषणजी में गुण अवगुण मौनें दरसै जिसा कहसूँ। जद वावेचा फेर बोल्या : तो नें दरसे जिसाइ कहै। जद सोभाचन्द छद जोड़्या तिका कहिवा लागो। ❋

छन्द

अनभय कथणी रहिणो करणी अति आठुंइ कर्म जोपै अधिकारी।
गुणवंत अनंत सिद्धंत कला गुण प्राक्रम पौंहोच विद्या पुण भारी।
शास्त्र सार बतीस जाणै सहु केवल ज्ञानी का गुण उपकारी।
पंचइ द्री कूं जीत न मानत पाखंड साध मुनिंद बड़ा सतधारी।
साधवा मुक्तिका वास बन्दा सहु भिक्खम स्वाम सिद्धत है भारी।
स्वामी पर भाव के साधन साच है बाचै है सूत्रकला विस्तारी।
तेरा ही पंथ साचा त्रिऊं लोक में नाग सुरेन्द्र नमैं नरनारी।
सुणि बात है साच सिद्धंतसु ज्ञान की बोहत गुणी करणी बलिहारी।
पृथवी के तारक पचमें आरमें भीषण स्वामी का मारग भारी ॥२॥

इम सुण वावेचा तो सरक गया। अनै स्वामीजी रा श्रावक राजी होय बीस पच्चीस रुपइया आसरे दिया। ❋

: ९७ :

स्वामीजी कनें देहरापंथी आयनें बोल्या : थानें नदी उतर्‌या मे धर्म है तो म्हे फूल चढ़ावा तिणमें पिण धर्म। जद स्वामीजी बोल्या : एक कानीं नदी कड़ियां ताइं अनै एक कानीं गोड़ा सुधी। एक कानीं सुकी तो म्हे सुकी

दृष्टान्त : ९८-९९-१००

ऊतरां। पिण घणा पांणीवाली २।४ कोस री अवलाई सूंइ टलै तो टालां।
अनै थें फूल चढ़ावौ सो एक तो सूका फूल पड्या है। एक २।३ दिनारा
कुमलाया फूल है। एक काची कलियां है थे किसा चढ़ावौ? जद उवे बोल्या :
म्है तो काची कलिया नखा सूँ चूंटी चूंटी चढावा। जद स्वामीजी बोल्या :
थांरा परिणाम तो जीव मारवा रा अनै म्हारा परिणाम दया पालवा रा।
इण न्याय नदी ऊपरै फूलां रो दृष्टान्त न मिलै।

: ९८ :

किणही पूछ्यो भीषणजी थे ओर टोला वाला नें असाध सरधो तौ
थांने रुघनाथजी रा साध, ए जैमलजी रा साध यूँ क्यूं कहो। जद स्वामीजी
बोल्या : कोइरैं किरियावर थया गाम मे नेहता फेरे। जद कहै अमकडीया
रै नैंहतो खेमांसाह रे घर रो। अमकड़िया रै नैंहतो पेमासाह रा घर रो।
अनै त्या दिवालो काढ्यो हुवं तोही साह बाजै। ज्यूं साधूपणो न पालै अनै
साधू रो नाम धरावे तो ते द्रव्य निक्षेपा रे लेखै साधइ बाजै।

: ९९ :

किणही पूछ्यो एतला टोला है ज्या में साध कुण अनै असाध कुण?
जद स्वामीजी बोल्या : कोइनैं आंख्या न सूझै तिण पूछ्यो सहर में नागा
किता अनै ढकियाकिता? जद वैद्य बोल्यो : आख्या मे औषध घाल नैं
सूझतो तो हूं कर देऊ अनें नागा ढकिया तूं देखले। ज्यूं ओलखणा तो म्हे
बताय द्या नें साध असाध तूं देखलै। पहिलां नामलेइ असाध कह्या।
आगलो कजियो करै। तिणसूं ज्ञान तो म्हे बताय द्या पछै किमत तूं
करलै।

: १०० :

वलि किणही पूछ्यो थांमे साध कुण अनै असाध कुण? जद स्वामीजी
बोल्या : किणही पूछ्यो सहर में साहुकार कुण दिवाल्यो कुण? लेयनै पाछो
देवै तो साहुकार। लेयनै पाछो न देवै मांग्यां झगडो करै ते दिवाल्यो।
ज्यूं पांच महाव्रत लेयनै चोखा पालै ते साध अनै न पालै ते असाध।

: १०१ :

कोइ बोल्यो अणुकम्पा आणनें काचोपाणी पाया पुन्य है कारण उणरा जीव बचावारा परिणाम चोखा है। पाणी रा जीव हणवारा भाव नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : कोइ कटारी सूं किणही ने मारवा लागो। जद ते बोल्यो : मौनें मार मती। जद ते आदमी बोल्यो : म्हारा तोने मारवा रा भाव नहीं। हूँ तो कटारी नीं कीमत करूं छूं। आ कटारी किसियक वहणी छै। जद ते बोल्यो : बूडी थांरी कीमत म्हारी तो ज्यान जावै छै। ज्यूं जीव खवायां परीणाम चोखा कहै त्यारी श्रद्धा खोटी। ❀

: १०२ :

.......रे ठिकाणैं स्वामीजी पूछ्यो : थें कितरी मूरत्या छो। जद उणा कह्यो : म्हे इतरी मूरत्यां छा। स्वामीजी ठिकाणै पधारया पछै उणा नें किणही कह्यो : थाने तो भीखणजी भगत कीधा। जद ऊ स्वामीजी कनें आय पूछ्यो थे कितरी मूरत्यां छो। जद स्वामीजी बोल्या : ऊ तो अवसर उण वेला इज थो म्हे तो इतरा साध छा। ❀

: १०३ :

स्वामीजी घर में थका दिशा गया। तिहा सोजत रा महाजना रो साथ थयो। पाछा आया जद ते तो लोटिया ने बार-बार माजै काचो पाणी सू घणो धौवै। अनै बोल्यो : भीखणजी थेंइ माजो। जद स्वामीजी बोल्या : हुं तो लोटिया में न गयो हूँ तो दिशा दूर गयो। जद ऊ बोल्यो : हुं किस्यो लोटिया मे गयो। जद स्वामीजी बोल्या : तो इतरो क्यूं मांजो। ते बोल्यो : लोटियो कनै हुंतो। स्वामीजी बोल्या : थारो मूंढो माथो पिण कने हूंतो इण ने रगड़ो कै नहीं ? ❀

: १०४ :

.........कहै भीखणजी घर में थकां भाई भाई न्यारा हुवा जद ऊंखल में घाल थाली भांग ने आधो आध कीधी। जिणरो प्रश्न हेमजी स्वामी

पूछ्यो। घर में थकां थाली भागी कहै सो वात साची के झूठी। जद स्वामीजी बोल्या : इसा म्है भोला नहीं सो पहिलांइ रुपीया रो पूण करां। म्है तो ओ काम नहीं कियो। अनैं रुघनाथजी रा गुरु बुदरजी तो घर मे थका ऊंट हीज मास्यो। खरवार लेइ आवता धाड़ आइ। जद जाण्यो कपडो इ लेजासी अनैं ऊंट इ लेजासी। इम विचार तरवार सूं ऊंटनीं फींचा काटी मार न्हांख्यो। गृहस्थपणां री कांइ वात ? वाकी म्है तो घर मे छतां थाली भागी नहीं। ❀

: १०५ :

स्वामीजी घर मे छता सासरे जीमवा गया। लुगाया गाल्या गावा लागी। ओ कुण कालोजी कावरो इम गावै। जद स्वामीजी वोल्या : थें खोड़ा आधा नें तो चोखो वतावो अनै मोनै ऊंधी वोलो। स्वामीजी रो सालो खोडो हुंतो तिणसूं स्वामीजी कह्यो थें खोटाने तो चोखो कहो अनैं चोखानें खोटो कहो। इम कही विना जिम्या भूखाइ उठ गया। घर मे थका झूठ नीं चिड़ हुंती सो झूठ न सुहावतो।

: १०६ :

घर मे छता कंटालिया मे कोइ रो गहणो चोर ले गयो। जद चोर नदी सूं आधा कुम्भार ने वोलायो। कुम्भार रे डील में देवता आवतो तिणसूं तेहने गहणो वतावा वुलायो। कुंम्भार स्वामीजी नें पूछ्यो : भीखणजी अठै किण रो भर्म धरै। जद स्वामीजी इण रो ठागो उघाड़ करवा कह्यो : भर्म तो मजन्या रो धरै है। हिवै रात्रि आधे कुंम्भार देवता डील अणायो। घणां लोक देखतां छाका करै। न्हाखदे रे ?। जद लोक वोल्या : नाम वतावो। जद वोल्यो ओ-ओ-ओ—मजन्यो रे मजन्यो गहणो मजन्ये लियो। जद अतीत घोटो लेइ ने वछ्यो। मजन्यो तो म्हारा वकरा रो नाम है, म्हारै वकरे रे माथै चोरी देवो। जद लोकां ठागो जाण्यो। स्वामीजी लोका नें कह्यो : थे सुझता नो गहणो गमायो अनें आंधा कनां सूं कढावो सो गहणो कठासूं आसी ? ❀

: १०७ :

भीखणजी स्वामी नें घर में छतां वैराग आयो। जद कैरां रो ओसावण ताबारा लोटिया में घालनें ठामां री बंडेल में मेलयो। घणी वेलां सूँ पीवतां कष्ट घणों हुवो। तिवारे विचास्यो साधपणो दोहरो घणों। वले विचास्यो इसो दोहरो जद मुक्ति मिलै। नवो साधपणो लिया पछै इकावनां रे आसरै हेमजी स्वामी ने स्वामीजी कह्यो : इसो जाण नै साधपणो लियो। पिण इसो पाणी पीवारो कदेइ काम पस्यो दीसै नहीं। जद हेमजी स्वामी बोल्या : इसा वैराग सू आप घर छोड़यो जद उणा में किसैं लेखै रहो। ❀

: १०८ :

टोलावाला मांही थी नीकलिया जद रुघनाथजी कह्यो। भीखणजी अबारू पाचमो आरो है दोय घड़ी चोखो साधपणो पालै तो केवल ज्ञान पामैं। जद स्वामीजी बोल्या · यूँ केवल ज्ञान उपजै तो दोय घड़ी तो नाक भींच ने इ वेठा रहां। वलि प्रभव स्वामीजी आदि पंचमां आरा में हुंता त्यां चोखो साधपणो न पाल्यो काइ? ❀

: १०९ :

रुघनाथजी रा टोला माहीं निकल्या जद रुघनाथजी आंख्या में आंसू काढवा लागा। जद स्वामीजी विचास्यो—घर छोड़तां यां विचै तो म्हारी मा घणी रोइ हुंती। इम विचार नैं छोड़ दीधा। ❀

: ११० :

गुणसठै रा साल चवदे साधां सूँ तथा चवदै आर्यां सूं देवगढ़ में भीखणजी स्वामी विराज्या हुंता, तिहां तीन ··· आय बोल्या : भीषणजी म्हैं तीन जणां त्यानेइ पूरो आहार नहीं मिल्यो, तो थानें इतरा ठाणां नै आहार किण रीते मिलै। जद स्वामीजी वोल्या : द्वारका में हजारा साधां नैं आहार पाणी मिलतो थो अने ढंढण रे अंतराय सो एकलानें ई कठिण।

: १११ :

घर में छतां रजपूत ने साथै वोलावो लेइ किणही गाम जातां रजपूत वोल्यो : तमाखू विना आघो हाली जै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : ठाकरां आगै चालो दिन थोड़ो है। रजपूत बोल्यो : तमाखू विनां अबे तो हाली जै नहीं। जद स्वामीजी पाछै रही नै आरणिये छाणै ने नान्हो बांटी पुड़ी बाधनै कह्यो : ठाकरां तमाखू चोखी तो है नहीं इसड़ी है। जद तिण रजपूत चिवठी भरनें सूंघी अनै वोल्यो : ठीक इज है। जद स्वामीजी पुडी उणनै सूंपी। इसी चतुराइ करनें कुशलै ठिकाणै आया। ❀

: ११२ :

सिरयारी में स्वामीजी चोमासो कीधो। विजैसिंहजी नाथदुवारै आवतां वर्षा रा जोग सूं सिरयारी में रह्या। मुसद्दी स्वामीजी रा दर्शण करवा आया। प्रश्न पूछवा लागा – पहली कूकड़ी हुइ के अंडो। पहली घण हुवो के अहिरण। पहिला वाप हुवो के बेटो। इत्यादिक अनेक प्रश्ना रा जवाव स्वामीजी दिया युक्ति सहित। जद मुसद्दी राजी होय बोल्या : एह प्रश्न घणी जगांइ पूछ्या पिण इसा जाव किणही दीधा नहीं। आपारी बुद्धी तो इसी है किणही राजा रा मुसद्दी थया हुंता तो घणा देशा रो राज एक घरे करता इसी आपरी बुद्धी है। जद स्वामीजी बोल्या : पछै ऊ जाय कठै। मुसद्दी वोल्या : जाय तो नरक में। जद स्वामीजी बोल्या :

> बुद्धी जिणारी जाणीयै। जे सेवै जिन धर्म।
> और बुद्धी किण काम री। सो पडिया बांधै कर्म॥

जिण बुद्धी फेलायां नरक मे पडै ते बुद्धी किण कामरी जद मुसद्दी घणां राजी हुवा। ❀

: ११३ :

जोधपुर में स्वामीजी पधास्या। जद·· भेला होय चरचा करवा आया। ऊंधी अंवली चरचा करवा लागा। जीव वचायां कांइ हुवै? विजयसिंहजी पडहो फेरायो तेहनों कांइ थयो? इत्यादिक राज में टोटी लगावा लागा जद स्वामीजी बोल्या : सूत्र में किसनजी री नरक गति कही। इत्यादिक सर्व चरचा सूत्र खोलने राजाजी धर्त करी जद लाजर गया। ❀

: १०७ :

भीखणजी स्वामी नें घर में छतां वैराग आयो। जद कैरां रो ओसावण ताबारा लोटिया में घालनें ठामां री बंडेल में मेलयो। घणी वेलां सूँ पीवतां कष्ट घणों हुवो। तिवारे विचार्यो साधपणो दोहरो घणों। वले विचार्यो इसो दोहरो जद मुक्ति मिलै। नवो साधपणो लियां पछै इकावना रे आसरै हेमजी स्वामी नें स्वामीजी कह्यो : इसो जाण नै साधपणो लियो। पिण इसो पाणी पीवारो कदेइ काम पर्यो दीसै नहीं। जद हेमजी स्वामी बोल्या : इसा वैराग सू आप घर छोड़्यो जद उणा में किसैं लेखै रहो। ❀

: १०८ :

टोलावाला मांही थी नीकलिया जद रुघनाथजी कह्यो। भीखणजी अबारूं पाचमो आरो है दोय घड़ी चोखो साधपणो पालै तो केवल ज्ञान पामैं। जद स्वामीजी बोल्या : यूँ केवल ज्ञान उपजै तो दोय घड़ी तो नाक भींच ने इ बेठा रहां। वलि प्रभव स्वामीजी आदि पंचमां आरा में हुँता त्यां चोखो साधपणो न पाल्यो काइ? ❀

: १०९ :

रुघनाथजी रा टोला माहीं निकल्या जद रुघनाथजी आंख्या में आंसू काढवा लागा। जद स्वामीजी विचार्यो—घर छोड़तां यां विचै तो म्हारी मा घणी रोइ हुँती। इम विचार नैं छोड़ दीधा। ❀

: ११० :

गुणसठै रा साल चवदे साधां सूँ तथा चवदै आर्यां सूं देवगढ़ में भीखणजी स्वामी विराज्या हुँता, तिहा तीन ··· आय बोल्या : भीषणजी म्हे तीन जणां त्यानेइ पूरो आहार नहीं मिल्यो, तो थानैं इतरा ठाणां नै आहार किण रीते मिलै। जद स्वामीजी वोल्या : द्वारका में हजारां साधां नैं आहार पाणी मिलतो थो अने ढंढण रे अंतराय सो एकलानें ई कठिण।

: १११ :

घर में छतां रजपूत ने साथै बोलावो लेइ किणही गाम जातां रजपूत बोल्यो : तमाखू बिना आघो हाली जै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : ठाकरां आगै चालो दिन थोड़ो है। रजपूत बोल्यो : तमाखू बिनां अबे तो हाली जै नहीं। जद स्वामीजी पाछै रही नै आरणिये छाणै ने नान्हो बांटी पुड़ी बांधनै कह्यो : ठाकरां तमाखू चोखी तो है नहीं इसड़ी है। जद तिण रजपूत चिवठी भरनें सूंघी अनै बोल्यो : ठीक इज है। जद स्वामीजी पुड़ी उणनै सूंपी। इसी चतुराइ करनें कुशलै ठिकाणै आया। ❀

: ११२ :

सिरयारी में स्वामीजी चोमासो कीधो। विजैसिंहजी नाथदुवारै आवतां वर्षा रा जोग सूं सिरयारी मे रह्या। मुसद्दी स्वामीजी रा दर्शण करवा आया। प्रश्न पूछवा लागा – पहली कूकड़ी हुइ के अंडो। पहली घण हुवो के अहिरण। पहिलां बाप हुवो के बेटो। इत्यादिक अनेक प्रश्नां रा जवाब स्वामीजी दिया युक्ति सहित। जद मुसद्दी राजी होय बोल्या : एह प्रश्न घणी जगांइ पूछ्या पिण इसा जाब किणही दीधा नहीं। आपारी बुद्धी तो इसी है किणही राजा रा मुसद्दी थया हुंता तो घणा देशा रो राज एक घरे करता इसी आपरी बुद्धी है। जद स्वामीजी बोल्या : पछै ऊ जाय कठै। मुसद्दी बोल्या : जाय तो नरक में। जद स्वामीजी बोल्या :

बुद्धी जिणारी जाणीयै। जे सेवै जिन धर्म।
ओर बुद्धी किण काम री। सो पड़िया बांधै कर्म॥

जिण बुद्धी फंलाया नरक मे पड़े ते बुद्धी किण कामरी जब मुसद्दी घणां राजी हुवा। ❀

: ११३ :

जोधपुर में स्वामीजी पधार्‌या। जद भेला होय चरचा करवा आया। ऊंधी अंवली चरचा करवा लागा। जीव बचायां काइ हुवै ? विजयसिंहजी पड़हो फेरायो तेहनों कांइ थयो ? इत्यादिक राज में चोटी लगावा लागा जद स्वामीजी बोल्या : सूत्र में किस्नजी री नरक गति कही। इत्यादिक सर्व चरचा सूत्र खोल्नें राजाजी कनें करी जब लातर गया। ❀

: ११४ :

रुघनाथजी स्वामीजीनें पूछ्यो विजयसिंह जी पड़हो फेरायो, तालाव कूवां पर गलना नखाया। दीवां पर ढाकणां दिराया, बूढ़ा मा बापरी चाकरी करणी, इत्यादिक कार्यों मे राजाजी नं कांइ हुवो। जद स्वामीजी बोल्या : राजाजी समदृष्टि है के मिथ्यात्वी? इम पूछयां जाव देवा असमर्थ थया। ❀

: ११५ :

किणही कह्यो : भीखण जी थे अनै......एक होय जावो। जब स्वामीजी बोल्या : महाजन, कुंभार, जाट, गूजर, सर्व एक थावो के नहीं? जद ऊ बोल्यो : म्हैं तो एक न थावां। यांरी जाति इज ओर है। जद स्वामीजी बोल्या ए पिण मूलगा मित्थात्वी है। गाजीखां मूल्लाखां रा साथी है। त्यां पूछ्यो गाजीखां मूल्लाखा कुण थया। जद स्वामीजी कह्यो : एक ब्राह्मण-ब्राह्मणी प्रदेश गया। त्या ब्राह्मण माल मोकलो कमायो। केतले एक काले ब्राह्मण आऊखो पूरो कीधो। जद ब्राह्मणी, पठाण रा धर में पेठी। दोय पुत्र थया। एकण रो नाम गाजीखा, दूजारो नाम मूल्लाखा दियो। केतले एक कालै पठाण पिण काल कर गयो। जद ब्राह्मणी सर्व धन पुत्र लेई देश आइ। माल देखनें घणा न्यातिला भेला हुवा। कोइ भूवाजी कहै कोइ काकी कहै। हिवै ब्राह्मणी कहै डावडा नैं जनेउ द्यो। जिमणकर घणां ब्राह्मणां नें जिमाया जनेउ देवा पुत्रां ने हेलो पाड्यो – आवरे बेटा गाजीखां आवरे, बेटा मूल्लाखां। नाम सुण ब्राह्मण कोप कर बोल्या : हे पापणी! ए काइ नाम? ब्राह्मण रा नाम तो श्रीकृष्ण, रामकृष्ण, हरिकृष्ण, हरिलाल, कै रामलाल, श्रीधर इत्यादिक हुवै।। अनै एहतो मुसलमान रा नाम है। कटारी काढ नैं बोल्या : साच बोल ए किण रा पेट रा है। नहीं तो तोनें मारस्या। अनै म्हैइ मरस्या। जद आ बोली मारो मती। सर्व बात मांड नैं कही। एलो पठाण रै पेट रा है। जद ब्राह्मण बोल्या : हे पापणी। म्हानैं भ्रष्ट किया। अबै गंगाजी जाय स्नान पाणी रा लेपकरी शुद्ध थास्या। जद आ बोली : वीरा आं दोनूं डावड़ानेइ ले जावो अनै सुद्ध करो। सो फेर ब्रह्म भोजन करने जिमा सूँ। जद ब्राह्मण

बोल्या : एहतो पठाण रा पेट रा मूलकाइ असुद्ध छै सो सिद्ध किम हुवै। म्हे तो मूल का सुद्ध छा। थारो अन्न खाधो तिणसूं तीर्थ जाय सुद्ध थांस्या पिण मूलगा असुद्ध सुद्ध किम हुवै। भीखनजी स्वामी कह्यो : कोइ साध नें दोष लागां प्रायश्चित्त लेइ सुद्ध हुवै। पिण एतो मूलगा मिथ्यात्वी श्रद्धा ऊंधी गाजीखां मुल्लाखा रा साथी। ते सुद्ध किम हुवै। सुद्ध श्रद्धा आवै अनें पछै नवी दीक्षा रूप जन्म थया शुद्ध हुवै।

: ११६ :

किण ही पूछ्यो - भीखणजी ए पिण धोवण उन्हो पाणी पीवे साधु रो भेष राखे लोच करावे ए साधु क्यूं नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : ए वणी वणाइ ब्राह्मणी रा साथी है। ते वणी वणाइ ब्राह्मणी किम ? स्वामीजी बोल्याः एक मेरा रो गाम हो। जठे उत्तम घर नहीं। महाजन आवै सो दुख पावै। मेरा ने कह्यो : अठै उत्तम घर नहीं सो म्हे थानें लागत थां छां अनें अठे ऊत्तम घर बिना रोटी पाणी री अवखाइ पड़ै। जद मेरां सहर में जाय महाजना नें कह्यो : म्हारै गाम वसो थारो उपरसरो राखस्यां। पिण कोई आयो नहीं। जद एक ढेढा रो गुरु मुवो। तिणरी स्त्री गुरड़ी तिणनें मेरां ब्राह्मणी वणाइ। ब्राह्मणी जिसा कपड़ा पहराया। जायगां कराय तुलसी रो थाणो रोप्यो, जागा धवलकी। मेरणिया ब्राह्मणी जिसो घर कर दियो। दोय रुपिया रा गेहुं मेल्या अधेलीना मूंग, अनें एक रुपयां री घी मेल्यो। कह्यो महाजन आवै जिणा नें पइसा लेइ रोटिया कर घालयो कर। महाजन आवे ज्यां नें मेरा ते ब्राह्मणी नां घर बताय देवै। कैतले एक काले च्यार व्यापारी घणा कोशा रा थाका आया। मेरा ने कह्यो उत्तम घर बताओ जद ब्राह्मणी रो घर बतायो। व्यापारी आयने बोल्या : बाइ रोटियां करने घाल। जद ए गवारी जाड़ी रोटिया कर मांहि मुखड़ो घी घाल्यो। दाल करी तिणमें चरियां न्हाखी ते महाजन जीमनां बखाण करे। फलाणा गाम री रावण री। अमकड़िये सहर नी रावण देखी। पिण इसी चतुराइ कोइ देखी नहीं। स किसीक स्वाद हुई है। मांहि काचरियां घालने बहुत चोखी बणाइ है। द आ गोली बीरा काचरी रा स्वाद री तो तिखण मिली हुंती नो खबर हुती। जद अ बोल्या : तीखण कांइ। जद आ बोली : काचरिया घंटाक्याने

छुरी न मिली। अ बोल्या : छुरी न मिली तो किण सूं वंदारी? जद आ बोली : दाता सूं वनाखी न्हानें है। जद ए बोल्या : हे पापणी म्हानैं भिष्ट किया। थाली पटकवा लगा। जद आ बोली : रे वीरा थाली मती भागज्यो अमकड़िये डूमनी मागनै आणी है। व्यापारी बोल्या : तुं जातरी कण है। जद आ बोली रे वीरां हूँ वणी वणाइ ब्राह्मणी छूँ। जात री तो गुरडी छूं। अनै मेरां मोनें ब्राह्मणी वणाइ छै। मांडनै सारी बात कही। भीखणजी स्वामी बोल्या : तिम ए धोवण उन्हो पाणी पीवै पिण समकित चरित्र रहित तिण सू वणी वणाइ ब्राह्मणी रा साथी है। ❀

: ११७ :

अमरसिंहजी रे जीतमलजी हेमजी स्वामी नें कह्यो : हेमजी सोजत में भीखणजी चोमासो कीधो। तिहां नजीक अमरसिंहजी रा साधा पिण चोमासो कियो हुंतो। सो लागतै चोमासै तो मिश्रवालां नें उडावतानें इसो दृष्टांत दियो—अमरसिंहजी रा बड़ेरा रुघनाथजी जैमलजी रा वड़ेरा ने गुजरात मारवाड़ में आण्या। जद माहोंमाहिं गाढो हेत थो। दोय तीन पीढी ताइं तो हेत रह्यो। पछै रुघनाथजी जयमलजी कोहलोजी ए बूदरजी रा चेला सो अमरसिंहजी रा क्षेत्र जोधपुर आदि उरहा लिया। जद हेत रह्यो नहीं। ज्यूं एक साहुकार जिहाज में वैस समुद्र पार व्यापार करवा गयो। पाछो आवता कपड़े री मंजूस मे एक गर्भवती ऊँदरी आइ सो व्याई। साहुकार देखिनें वोल्यो इणनें समुद्र में नहीं न्हाखणी। जावता करै। पछै साहुकार पोता रे घरै आयो। थोड़ा दिना मे ऊंदरी रो परिवार बध्यो। जद ऊंदरी बोली : ओ साहुकार उपगारी है। सो इणरो आपा ने विगाड़ करणो नहीं। साहुकार पिण ऊंदरा ऊंदस्या ने दुख न दै। एक दोय पीढ्यां तांइ तो ऊंदरा ऊंदस्या विगाड़ कस्यो नहीं। पछै विगाड़ करवा लागा। साहुकार ना कपड़ा करंड़िया कुरटवा लागा। ज्यूं दो तीन पिढियां ताइ तो अमरसिंहजी रा साधां सूं हेत राख्यो। पछै अमरसिंहजी रा क्षेत्र दाबवा लागा। श्रावक श्राविका फारवा लागा। वैसते चौमासै तो ए दृष्टांत दीधो। तिणसूँ अमरसिंहजी वाला तो राजी रह्या। मिश्रवाला ने समझावा लागा। पछै उतरते चोमासै फतैचन्दजी गोटावत बोल्यो : भीखणजी मिश्रवाला ने

इज निषेधो पिण ए पुन्यवाला नेड़ा बेठा त्यां ने क्यूं नहीं निषेधो। जद स्वामीजी बोल्या : एक जाट खेती वाइ। जवार घणी नीपनीं। पाकी। च्यार चोर आय नें सिटा री गांठा बाधी। जाट देख उत्पात सूं विचार आय ने बोल्यो : थारी जाति काइ है ? एक जणो बोल्यो हूं तो रजपूत। दूजो बोल्यो : हूं साहुकार। तीजो बोल्यो : हूं ब्राह्मण। चोथो बोल्यो : हूं जाट छूं। जद जाट बोल्यो राजपूत नें—आप तो धणी हो सो लेखैं रो लेबो हो। महाजन बोहरो है सो ठीक। ब्राह्मण पुण्य रो लेवे सो ही ठीक। पिण ओ जाट किण लेखैं लेवै ? इण नें म्हारी मा कनें ओलंभो दिवावसूं। इम कहि गाठ पटक जवार मे ले जाय बांवलिया रै उणरी पाग सूं बांध दियो। फेर पाछो आयनें बोल्यो : म्हारी मा कह्यो है रजपूत तो लेखैं लेवैं धणी है। बाण्यो ते पिण ठीक बोहरो है। पिण ब्राह्मण किसै लेखैं लेवे ? ब्राह्मण तो दियो ले। विना दियो किम लें ? चाल म्हारी मा कनें। इम कही इणनें पिण पकड़ ले जाय नें बांवलिया रे बांध दीधो। फेर आय नें बोल्यो : रजपूत तो लेखं लेवैं पिण तूं बाण्यां किण लेखं ले। तूं किसै दिन मोनें धान दियो हो। अनें कद म्हारो बोहरो थयो। इम कहि ले जाय नें तीजै बांवलिया रे इण नें बांध दियो। फेर पाछो आय नें बोल्यो : ठाकरां धणी हुवे सो जाबता करै फै चोरया करैं। इम कहि इणनें इ पकड ले जायनें बाध दियो। रावले जाय नें पकड़ाय दिया। ❀

बुद्धि सूं च्यारा ने पकड़या माले रावल्यां। अनें एक साथै च्यारां सूं झगड़तो तो कद पूगतो। ज्यूं मिश्रवालां मांहि सूं तो केइ समझाया अनें पुन्यवालां री बारी। पछे पुन्य री श्रद्धा वाला नें निषेधवा लागा। इसा भीखणजी स्वामी कलावान। ❀

: ११८ :

किणही कह्यो : थांने असंजती ने दान देवारा त्याग करावो। जद स्वामीजी बोल्या : थें म्हारा वचन सरधिया प्रतीतिया रुचिया जिण सूं त्याग करो हो का म्हांनें भिड़ावानें त्याग करो हो। इम कहिनें चपट पतीजो। ❀

: ११९ :

पींपार मे एक जणै गुरु कीधा । तिण रा घर कां डरायो । कहै—पाछो जाय नें समकत दे आव । जद ते पाछो आय ने बोल्यो : थांरी समगत पाछी उरही ल्यो । सूस कराया ते पाछा उरहा ल्यो । जद स्वामीजी बोल्या : डाम-दियोड़ा पिण पाछा लैणी आवै है कै । ❀

: १२० :

पुर सू विहारकर भीलवाड़ै आवता मारग में हेमजी स्वामी खेद पाया । जद चन्द्रभाणजी चोधरी ने कह्यो : आज तो खेद वणी पामी । जद चन्द्रभाणजी चोधरी कह्यो—भीखणजी स्वामीजी कहिता था प्रदेशा मे छामना थया विना निर्जरा हुवै नहीं । ❀

: १२१ :

रिणिहि गॉम में जीवो मूंहतो नगजी भलकट ने कहै भाइजी । भीखणजी स्वामी कहिता था—धान माटी सरिखो लागै जद संथारो करणों वाकी आऊषो थोड़ो जाणी । जैसो आज आय वीती है पिण म्हासूं संथारो हुवै नहीं । इम करतां तिण हिज रात्रि आउखो पूरो कियो । ❀

: १२२ :

किणही पूछ्यो महाराज साधा रै असाता क्यूं हुवै । जद स्वामीजी बोल्या : किणहि भाठो उछाल नें हेठो माथो माड्यो अनै पछै भाठो उछा-लण रा त्याग किया तो आगै भाठो उछाल्यो ते तो लागै पछै सूँस किया तो पछै न लागें । ज्यूं आगै पाप कर्म वाध्या ते तो भोगवै पछै पापरा त्याग किया तिण रो दु:ख न पड़ै ।

: १२३ :

दामोजी सीहवा गाम रो वासी पाली मे भेषधारया रे थानक जाय भेष धारयां सूं चरचा कीधी । तिणमे केयक जाव तो दिया नें केयक जाव आया नहीं । पछै स्वामीजी नें कह्यो : चरचा कीधी पिण जाव पूरा आया नहीं । जद स्वामीजी वोल्या : दामा साह वोदी धूंणी नें दाय तीर लेइ

संग्राम माड्या किम जीते। तीरा रो भाथड़ो पूठे बाध जुद्ध किया जीते। ज्यूं भेषधार्‍यां सूँ चरचा करणी तो पक्का जाब सीखने करणी कच्चा जाब सूं न करणी। ❀

: १२४ :

किणही पूछ्यो—भीखणजी कोई बालक भाठा सूं कीड्या मारतो तिण रो भाठो खोसने दरहो लियो तिण ने काइ थयो। जद स्वामीजी बोल्या : उणरा हाथ मे काइ आयो। जद ऊ बोल्यो : उण रै हाथ मे भाठो आयो। जद स्वामीजी बोल्या : अबै थेंइ विचार लेवो। ❀

: १२५ :

पुर भीलवाड़ै बिचै स्वामीजी पधारता ढुंढार नीं तरफ रो एक भायो मिल्यो। तिण पूछ्यो आपरो नाम काइ ? जद स्वामीजी बोल्या : म्हारो नाम भीषण। जद ऊ बोल्यो : भीषणजी री महिमा तो घणी सुणी है सो आप एकला रूंख हेठै बेठा हो। म्हे तो जाण्यो साथै आडम्बर घणो हुसी। घोड़ा हाथी रथ पालखी प्रमुख घणो कारखानों हुसी। जद स्वामीजी बोल्या : इसो आडम्बर न राखा जद हिज महिमा है साधुरो मारग ओ हिज है। इम सुणने राजी हुवो। ❀

: १२६ :

काचो पाणी पाया पुण्य सरधे ते पुण्य री सरधावाला बोल्या : भीषणजी मिश्र री श्रद्धा घणी खोटी है। जद स्वामीजी बोल्या : किणरी १ फूटी किणरी २ फूटी। ज्यूँ या री तो एक फूटी है अने थारी दोनूं फूटी है। ❀

: १२७ :

रूपनाथजी वाला बोल्या : भीषणजी देखो जोधपुर मे जैमलजी वाला रे थानक आधाकर्मी आरम्भ घणो हुवो। जद स्वामीजी बोल्या : यां रे तो आरंभ थयो अनें थीजां रे आरंभ हुतो दीसे है। पन्ना रा पगा हुंता दिसे है। ❀

: १२८ :

किणहि पूछ्यो भीपणजी कोइ बकरा मारता ने बचायो तिण ने काइ थयो। जद स्वामीजी बोल्या : ज्ञान सूं समझाय नें हिंसा छोड़ाया तो धर्म छै। स्वामीजी दोय आंगुली ऊंची कर नें कह्यो—ओ तो रजपूत अनैं ओ बकरो यां दोयां मे बूड़े कुण। मरण वालो बूडे कै मारण वालो बूडै। नरक निगोद मे गोता कुण खासी। जद ऊ बोल्यो : मरण वालो बूडे। जद स्वामीजी बोल्या : साधू बूडता नें तारे राजपुत ने समझावै बकरा नें मांर्यां तूं गोता खासी। इम ज्ञान सूं समझायनैं हिंसा छोड़ावै ते मोक्ष रो मारग है। पिण साधू बकरा नों जीवणो वाछै नहीं। जिम एक साहुकार रै दोय बेटा एक तो करड़ी जागां रो ऋण माथै करै अनैं दूजौ करडी जागा रो ऋण ऊतारै। पिता किण नैं बरजै। ऋण माथै करै तिण नें बरजै पिण ऊतारै तिण नें न बरजै। ज्यूं साधू तो पिता समान है अनै रजपूत ने बकरा दोनूं पुत्र समान है। या दोया मे कर्म ऋण माथै कुण करै। अनै कर्म ऋण उतारै कुण। रजपूत तो कर्मरूप ऋण माथै करै है अनैं बकरा आगला कर्मरूप ऋण भोगवै उतारै है। साधू रजपूत नें बरजै तूं कर्मरूप ऋण माथै मतकर। ए कर्म बांध्या घणां गोता खासी। इम रजपूत ने समझायनें हिंसा छोड़ावै। ❀

: १२९ :

वलि संसार नां उपकार ऊपरै अनें मोक्ष ना उपकार ऊपरै स्वामीजी दृष्टांत दियो। किणही ने सर्प खाधो। गारडू झाड़ो देइ बचायो। जद ऊ पगा लागे बोल्यो इतरा दिन तो जीतब माइता रो दियो हुंतो। अने अबे आज सूं जीतब आपरो दियो। माता पिता बोल्या—थें म्हाने पुत्र दियो। बहिना बोली—थें म्हाने भाई दियो। स्त्री राजी हुइ—चूड़ो—चूनड़ी अमर रहसी सो आप रो प्रताप है। सगा सम्बन्धी राजी हुवा—आछो काम कीधो लाख रुपिया देवै ते बिचै ए उपकार मोटो। पिण ए उपकार संसार नों। हिवे मोक्ष नो उपकार कहै छै। किणहि नें सर्प खाधो उजाड़ मे तिहां साधु आया। जब ते कहै मोने सर्प खाधो झाड़ो देवो। जद साधु कहे : म्हांनै झाड़ो आवै तो है पिण देणो न कल्पै। जद ऊ बोल्यो :

मोनें ओखध बतावो। साधु बोल्या : ओषध जाणा छा पिण बतावणो नहीं। जद ऊ बोल्यो : थे यूँही मूंढो बाध्या फिरो छो क काइ था में करामात पिण है। जद साधु बोल्या : म्हामें करामात इसी है ज्यो म्हारो कह्यो माने तो किणहि भव में सर्प खावै नहीं। जद ऊ बोल्यो : जिका काइ बतावो। जद साधु बोल्या : सागारी संथारा करदै। इण उपसर्ग सूँ बच्यो जद तो बात न्यारी, जहीं तो च्यारूं इ आहार नां त्याग। इम सागारी संथारो कराय नवकार सिखायो च्यारू शरणां दीधा परिणाम चोखा रखाया। आऊखो पूरोकर देवता हुवो मोक्ष गामी हुवो। ओ उपकार मोक्ष नों ॐ

: १३० :

वलि संसार नां तथा मोक्ष नां मारग ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो · एक साहुकार रै दोय स्त्रीया एक तो रोवण रा त्याग किया धर्म में घणीं समझै। अनै एक जणी धर्म में समझै नहीं। केतले एक कालै प्रदेश मे भरतार काल कीधो। सुणने धर्म मे न समझै ते तो रोवै विलापात करै। समझै ते रोवै नहीं समता धारनें बेठी। लोग लुगाई घणा भेला हुवा। ते सर्व रोवै तिण नें सरावै—ए धन्य है पतिव्रता है। न रोवै तिण ने निंदै—आ पापणी तो मूओ इज वाछती थी। इण रे आंसूई आवै नहीं। अनै साधु किणनें सरावै। साधु तो न रोवै तिणनें सरावै। ए प्रत्यक्ष मोक्ष नो मारग न्यारो अने लोक रो मारग न्यारो। ॐ

: १३१ :

केइ कहै आज्ञा बारै धर्म जद स्वामीजी बोल्या : आज्ञा मांही धर्म तो भगवान परूप्यो। पिण आज्ञा बारै धर्म कहै ते किण रो परूप्यो। ज्यूँ किणही पूछ्यो : थारे माथै पाग ते कठा सूँ आइ। जद साहुकार हुवै ते तो पैंतो बतावै साईदार भरावै असकड़िये बजाज कनें लीधी असकड़िये रंग-रेज कनें रंगाइ। अनें चोरनें ल्यायो हुवै तिण सूं पैंतो बतावणी आवै नहीं थोडा में अटक जावै। ज्यूं आज्ञा बारै धर्म कहै तथा असत सेयाया धर्म कहै ते ठाम ठाम अटकै पैंतो पुगावणी आवै नहीं। ॐ

: १३२ :

कोइ स्वामीजी कनें चरचा करवा आयो। दान दया री व्रत अव्रत री चरचा करतां ठोड ठोड अटकै। अरड बरड बोलै। न्याय री एक चरचा छोड़ दूजी पूछै दूजी छोड़नै तीजी पूछै पिण प्रथम न्याय री चरचा ते पार पुगावै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : घर रो धणी खेत बाढे ते तो प्रांछ री प्रांछ उतारै। अनैं चोर आय पड़े तो बाटा बरड़ो करै। एक कठा सूं तोडै एक कठा सूं तोड़ै ज्यूं थे घर रा धणी होय न्याय री एक चरचा पार पूगाय दूजी करो। चोर जिम मत करो। ❁

: १३३ :

भेषधारी चरचा करतां आचार सरधा री न्याय री चरचा छोड़नें जीव बचावा रो वेदो घालै। जद स्वामीजी बोल्या : कुबदी चोर हुवै ते चौरी करनें लाय लगाय जावै। लोक तो लाय रे धन्धे लाग जावै ने आप माल लेय नें चाल तो रहै। ज्यूं आचार तो शुद्ध पालणी आवै नहीं तिणसूं आचार नी न्याय श्रद्धा री चरचा छोड़नै लोकां सूं लगावणी बातां करै। ए जीव वंचाया पाप कहै। दान दया उठाय दीधी। भगवान नें चूका कहै। इम लोकां नें लगावै पिण न्याय रा अर्थी नहीं। ❁

: १३४ :

कुमार्ग सुमार्ग ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो। भगवान रो मारग अनैं पाखंडिया रो मारग किम ओलखिये। भगवान रो मारग तो पातसाइ रस्ता जेहवो सो कठैइ अटकै नहीं। अनैं पाखिंड़ियां रो मारग ढांढा री ड़ाड़ी समान। थोड़ी ड़ाड़ी दिसै अनैं आगै उजाड। ज्यूं थोडो सो दान शीलादिक बताय नें पछै हिंसा मे धर्म बतावै। ❁

: १३५ :

केइ पाखडी इम कहै भीपणजी री इसी श्रद्धा बकरो बचाया पछै ऊ कूपलां खावै काचो पाणी पीवै अनेक आरंभ करै तिण रो पाप पाछै सूँ आवै। जद स्वामीजी बोल्या : म्हारै तो आ सरधा छै—असंयती नें बचाया

ऊ अनेक आरंभ करसी। तिण री अनुमोदनां रा पाप उण वेलाइज भगवान देख्यो जिनरो लाग चूको, अनें थें तपस्या रो धारणों कोइ नें करावो आगामी काल नीं तपस्या नो धर्म मोनें हुसी इम जाणनें धारणों करावो। जद थारे लेखे असंयती ने बचाया ऊ आरंभ करसी आगामी काल नो पिण पाप थानें लागसी थारी श्रद्धा रे लेखे। कारण धर्म आगामी काल नों पाछा सू आवे तो पाप पिण लागसी। अनें भगवते तो कह्यो : असंजती नें बचायां जितरो पाप ज्ञानी पुरुषां देख्यो तितरो उण वेलाइज लाग चूको। ❀

: १३६ :

किणही पूछ्यो थें कोइनें सूंस करावो ते सूंस परहा भांगे तो थानें पाप लागे। जद स्वामीजी बोल्या : किणही साहुकार सो रुपिया रो कपड़ो वेच्यो। नफो मोकलो थयो। लेणवाले एक-एक रा दो-दो कीधा तो उणरो नफो उण साहुकार रे आवे नहीं। तथा ऊ कपड़ो लेणवालो आगे जायनें सर्व कपड़ो बाल देवें तो तोटो उणरा घर में पड़े पिण साहुकार रे घर में नहीं। ज्यूं म्हें सूंस दिराया तिणनो नफो म्हानें हुं चूको आगलो सूंस चोखा पालसी तो नफो उणनें। अनें भांगसी तो पाप उणनें लागसी पिण म्हानें न लागे। ❀

: १३७ :

फेर स्वामीजी दृष्टांत दियो। किणहि दातार साधू नें घृत वहिरायो। साधू नेहराइ राखी। तिण घृत सूं अनेक कीड्यां मूइ तो पाप साधू नें लागो पिण दातार नें न लागो। अनें साधू ते घृत हरष सहित तपसी नें दीधो पोते न खाधो तिणरे तीर्थङ्कर गोत्र बंध्यो ते नफो साधू रे थयो। आप आपरा भाव प्रमाणें नफो हुवे। ❀

: १३८ :

किणही पूछ्यो असंजती जीव नें पोष्यां पाप कहो छो ते किण न्याय। जद स्वामीजी बोल्या : किणही रे रुपियां री नोली कड़िया बंधी देखनें चोर लारे न्हाठो। आगे तो साहुकार अनें लारे चोर न्हाठो जाय। इम न्हासतां चोर आखड़नें हेठो पड्यो जद किणही चोर नें अमल खवाय पाणी पायनें

सेंठो कियो। तो ते अमल खवावण वालो साहुकार रो वैरी जाणवो वैरी ने साझ दियो तिण कारण। ज्यूं छ काया रा हणवावाला नें पोखै ते छ काया रो वैरी जाणवो वैरी नें साझ दियो तिण माटै। ❀

: १३९ :

किणही खेत वायो। खेत पाको इतलै धणी रे बालो दुखणी आयो। जद किणही ओषध देइ सातरो कीधो। साजो हुवो जद खेत काट्यो। सहाज देणवाला नें पिण पाप लागो। ज्यूं पापी रे साता कीधा धर्म कठासूं। ❀

: १४० :

किणही राजा दश चौर पकड़्या। मारवारो हुकम दीधो। तिवारै एक साहुकार अरज कीधी। महाराज एक २ चौर ना पाच सौ २ रुपिया देऊं चौरां नें छौड़ो। राजा कह्यो : चोर दुष्ट घणां है सो छोड़वा योग्य नहीं। साहुकार फेर कह्यो नव नें तो छोड़ौ। तो पिण राजा मानै नहीं। इम साहुकार घणी अरज कीधी जद पाच सौ रुपइया लैयनै एक चौर ने छोड्यो। नगरी ना लोक साहुकार नें धन्य २ कहिवा लागा। गुण-ग्राम करै। वंदी छोडाय नें मोटो उपकार किधो। चोर पिण घणो राजी हुवो। साहजी म्हां सूं घणो उपकार कीधो। पछै चौर पोता रै ठिकाणै आय चोरा रै न्यातिला नें समाचार कह्या। ते सुणनें द्वेष चढ्या। ते चौर ओरा नें लेइ आयो। शहर रे दरवाजै चिठी बाधी : नव चौर मार्‌यां तिणरा इग्यारा गुणा निनाणवै मनुष्य मार्‌या पछै विष्टालो कर सूं। साहुकार नें न मारूं। साहुकार रा बेटा पोता सगा संबंध्या ने पिण न मारूं। पछै मनुष्य मारवा लागो। किणरोइ बेटो मार्‌यो, किणरो भाइ मार्‌यो, किणरो ही बाप मार्‌यो। शहर में भयंकार मंड्यो। नगरी ना लोक साहुकार नें निंदवा लागा। तिण रै घरै जाय रोवा लागा : रे पापी थारै धन घणो हुंतो तो कूवा में क्यूं नहीं न्हाख्यो। चोर छुडायनै म्हारा मनुष्य मराया। साहुकार लातरियो। शहर छौड़णै दूजै गाम जाय वस्यो। घणो दुखी थयो। जे लोक गुण करता तेहिज अवगुण करवा लागा। संसार नो उपकार इसो है। मोक्ष रो उपकार करै ते मोटो तिण में कोइ ज़ोखो नहीं। ❀

: १४१ :

सिरयारी में वोहरे खींवेसरे पूछ्यो : नरक में जीव जावै तिणनें ताणै कुण। जद स्वामीजी बोल्या : कूवा में पत्थर न्हाखै तिणनें खैंचनवालो कुण। भारे करी आफेइ तले जाय तिम जीव कर्म रूप भारे करी माठी गति मे जाय। ❀

: १४२ :

वलि वोहरै खींवेसरे पूछ्यो : जीव देवलोक में जावै तिण नें लेजावण वालो कुण। जद स्वामीजी बोल्या : लकड़ा नें पाणी में न्हाख्या ऊंचो आवै ते कुण ही ल्यावै नही पिण हलकापणा रा योग सूं तिरै। तिम जीव पिण कर्मं करी हलको थया देवगति मे जावै। ❀

: १४३ :

किणही पूछ्यो : जीव हलको किम हुवै, जद स्वामीजी बोल्या : पइसो पाणी मे मेल्या डूबै अनें उण ही पइसा नें ताप लगाय कूट २ नें वाटकी कीधी ते तिरै। उण वाटकी मे पइसो मेलै तो ते पइसो पिण तिरै। तिम जीव तप संयमादि करी आतमा हलकी कीधां तिरै। ❀

: १४४ :

कोइ साधा री निंदा करै अनै आप कुबद करनें अलगो रहै तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : किणही गाम में एक चुगल रहतो। सो एकदा फोजवाला आया ज्यानें लोकां रो धन धान बताय दियो। फोजवाला केयक तो गया अनै केयक गया नहीं। गाम रा लोक बारै न्हास गया था सो केयक पाछा आया। चुगल धन धान बतायारी बात सुणनें लोकां ओलंभो दीधो। अरे इसा काम करै। जब ते चुगल फौजवाला नें सुणायनें बोल्यो : हूँ बतावतो तो अमरसिया रो खोड़ो ऊंडो गड्यो ते बता देवतो, फलाणा रो खोड़ो ऊंडो गड्यो ते बता देवतो। इसो धन फलाणी जागा गड्यो ते पिण बता देवतो। इम कुबद करनें बाकी रह्या ते पिण बताय दीधा। तिम निंदक कुबद कर ते निंदा करतो झूठ बोलनें अलगो रहै। ❀

: १४५ :

केयक स्वामीजी नें कहिवा लागा : इसी सरधा तो कठेइ सुणी नहीं। थें दान दया उठाय दीधी। जद स्वामीजी बोल्या : पर्यूषणा में कोइनें आखा घालै नहीं आटो घालै नहीं। पर्यूषण धर्म रा दिना में ओ धर्म जाणै तो ओ दान देणों बंद क्यू कियो। आ बात तो घणा काल आगली है जद तो म्है हा ही नहीं फेर आ थाप किण कीधी। ❈

: १४६ :

केयक बोल्या : भीखणजी थारा श्रावक कोइनें दान देवै नहीं। इसी श्रद्धा थांरी है। जद स्वामीजी बोल्या : किणही शहर में च्यार बजाज री हाटा हुंती। तिणमें तीन तो विवाह गया। पाछै कपड़ादिक ना ग्राहक घणा आया। हिवै एक बजाज रह्यो ते राजी हुवै के वैराजी। जद ते बोल्या : राजी हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : थे कहो भीखणजी रा श्रावक दान नहीं देवै तो जे लेवाल ते सर्व थारे इज आसी। अनो थें कहो ते धर्म थानें इज हुवै, थे वेराजी क्यूँ थया। थें निंदा क्यूँ करो। इम कहि कष्ट कीधो। पाछो जाब देवा समर्थ नहीं। ❈

: १४७ :

स्वामीजी नवी दिक्षा लीधा पछै केतलैएक वर्से तीन जणिया दिक्षा लेवा त्यारी थइ। जद स्वामीजी बोल्या : थें तीन जणिया साथै दिक्षा लेवो अनैं कदाचित एकण रो वियोग पड़ जावै तो दोयां नें कल्पै नहीं सो पछै संलेखणा करणी पड़ै। थांरो मन हुवै तो दिक्षा लीज्यो। इम आरै कराय तीन जण्या नें साथै दीक्षा दीधी। पछै मोकली आर्या थइ पिण स्वामीजी री नीत ठेट सूं इसी तीखी हुंती। ❈

: १४८ :

दया उपर स्वामीजी तीन दृष्टात दिया—

चौर हिंसक ने कुसीलिया, यांरे ताइ हो साधा दियो उपदेश।
यानें सावद्य रा निरवद्य किया, एहवी छै हो जिन दया धर्म रेश।
भव जीवा तुमें जिन धर्म ओलखो ॥१॥

किणही सेथ्री नीं हाटे साधु उतस्या। रात्रे चौर आया। हाट खोली। साधु बोल्या : थें कुण हो। जब ते बोल्या : म्हें चौर छा। साहुकार हजार रुपइया री थेली माँहे मेली है सो म्हे परही ले जास्यां। जब साधा उपदेश दीधो : चौरी ना फल माठा है। आगे नरक निगोद ना दुख भोगवणा पड़सी। भिन्न २ करनें भेद बताया। ए धन खासी तो घर का सगला अनें दुख थानें भोगवणो पड़सी। इम समझायनें चौरी ना त्याग कराया। साधां रा गुणग्राम चोर करता थका प्रभात थयो। एतलें हाटरो धणी आयो। पेड़ी नें नमस्कार करी थोड़ो लटको साधा नेंइ कीधो। चौरां नें देखनें पूछ्यो : थें कुण हो। ते बोल्या : म्हे चोर छां। थें हुंड़ी वटायनें हजार रुपइया री थेली माय नें मेली, सो म्हें देखता हा। रात्रि में आय लेवा लागा। साधां म्हांनें देखनें उपदेश दे समझायानें चौरी ना त्याग कराया। सो या साधा रो भलो होइज्यो। म्हानें डूबता नें राख्या। सेम्सरी सुण ने साधा रे पगा पड़्यो, गुण गावा लागो। म्हारें हाटे आप भलांइ उतस्या। म्हारीं थेली राखी। एह धन चौर ले जावता तो म्हारा च्यार बेटा कुंवारा रहिता। अबे च्यारूंइ परहा परणावसूं। ते आपरो उपगार है। सेम्सरी इम कह्यो पिण साधू तिण रो धन राखवा उपदेश न दियो। चौरां नें तारवा उपदेश दियो।

बकरा नें मारणहार कसाइ हाथ में कत्ती साधां कनें आय ऊभो रह्यो जद साधां पूछ्यो : तूं कुण छै। जद ऊ बोल्यो : हूं कसाइ छूं। जद साधा पूछ्यो : थारे काइ किसब। जब ते बोल्यो : घरे बीस बकरा बध्या त्यारे गले कत्ती करनें बेचसूं। जद साधा उपदेश दियो : सेर धान खाणों पड़ै तिण रै अर्थे इसा पाप करै। जद कसाइ बोल्यो : मोनें तो भगवान कसाइ रे घरे मेल्यो है सो मोनें दोष नहीं। जद साध बोल्या : भगवान क्यानें मेलै। थे आगे माठा कर्म किया तिण सूं कसाइ रै कुल उपनो। वले इसा कर्म करै तो नरक में जाय पड़सी। इम भिन्न २ करनें समझायो। बकरा मारवा रा जावजीव पचखाण कराया। कसाइ बोल्यो : म्हारे घरै बीस बकरा बंध्या छै सो आप कहो तो सीलो चारो नीर अनें छाणो पाणी पाऊं। आप कहो तो [illegible] में [illegible] कटि नाखनें [illegible] में

छोड़ूं। आप कहो तो आपने आण सूंपूं। धोवण उन्हों पाणी पाज्यो। सूखो चारो न्हाखज्यो। साधा रो एवर न्यारो उछेरज्यो। जब साध बोल्या : थारे सूंसा रो जावतो कीजै। सूंस चोखा पालजै। इम सूंसा री भलावण देवे पिण बकरां री भलावण न देवै। कसाइ साधा रा गुण गावै : मौनै हिंसा छोड़ाइ तार्‌यो। बकरा जीवता बचिया ते पिण हरखित हुवा।

कोइ एक पुरुष पर स्त्री नो लंपट। ते साधा कने पर स्त्री गमन नो पाप सुणीने त्याग किया। घणो राजी होय साधा रा गुण गावै : आप मौनें डूबतानैं तार्‌यो। नरक जाता नें राख्यो। अनैं उवा स्त्री शील आदर्‌यो सुणनें उणरे कनें आयनें बोली : हूँ तो था उपर इकतार री धार बेठी थी सो मो सागै गृहवासो करो नहीं तो कूवा में जाय पड़सूं। जब तिण कह्यो : मोनें तो उत्तम पुरुषा पर स्त्री नो घणो पाप बतायो। तिण सूं म्हे त्याग कीधा। म्हारै तो था सूं काम नहीं। जब स्त्री क्रोध रे वस कूवा मे जाय पड़ी।

हिवै चोर समझ्या अनैं धन धणी रे रह्यो। कसाइ समज्यो अनैं बकरा बच्या। लंपट शील आदर्‌यो नें स्त्री कूवा में पड़ी। चौर कसाइ लंपट या तीना नें तारवानें उपदेश साधा दियो। आ तीनानें साधा तार्‌या। ए तीनूंइ तिर्‌या। तिण रो साधा नें धर्म थयो। अनैं धणी रो धन रह्यो बकरा जीवा बच्या तिण रो तो धर्म अनैं स्त्री कूवा मे पड़ी तिण रो पाप साध नें नहीं। केइ अज्ञानी कहे : जीव बच्या अनैं धन रह्यो तिण रो धर्म। तो उणरी श्रद्धा रे लेखै स्त्री मूइ तिण रो पाप पिण लागै। ❀

: १४९ :

किण ही कह्यो जीव बचिया ते धर्म। जद स्वामीजी बोल्या : कीड़ी नें कीड़ी जाणे सो ज्ञान के कीडी ज्ञान। जद ऊ बोल्यो : कीडी नें कीड़ी जाणे सो ज्ञान। कीड़ी नें कीड़ी सरधे सो सम्यक्त्व के कीड़ी सम्यक्त्व। जद ते बोल्यो : कीड़ी नें कीड़ी सरधे ते सम्यक्त्व। कीड़ी मारवा रा त्याग किया तिका दया के कीड़ी रही जिका दया। जद ऊ बोल्यो

कीडी रही तिका दया। जद स्वामीजी बोल्या : कीडी वायरा सूं उड गई तो दया उड़ गई, जद ऊ विमासी विचारनें बोल्यो : कीड़ी मारवा रा त्याग किया तिका दया पिण कीड़ी रही सो दया नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : यत्न दया रा करणा के कीडी रा करणा। जद ते बोल्यो : यत्न दया रा करणा। ❀

: १५० :

किण ही कह्यो सूत्र में साधू नें जीव राखणा कह्या। जद स्वामीजी बोल्या : ते ठीक ही छै। ज्यूँ रा ज्यूं राखणा किण ही नें दुख देणो नहीं। ❀

: १५१ :

×× रे श्रावकां रे पूरी पिछाण नहीं तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : कोइ भाड साधू नों रूप वणायनें आयो। तिण नें पूछै थें किण टोला रा। जद तिण कह्यो म्हें डूंगरनाथजी रै टोलै रा। थारो नाम कांइ। कहै म्हारो नाम पत्थरनाथ। काइ भणिया हो। तब ते कहै भणियो तो कांइ नहीं पिण बाइसटोला चोखा नें तेरापंथी खोटा या जाणूं छूं। जद थें मोटा पुरुष मत्थेन वंदामि तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं इम कहि वांद्यो। इसा अजाण है पिण न्याय निरणो नहीं। ❀

: १५२ :

स्वामीजी वांचतां एक जणो आय बोल्यो : स्वामी धम्मो मंगल कहो। जद स्वामीजी बोल्या : भगवती सुणो। जद ते बोल्यो : स्वामीजी धम्मो मंगल सुणावो। जद स्वामीजी बोल्या : भगवती कीसो अधम्मो मंगल है। और धम्मो मंगल ईज है गाम जाता सकुन लेवै गधा तीतर बोलावै ज्यूं सुणो ते तो वात और अनै निर्जरा हेते सुणो तो वात और। ❀

: १५३ :

किण ही पूछ्यो : उजाड़ में साधु थाकां नें नहीं जे गाड़ो आवतां थी तिण गाडा ऊपर साधु नें बेसाण ने गाम में आण्यां। ज्यानें कांइ थयो। जद स्वामीजी बोल्या : गाड़ो नहीं हुंतो पुणिया ते गधेड़ा आवता ते ऊपर

छोड़ूं। आप कहो तो आपने आण सूॅपू। धोवण उन्हों पाणी पाज्यो। सूखो चारो न्हाखज्यो। साधा रो एवर न्यारो उछेरज्यो। जब साध बोल्या : थारे सूसा रो जावतो कीजै। सूंस चोखा पालजै। इम सूंसा री भलावण देवे पिण बकरा री भलावण न देवै। कसाइ साधां रा गुण गावै : मोंनै हिंसा छोड़ाइ तारयो। बकरा जीवता बचिया ते पिण हरखित हुवा।

कोइ एक पुरुष पर स्त्री नो लंपट। ते साधा कने पर स्त्री गमन नो पाप सुणीने त्याग किया। घणो राजी होय साधा रा गुण गावै : आप मोंनें डूबतानैं तारयो। नरक जाता नें राख्यो। अनैं उवा स्त्री शील आदयो सुणनें उणरे कनें आयने बोली : हूॅ तो था उपर इकतार री धार बेठी थी सो मो सागै गृहवासो करो नहीं तो कूवा में जाय पड़सूं। जब तिण कह्यो : मोने तो उत्तम पुरुषा पर स्त्री नो घणो पाप बतायो। तिण सूं म्हें त्याग कीधा। म्हारै तो था सूं काम नहीं। जब स्त्री क्रोध रे वस कूवा मे जाय पड़ी।

हिवै चोर समज्या अनैं धन धणी रे रह्यो। कसाइ समज्यो अनैं बकरा बच्या। लंपट शील आदयो नें स्त्री कूवा में पड़ी। चौर कसाइ लंपट या तीना नें तारवानें उपदेश साधा दियो। आ तीनाने साधा तारया। ए तीनूंइ तिरया। तिण रो साधां नें धर्म थयो। अनैं धणी रो धन रह्यो बकरा जीवा बच्या तिण रो तो धर्म अनैं स्त्री कूवा मे पडी तिण रो पाप साध ने नहीं। केइ अज्ञानी कहै : जीव बच्या अनैं धन रह्यो तिण रो धर्म। तो उगरी श्रद्धा रे लेखै स्त्री मूइ तिण रो पाप पिण लागै। ॐ

: १४९ :

किण ही कह्यो जीव बचिया ते धर्म। जद स्वामीजी बोल्या : कीड़ी ने कीड़ी जाणे सो ज्ञान के कीडी ज्ञान। जद ऊ बोल्यो : कीडी नें कीड़ी जाणे सो ज्ञान। कीड़ी नें कीड़ी सरधे सो सम्यक्त्व के कीड़ी सम्यक्त्व। जद ते बोल्यो : कीड़ी नें कीड़ी सरधे ते सम्यक्त्व। कीडी मारवा रा त्याग किया- तिका दया के कीड़ी रही जिका दया। जद ऊ बोल्यो

कीडी रही तिका दया। जद स्वामीजी बोल्या : कीडी वायरा सूं उड़ गई तो दया उड़ गई, जद ऊ विमासी विचारनै बोल्यो : कीड़ी मारवा रा त्याग किया तिका दया पिण कीडी रहीं सो दया नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : यत्न दया रा करणा के कीड़ी रा करणा। जद ते बोल्यो : यत्न दया रा करणा। ❀

: १५० :

किण ही कह्यो सूत्र मे साधू नें जीव राखणा कह्या। जद स्वामीजी बोल्या : ते ठीक ही छै। ज्यूं रा ज्यूं राखणा किण ही नें दुख देणो नहीं। ❀

: १५१ :

× × रे श्रावका रे पूरी पिछाण नहीं तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : कोइ भाड साधू नों रूप वणायनै आयो। तिण नें पूछै थें किण टोला रा। जद तिण कह्यो म्हैं डूंगरनाथजी रै टोलै रा। थांरो नाम कांइ। कहै म्हारो नाम पत्थरनाथ। काइ भणिया हो। तव ते कहै भणियो तो काइ नहीं पिण वाइसटोला चोखा नें तेरापंथी खोटा या जाणूं छूं। जद थें मोटा पुरुष मत्थेन वंदामि तिक्खुतो आयाहिण पयाहिण इम कहि वाचौ। इसा अजाण है पिण न्याय निरणो नहीं। ❀

: १५२ :

स्वामीजी वांचता एक जणो आय बोल्यो : स्वामी धम्मो मंगल कहो। जद स्वामीजी बोल्या : भगवती सुणो। जद ते बोल्यो : स्वामीजी धम्मो मंगल सुणावो। जद स्वामीजी बोल्या : भगवती कीसो अधम्मो मंगल है। ओहि धम्मो मंगल ईज है गाम जाता सकुन लेवै गधा तीतर बोलावै ज्यूं सुणो ते तो वात ओर अनैं निर्जरा हेते सुणो तो वात ओर। ❀

: १५३ :

किण ही पूछ्यो : उजाड़ में साधु थाको नें सहजे गाड़ो आवतो थो तिण गाडा उपर साधू ने वेसाण ने गाम मे आण्यों। उणनें काइ थयो जद स्वामीजी वोल्या : गाड़ो नहीं होने पुणिया ते गवेड़ा आवता ते उपर

वेसाणनै गाम में आण्यों तिण नें काइ थयो। जद ऊ वोल्यो : गधेरी वात क्यूं करो। स्वामीजी वोल्या : थे गाडै वेसाण आण्या धर्म कहो तो गधे वेसाण आण्या हि धर्म। साधू रे तो दोनूं ही अकल्पनीक है। ❀

: १५४ :

फतूजी आदि पांच जण्यां ने चंडावल में स्वामीजी कह्यो : थारे कपडो चाहिजै सो लेवो। त्यां मांग्यो तिण प्रमाणे दीधो। मन में संका पड़ी कपड़ो वधतो दीसै। तिवारै अखैरामजी स्वामी नें मेलनैं त्यारे ठिकाणै सूं कपड़ो मंगायनै मापियो तो कपडो वधतो नीकल्यो। पछै स्वामीजी त्यानें घणी निषेधी। आगमिया काल नीं अप्रतीत जाणनैं पाचूं जण्या ने साथे छोड़ दीधी। ❀

: १५५ :

ढूंढार मे एक भाया रे वीरभाणजी री संका पड़ी। पछै स्वामीजी कनै आयो। सामायक नों उपदेश दियो। जद ते वोल्यो : सामायक तो न करूं कदाच सामायक में थांने स्वामीजी महाराज कहिणी आय जावै तो मोनें दोष लागै। जद स्वामीजी वोल्या : एक मुहुरत नो संवर कर। इम कही संवर कराय पछै उण सूं चरचा कर भिन २ भेद वताय उण री संका मेटनै पगां लगाय दियो। ❀

: १५६ :

नाथजी द्वारा मे नैणसिंहजी रो जमाई उदेपुर सूं आयो। नैणसिंहजी कह्यो महाराज यानें समझावो। जद स्वामीजी समझावा लागा। तिणनें पूछ्यो साधा नें आधाकर्मी थानक में रहिणो के नहीं। जद ते वोल्यो : ठीक है न रहिणो। वलि स्वामीजी कह्यो : केयक साध नाम धरायनै आधाकर्मी थानक में रहै है। जद ते वोल्यो : रहै छै तो कठेयक सूत्र में चाल्यो हुवैला। वली स्वामीजी पूछ्यो : साधू नें किंवाड़ जडनो नहीं, नित्य पिण्ड एक घरणों लेणो नहीं। जद ऊ वोल्यो : आ वात तो साची कही। किंवाड़ जड़ै सो साधु रे काइ रूखालनों है। किंवाड़ जडै सो साध हीज नहीं।

ष्टान्त : १५७-१५८-१५९-१६०

जद स्वामीजी कह्यो : केइ किंवाड़ जडे है। एक घर नों नित्य पिण्ड लैवे है। जद ते बोल्यो : हा महाराज किंवाड़ जडे है नित्य पिण्ड लैवे है तो कठेयक सूत्र में चाल्यो इज हुवेला। जद स्वामीजी जाण्यो ओ तो समजतो कोइ दीसै नहीं बुद्धि तिखी नहीं तिणसू। ❀

: १५७ :

कोइ सूं चरचा करता बुद्धी तो जावक काची देखी अनैं लोक कहै स्वामीजी इणनें समझावो। जद स्वामीजी बोल्या : दाल हुवै तो मूंग मोट चणा री हुवै पिण गोहा री दाल न हुवै। ज्यू हलुकर्मी बुद्धीवंत हुवै ते समझै पिण बुद्धी हीण न समझै। ❀

: १५८ :

किणही कह्यो आप उद्यम करो तो कानी कानी हलुकर्मी जीव जगत में घणाइ है समझै जिसा। जद स्वामीजी बोल्या : मकराणा रा पत्थर में प्रतिमा होयवारो गुण तो है पिण इतरा करणवाला कारीगर नहीं। ज्यू समजै जिसा तो घणाइ है पिण इतरा समझावणवाला नहीं। ❀

: १५९ :

वेणीरामजी स्वामी स्वामीजी नें कह्यो : हेमजी नें वखाण अस्खलित परवरा मूंहडै तो आवै नहीं जोडता जाय अनैं वखाण देता जाय। जद स्वामीजी बोल्या : केवली सूत्र व्यतिरिक्त इज हुवै। उणारे सूत्र रो काम नहीं। ❀

: १६० :

वेणीरामजी स्वामी बालपणै था। जद स्वामीजी नें पूछयो हींगलू सू पात्रा रंगणा नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : म्हारै तो पात्रा रंगीयाइ है थारै संका हुवै तो तू मत रंग। जद वेणीरामजी स्वामी बोल्या : म्हारा कैलूडा थी रंगवारा भाव है। जद स्वामीजी बोल्या : कैलू लेवा जाय जद ऊरली कानीं तो पीलो कच्चा रंगरो केलू अनैं आगे लाल पक्का रंगरो केलू पड्यो देखनें थारे लेखै पहिला देख्यो सोही लेणो चोखो केलू हेरै तो ध्यान तो खुरंगै रंगरो इज ठहर्‌यो इम कहि समझाया समझ गया।

: १६१ :

कोइ कहै पात्रा नें दुरंगा क्यूं रगो। जद स्वामीजी बोल्या : कुंथुवारी निगै चौखी तरै पड़ै। एक रंग सूं दूजै रंग उपर आवै जद दीसणो सोहरो। कोरो हींगलू बोझल पिण हुवै। कालो फोरो हुवै। वासी उतारणो सोरो। इत्यादिक अनेक कारण सूं जूं जूवा रंग देवै ते पिण सूत्र में वरज्या नहीं। ❀

: १६२ :

वालपणै वेणीरामजी स्वामी खूंचणा काढता। स्वामीजी आप विना जोया विना पूंज्या पग सरकाया। एक दिन वेणीरामजी स्वामी तो अलगा बेठा हा अनें स्वामीजी गुप्त पणै पूंजनै पग सरकायो नें साधा नें कह्यो ऊ वेणो अलगो बेठो देखै है। इतलै वेणीरामजी स्वामी बोल्या : ऊ स्वामीजी विना जोया पग सरकायो। जद और साध स्वामीजी कानी देखनें हसवा लागा। पछै साधा कह्यौ पूजनें पग सरकायो। जद लचखाणा पड्या अनै पगा आय लागा। ❀

: १६३ :

पींपार में वेणीरामजी स्वामी दुजी हाट में वैठानें स्वामीजी हेला पाड्या ओ वेणीराम ३। इम दोय तीन हेला पड्या पिण पाछा वोल्या नहीं। जद गुमानजी लुणावत नें कह्यो वेणो छूटतो दीसै है। जद गुमानजी वेणीरामजी स्वामी नें जाय कह्यो थानें हेलो पाड्या बोल्या नहीं तिण सूं स्वामीजी आ वात कही वेणो छूटतो दीसै है। इम सुणनें वेणीरामजी स्वामी डरिया आयनें पगा लागा। जद स्वामीजी बोल्या रे मूरख हेलो पाड्या पिण पाछो वोलै नहीं। वेणीरामजी स्वामी नरमाइ करनें वोल्या महाराज मैं सुणियो नहीं। पछै घणीं नरमाइ करी। इसा वनीत तो वेणीरामजी स्वामी इसा जब्बर स्वामीजी। ❀

: १६४ :

वेणीरामजी स्वामी कह्यो हूं थली में जाऊं चन्द्रभाणजी सूं चरचा करूं। जद स्वामीजी बोल्या : थारै उणा सूं चरचा करवारा त्याग है।

इसो हिज अवसर देख ने ए त्याग कराया। इसा स्वामीजी अवसर ना जाण।

:१६५:

मेंणाजी आर्या नें अनै वैंणीरामजी स्वामी नें स्वामीजी बोल्या : ए आख्या री ओषध घणो करै सो आख गमावता दीसै है। तो पिण ओषध छोड़्यो नहीं। पछै आँख्या घणी कची पड़ गइ।ओषध घणो कीधो तिण सू आँख्या नें जोखो थयो।

: १६६ :

गुजरात सू सिंघजी आय नाथद्वारै मे स्वामीजी कनें दीक्षा लीधी। पछै कितरा एक दिन तो ठीक रह्यो पछै सिरयारी में अयोग्य जाण नें छोड दियो। ते माहडे परहो गयो। पछै खेतसीजी स्वामी बोल्या : सिंघजी नें प्रायश्चित देइनें पाछो उरहो ल्यो, हूं जाय नै ल्यावूं। जद स्वामीजी बोल्या : ते लेवा योग्य नहीं। तो पिण कमर बाधने ल्यावा नें त्यार थया। जद स्वामीजी कह्यो उणा भेलो थें आहार कीधो है तो था भेलो आहार करवारा त्याग है। इम सुननें मोटा पुरुष कोइ ल्यावानें गया नहीं। इसा जब्बर भीखणजी स्वामी। पछै सिंघजी रा समाचार सुण्या ऊतो राली ओढने घरटी रे जोड़ै सूतो है।

: १६७ :

दोय साधा रे माहो माहि अड़वी लागी। स्वामीजी कनै आया। इणरे लोट माहीं थी पाणी रा टपका पड़ता ऊतो कहै इती दूर आयो ऊ कहै इतरा पावडा। परस्पर विवाद करै। समझाया समझै नहीं। जद स्वामीजी कह्यो : थें दोनू जणा डोरी ले जायने जायगा माप आवो। जद दोनू जणा अड़वी छोड नें सुद्ध होय गया।

: १६८ :

वली दोय साधारै आपस में अड़वी लागी अनैं ऊ कहै तूं लोलपी ऊ कहै तू लोलपी। इम परस्पर विवाद करता स्वामीजी कने आय

: १७६ :

धामली में आर्य्या विना भूलाया चोमासो कियो। तिया आहार पाणी री संकडाइ घणी रही। किणही स्वामीजी नें पूछ्यो महाराज धामली में आर्य्या विना भूलाया चोमासो कियो त्या नें कांइ दंड देस्यो। जद स्वामीजी बोल्या : प्रथम तो दड उ गाम देवैईज है। पछै भेला थया जद त्या आर्य्या नें प्रायश्चित देइ सुध कीधी। ❀

: १७७ :

धनाजी री प्रकृति करड़ी जाण नें स्वामीजी विचारयो आ भारमलजी सूं निभणी कठिन है। साहमी बोलै जीसी है। यूं जाणनें छोडणरो उपाय करनें कला सूं पर पूठे छोड दीधी। ❀

: १७८ :

छै लेश्या हुंती जद वीर में, हुंता आठुंइ कर्म।
छद्मस्थ चूका तिण समें, मूरख थापै धर्म।
चतुर नर समजो ज्ञान विचार।

ए गाथा जोडी जद भारमलजी स्वामी कह्यो : छद्मस्थ चूका तिण समें ओ पद परहो फेरो लोक वैदो करै जिसो है। जद स्वामीजी बोल्या : ओ पद साचो के भूठो। जद भारमलजी स्वामी कह्यो : है तो साचो। जद स्वामीजी बोल्या : साचो है तो लोका री काइ गिणत है। न्याय मारग चालता अटकाव नहीं। ❀

: १७९ :

सम्वत अठारै तेपनै स्वामीजी सोजत चोमासो कीधो। पछै विचरता २ माहढै पधार्या। तिहा सिरयारी सूं गृहस्थपणै में हेमजी स्वामी दर्शण करवा आया। पौल रा चौंतरा उपर तो स्वामीजी पोढया अनें हेठे माचो विछाय नें हेमजी स्वामी सूता। जद साध अनें स्वामीजी माहों मांहि साध आर्या नें क्षेत्रां मे मेलवारी वातचीत करै। उण साध नें उण गाम मे मेलणो फलाणै नें अमुक गामें मेलणो है। पिण सिरयारी मेलवारी वात न कीधी।

जद हेमजी स्वामी बोल्या : स्वामीनाथ सिरयारी में साध आर्ज्यां मेलवारी वात ही न कीधी। जद स्वामीजी करड़ें वचनें करी घणा निषेध्या। फरमायो गृहस्थ सुणता वात हीज न करणी साधा रै विचै बोलवारो काम हीज काइ। हेमजी स्वामी नें करड़ी घणीं लागी। मूंन साफनें सूय रह्या। पछै प्रभाते हेमजी स्वामी तो दर्शण करनें सिरयारी कानी नींवली रो मारग लीधो अनें स्वामीजी कुशलपुर कानीं विहार कीधो। आगै जाता स्वामीजी नें कायक सकुन पाल हुवा जद पाछा फिरस्या। आप पिण नींवली कानीं पधारया। हेमजी स्वामी री चाल तो धीरे नें स्वामी री चाल उतावली सो आय पूगा। हेलो पाड़्यों हेमडा म्हैइ आवा हा। सुण नें हेमजी स्वामी ऊभा रहिनें वंदना कीधी। पछै स्वामीजी बोल्या : आज तो था ऊपर हीज आया हा। जद हेमजी स्वामीजी बोल्या : भलाइ पधास्या। स्वामीजी बोल्या : तूं साधपणो लेऊं २ करता नें ललचावता नें तीन वर्ष आसरै हुवा सो अवै समाचार पक्का कहि दै। हेमजी स्वामी बोल्या : स्वामीनाथ साधपणो लेवारा भाव खराखरी है। स्वामीजी बोल्या : म्हा जीवता लेसी कै, चल्या पछै लेसी। आ वात सुणनें घणी करड़ी लागी। स्वामीनाथ इसी वात करो। आप रै संका हुवै तो नव वर्ष पछै कुशील रा त्याग कराय देवो। स्वामीजी बोल्या : त्याग है थारै। चट त्याग करावताइ हुवा। त्याग कराय नें बोल्या : परणीजवारै वासतै नव वर्ष थें राख्या है कै। हा स्वामीनाथ। जद स्वामीजी बोल्या : एक वर्ष तो परणीजता लागै वाकी आठ वर्ष रह्या। तिण में एक वर्ष स्त्री पीहर रहै। पाछै रह्या सात वर्ष तिण मे दिनरा त्याग है। थारै लारै साढ़े तीन वर्ष रह्या तिका में पाँचूँ तिथ्यारा थारै त्याग है। वाकी दोय वर्ष नें च्यार महिना आसरै रह्या। इम संकोचता २ पोहर रो लेखो करता पछै घड़िया रै लेखै छ मास रो कुशील आसरै वाकी रह्यो। वली स्वामीजी फरमायो : परण्या पछै एक दोय छोरा छोरी होयनै स्त्री मर जावै तो सर्व आपदा पोता रै गलै पड़ै। दुखी हुवै। पछै साधपणो आवणो कठिन है। इम कही नें वलि उपदेश देवा लगा : जाव जीव शील आदर लै, जोडलै हाथ। एतलै खेतसीजी स्वामी बोल्या : जोडलै २ हाथ जोड़ लै, स्वामीजी केवे है। जद हाथ जोड़्या। स्वामीजी पूछ्यो शील अदराय

देऊं। इम वार वार पूछ्यो। जद हेमजी स्वामी वोल्या अदराय देवो। जद स्वामीजी जावजीव पाच पदा री साख करनें त्याग कराय दिया। हेमजी स्वामी वोल्या : अवे सिरयारी वेगा पधारज्यो। जद स्वामीजी वोल्या : अवारूं तो हीराजी नें मेलां हां सो साधा री पड़िकमणो परहो सीखजे। इम कहिनें नींवली में आया। ए सर्व वात ऊभा कीधी। नींवली में आया पछै हेमजी स्वामी कनें मिठाइ थी तेहनो वारमो व्रत निपजायो। भारमलजी स्वामी नें स्वामीजी कह्यो। अवै थारै नचीताई थइ। आगै तो म्हें हा अनें अवें पाखंड्या सू चरचादिक री काम पड़ै तो हेमजी हेइज। पछै हेमजी स्वामी वोल्या : म्हें शील आदस्यो ते वात अवारूं लोका में प्रसिद्ध न करणी। स्वामीजी वोल्या : हूँ न करूं। हेमजी स्वामी तो सिरयारी आया नें स्वामीजी चेलावास पधास्या। वेणीरामजी स्वामी नें सर्व वात कही। हेमजी शील आदस्यो पिण कह्यो वात प्रसिद्ध न करणी। वैणीरामजी स्वामी सुणनें घणा राजी हुवा। स्वामीजी नें घणा प्रशंस्या। आप वड़ो भारी काम कीधो। म्हें घणी इज खप कीधी, पिण कांइ टव लागी नहीं, आप आछो काम कीधो। अनें शील आदस्यो ते वात प्रगट करणी छानें न राखणी। आप भलाइ मत कहो। वैणीरामजी स्वामी वात प्रसिद्ध कर दीधी। चेलावास रा वाया भाया राजी घणा हुवा। म्हे तो पहिलाइ जाणता हा हेमजी दीक्षा लेशी। पछै स्वामीजी सिरयारी पधास्या। हेमजी स्वामी वनोला जीमें। महा सुदि १३ शनैश्चर वार दीक्षा रो मुहुर्त ठहरायो। पछै वावा रो वेटो भाइ रावले जाय पुकास्यो। जद ठकुरांणी स्वामीजी नें चाकरा साथै कहिवायो : गाम में रहिज्यो मती। पछें गाम रा पंच भेला होय नें हेमजी स्वामी नें साथ लेइ रावले गया। जद ठकुराणी हेमजी स्वामी नें गहणा कपडा सहित देखनें वोली हूँ तो नै यूं को यूं गहणा कपडा सहित परणाय देस्यूं। म्हारा दोलत सिंह रो सूंस है। जद हेमजी स्वामी जाव दीधा परणावो तो गाम में कुंवारा डावड़ा घणाइ है। म्हारै तो सूंस है। इम कही स्वामीजी कनें आय वेठा। स्वामीजी नें गाम में रहिवारी आज्ञा लेय नें पंच पिण पाछा आया। माघ सुदी १५ पछै हेमजी स्वामी रे छ काया हणवारा त्याग हुंता अनें न्यातिला कह्यो फागुण वदि दूजरै साहवै वहिन नें परणाय

दीक्षा लीज्यो। सो ऊणा री कह्यो मान्यो। पछे स्वामीजी नें आय पूछ्यो। जद स्वामी जी निषेध्या। रे भोला अनर्थ करे है। एक दिन पिण न उल्लंघणो। पछै पाछा आयनें जे बीजरे साहवै वहिन परणाय दीक्षा लेणी इसो कागद कीधो ते फाड न्हाख्यो। अनें घरका नें कह्यो : थें इसा दगा करो। म्हारा त्याग भंगावो जद लोक बोल्या : भीखणजी समझाया दीसै है। पछै इकवीस दिन बनोला जीमी नें माघ सुदी १३ नें १८५३ गाम बारै दीक्षा थइ। वडला रे नीचै हजारू मनुष्य भेला थया। वणा उछव मोच्छव सहित स्वामीजी रे हस्ते दीक्षा लीधी। आगै सर्व बारै संत हुंता पछै तेरह थया। तठा पछै वधचो कीधा बधोतर थइ। वंक चूलिया में कह्यो सं १८५३ पछै धर्मरो घणों उद्योत हुसी ते वात आय मिली। दीक्षा देइ स्वामीजी विहार कीधो। पछै घणो उपकार थयो। ❀

: १८० :

कच्छ देश थी पाली में टीकम दोसी आयो। अनेक बोला री सका पडी ते मेटवा। जद पाली में · रे श्रावका कह्यो टोडरमलजी थांरी सका मेट देशी। थें थानक में चालो। इम कही थानक मे ले गया। पछै टोडरमलजी सू चरचा कीधी। टीकम दोसी रा प्रश्ना रो उत्तर आयो नहीं। जद टीकम दोसी बोल्यो या प्रश्ना रा जाव देणवाला तो एक भीखणजी स्वामी इज है और कोइ दिसै नहीं। इम कही ठिकाणै आयो। कैतलायक दिना पछै स्वामीजी मेवाड़ सूं मारवाड़ पधाऱ्या। सिरयारी होयनें गुण सठै वर्ष पाली चोमासौ कीधो। टीकम दोसी मोकला प्रश्न पूछ्या ज्यारा जाव स्वामीजी दीधा। टीकम दोसी बोल्यो : वकचूलीया में कह्यो संवत अठारे तेपनें पछे धर्म रो उद्योत होसी। इण वचन रै लेखै तो तेपना पहिली साध नहीं इम संभवै। जद स्वामीजी फुरमायो इहाँ साध नहीं इसो तो कह्यो नहीं। सं० १८५३ पछै धर्म रा घणा उपकार आसरी उद्योत कह्यो छै। तेपनें पहीली थोड़ो उद्योत छो तेपना पछै घणों उद्योत। इम कहीनें समझायो। ❀

: १८१ :

भारमलजी स्वामी वालक था जद स्वामीजी फरमायो : गृहस्थ खूचणों काढै तिसो काम न करणो। गृहस्थ खूचणों काढै जिसो काम करै तो तेला रो दंड। जद भारमलजी स्वामी बोल्या : कोइ भूठोइ खूचणों काढै तो। जद स्वामीजी कह्यो : भूठो खूचणों काढै तो आगला पाप उदै आया। तो पिण भारमलजी स्वामी वडा वनीत सो वचन अंगीकार कियो। इसा वनीत उत्तम पुरुप हुवै ते खूचणो कढावै हीज किण लेखै। ❁

: १८२ :

वालपणै भारमलजी स्वामी नें आखी उत्तराध्ययन उभा २ चितारणी इसी आज्ञा स्वामीजी दीधी। जद भारमलजी स्वामी बोल्या : स्वामीनाथ कदाचित नींद मे हेठो पड जाउं तो। जद स्वामीजी पाछो फरमायो पूजनैं खूणैं उभा रहो। इण रीते आखी उत्तराध्ययन री सभाय अनेक वार कीधी। इसा वैरागी पुरुप। ❁

: १८३ :

साध आर्य्यां री प्रकृती करडी देखता तो तिणरी खोड स्वामी मेटवानें इम दृष्टान्त देता। कपाय रो टूक, जाणे वासति रो टूक, सर्पनी परै फू, इम कहि नें प्रकृती सुधारवारो उपाय करता। ❁

: १८४ :

" वखाण वाणी देवै सूत्र सिद्धात वाचै छैहडै जीव खुवायां पुन्य मिश्र परूपै सावद्य अनुकंपा में धर्म कहै तिण उपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो : वाया रात्रि मे संसार लेखै चोखा २ गीत गावै अनैं छेहडै जाता मोस्यो मारू गावै। ज्यू पहिला तो वखाण में अनेक वाता कहै पिण छैहड़ै सावद्यदान सावद्यदया में पुण्य मिश्र परूपै। ❁

: १८५ :

विजयचंदजी पटवा नें आसकरण दाती कह्यो : विजयचंदजी थारा गुरु भीखणजी कवाड़ खोलनें मेड़ी मे उतस्या। इम सुण नें विजयचदजी

बोल्या : न उतरै। जद आसकरणजी कह्यो : विजयचद भाइ म्हारी प्रतीत तो राख। जद विजयचदजी बोल्या : थारी प्रतीत पूरी है। तू झूठाबोलो है। इम कहिनें निषेधीयो पिण साधा ने आयनें पूछियो तक नहीं। पछै आ बात स्वामीजी सुणनें बोल्या : विजयचंदजी पटवारै जाणै क्षायक सम्यक्त्व दीसै है। साधा में अनेक दोष लोक कहै इणा नें सुणावै पिण साधा नें पाछो पूछवारो इज काम नहीं इसो दृढ़ धर्मी। ❀

: १८६ :

एक दिवस विजयचदजी आथण रा स्वामीजी कनें सामायक प्रतिक्रमण करवा आया। वादला में दिन दीसै नहीं जद स्वामीजी नें अर्ज करी महाराज उदक चुकाय दिरावो। जद स्वामीजी उदक चुकाय दिरायो। बाद में तावडो निकल्यो दिन घणों दिस्यो जद स्वामीजी बोल्या साधा रै रात्रि मे पाणी पीणो नहीं गृहस्थ रै रात रा सूंस न हुवै तेह थी रात्रि में पाणी परहो पीयै। इम सुण नें विजयचदजी पगा पड़्या अनें बोल्या : मोटा पुरुषा आप तो अवसर ना जाण छो मोने निगे न पड़ी। इसा साधा रा वनीत सो पक्की नरमाइ करी। ❀

: १८७ :

नानजी स्वामी हेमजी स्वामी नें कह्यो : हेमजी ! भीखणजी स्वामी म्हा साधा नें तो हाट में वेसाणता। कठ मिलाणवाला भाया आडा वेसता। परसेवो घणों हुतो। उपकार रै वासतै कष्ट रो अटकाव नहीं इम स्वामीजी फुरमावता। उन्हा लै चोमासै सिरयारी पक्की हाटै स्वामीजी वखाण देता, भीखणजी स्वामी भारमलजी आगै जोडै विराजता, पाखती कठ मिलावण-वाला भाया वेठता, वीजा साध माहै वेसता। गर्मी रो वडो कष्ट। इण पर परिषह सहि ने उपकार कीधो। ❀

: १८८ :

सं० १८५६ रे वर्ष पाच साधा सू नाथ द्वारै चोमासो कीधो। भारमलजी स्वामी १ खेतसीजी स्वामी २ हेमराजजी स्वामी ३ तो एकातर

करता। स्वामीजी आठम चवदश रा उपवास करता। अनें उदैरामजी वेलै २ पारणों पारणा में आम्बिल। खेतसीजी स्वामी उदैरामजी नें आहार अधिक देवै। जद स्वामीजी वरज्या। फरमायो : वेला रो पारणो है आहार उनमान सूं द्यो। तो पिण अधिक देवा री चेष्टा देख नें स्वामीजी फुरमायो : खेतसी! उदैरामजी री मोत थारे हाथै हुंती दीसै है। केतलायक वर्षा पछै मारवाड़ में इगसठै री साल उदैरामजी आम्बिल वर्द्धमान तप करता इकतालीस ओली तो हुइ एक अठाइ कीधी। अठाइ रो पारणो खारचिया कीधो। डील में कारण जाण नें चेलावास भारमलजी स्वामी कनें आवता कराड़ी गाम में थाका।

जद भोपजी तपसी चेलावास आय नें समाचार कह्या। जद खेतसीजी स्वामी हेमजी स्वामी भोपजी तपसी आदि जाय नें खाधे बैसाण चेलावास लेय आया। घास रो विछावणों कर ऊपर सूवाण्या। पछै हीराजी हेमजी स्वामी नें कह्यो : आप लिखणों काइ करो। उदैरामजी स्वामी नें पाणी पावो। जद खेतसीजी स्वामी हेमजी स्वामी दोनूं जणा आया। खेतसीजी स्वामी मोरा पाछै हाथ देय नें बैठा कीधा। इतलै आख्यां फेर दीधी। भारमलजी स्वामी फरमायो सरधो तो थारे च्यारूं आहार नां त्याग है। खेतसीजी स्वामी रे हाथ में हीज चालता रह्या। जद खेतसीजी स्वामी कह्यो : मोनें स्वामीजी फुरमायो थो के उदैरामजी री मोत थारै हाथै आवती दीसै है। सो स्वामीजी रो वचन आय मिल्यो। ꕥ

: १८९ :

सोजत रा वजार में छत्री त्या स्वामीजी विराज्या। वरजूजी नाथाजी आदि सात आर्य्यां ओर गाम थी आया। स्वामीजी नें वंदणा कीधी अनें बोल्या उतरवा नें जायगा चाहिजे। जद स्वामीजी पोते उठनें नजीक उपाश्रय जड्यो हुंतो त्यां आर्य्यां नें साथे लेयनें आया अनें बोल्या : छैरे कोइ भायो इण उपाश्रे री आज्ञा देणवालो। जद एक भायो बोल्यो : म्हारी आज्ञा है। ओर जायगा सूं कूंची ल्याय नें तालो खोल कवाड़ खोल दिया। पछै माहैं आर्य्यां नें उतार नें आप पाछा ठिकाणें पधारिया।

एह समाचार नाथाजी रे मूहडै सुण्यां ज्यू हीज लिखिया छै। आर्य्यां नें कमाड़ खोलायनें न उतरणो इसी परूपे ते अजाण छै। आ तो रीत थेट स्वामीजी थकारी है। ❀

: १९० :

खैरवारा भगजी दीक्षा नें त्यार थया। जद काका बावा रा भाया वेदो घणों कियो। इम कहै : माह री आज्ञा नहीं। जद स्वामीजी फरमायो थारी आज्ञा री जरुरत नहीं। पछै बड़ी बहिन री आज्ञा लेयनें दीक्षा दीधी। पछै त्या वेदो घणों कीधो। स्वामीजी रे मूंढा मूंढ भगड़ो घणा दिना ताइ कीधो पिण स्वामीजी काइ गिणत राखी नहीं। पछै भगजी नें स्वामीजी पूछ्यो तोनें उवे पाछो लेजावैला तो तू काइ करैला। जद भगजी बोल्यो घर में लेजावेला तो म्हारे च्यारूइ आहार ना त्याग है। स० १८५६ री ए बात छै। अनें पछै साठै चोमासो सिरयारी कीधो तिहा चोमासा में ते काका बाबा रा भायां वेदो मोकलो कियो। स्वामीजी न्याय मारग चालता कोइ री गिणत राखी नहीं। ❀

: १९१ :

देसूरीवाला नाथूजी साध नें जीभ रो लोलपी जाणनें घृत दूध दही मिष्टान कडाइ विगै खावारी मर्यादा साधा रै बाधी सं० १८५६ रे वर्ष। ❀

: १९२ :

वीरभाणजी नें स्वामीजी फरमायो : पन्ना नें दीक्षा देवारी आज्ञा नहीं। अनें जो दीक्षा दीधी तो आपा रे आहार पाणी रो संभोग भेलो नहीं। पछै वीरभाणजी पन्ना नें दीक्षा दीधी। जद स्वामीजी आहार पाणी नों सभोग तोड़ नाख्यो। पछै इन्द्रया सावद्य इसी विपरीत सरधा ले उठ्यो ❀

: १९३ :

ओटा सोनार नें दीक्षा दीधी। तथा वीरां कुंभारी नें दीक्षा दीधी। समपणै प्रवर्त्या नहीं तिणसू महाजन विना ओर नें दिक्षा देवा री रुचि उतरी ❀

: १९४ :

टीकम दोसी रे अनेक बोला री सका पडी। गुणतीस ओलीया आस रै लिखने ल्यायो। चरचा करवा लागो। बोले घणो। जद स्वामीजी ओलीया वाच २ ने उणरा जाव लिख ने वंचाय देता। २६ ओलीया रै आस रै तो संका मेट दीधी। जद घणो रोयो अने बोल्यो आप न हुता तो म्हारी काइ गति हुंती। आप तीर्थंकर केवली समान हो। इत्यादिक घणा गुण कीधा। स्वामीजी री जोडा सुण ने घणो राजी हुवो। ए जोड़ा नहीं एह तो सूत्रा री निर्युक्ति छै। घणी सेवा करनें पाछो कच्छ देश गयो। वलि संका पडी जद चौविहार संथारो कीधो। म्हारी सका तो सीमधर स्वाम मेटसी। पन्द्रह दिन आसरे सथारो आयो। आऊखो पूरो कियो। ❀

: १९५ :

चद्रभाण नीकलवा लागो जद स्वामीजी बोल्या : संलेखणा सथारो करणो भिरै पिण साधा ने छोड़ने अपछदापणो सिरे नहीं। जद ऊ बोल्यो : म्है अनें भारमलजी दोनूं सलेखणा करा। जद स्वामीजी बोल्या : आपे दोनूं जणा करा। जद चंद्रभाणजी बोल्या : था साथे तो न करू भारमलजी साथै करूं। स्वामीजी फेर कह्यो आपे करा। पछै चन्द्रभाण तीलोकचंद दोनूं जणा मान अहंकार रे वस टोला वारे नीकल्या। ते सहु विस्तार तो स्वामीजी कृत रास थी जाणवो। ते जाता थका बोल्या : विश्वा तो म्हाराइ घटेला पिण थारा श्रावका नें तो दाहै वाल्या आकड़ा सिरखा करूं तो म्हारो नाम चद्रभाण है। जद चतुरोजी श्रावक बोल्यो : थें तो थोड़ा कोश हालो अने हूं कासीद मेल नें ठाम २ खबर कराय देसू सो थानें मन करनें पिण कोइ वंछै नहीं। पछे दाहै वलिया आकडै जिसा थें इज हुवोला। वाद मे उठा सू चालता रह्या। पछै आगै रुघनाथ जी मिल्या। त्या कह्यो : थें म्हा में परहा आवो। थारी रीत राखस्या।

पछै रोयट रा भाया नें किणहि कह्यो भीखणजी रा टोला सूँ चंद्रभाण तिलोकचंद दोनूं भणणहार साध नीकल गया। जद श्रावक बोल्या : भीखणजी तो परो हैं तो कै उवेंतो है। जद भाया बोल्या : भीखणीजी है

तो साध ओर मोकलाई हुंता दीसै है। या नीकलियो रो लिगार अटकाव नहीं। पछै स्वामीजी उणानें अवगुण वाद वोलता जाण नें उणा रे लारे-लारै विहार कीधो तिण सू एक वर्ष में सात सो कोश आसरै चालणों पड़यो। थेट चूरू ताइ पधारया। खेत्रा में कठेइ टीप लागी नहीं। उणा दोना विहार करता अनेक कूड कपट कीधा। जिण गाम जावता तिण गाम रो मारग तो न पूछता अनें दूजा गाम रो मारग पूछता कारण लारे भीखणजी आवैला तिण सू। पाछै लारे सू स्वामीजी पधारता अने लोका नें पूछता उवे किसै गाम गया है। जद लोक कहै फलाणै गाम रो मारग पूछता हा। पछै स्वामीजी पोतारी बुद्धी सू विचार नें देखता उण गामरो मारग पूछ्यो है तो फलाणै गाम गया दिसै है सो तिण हिज गाम चालो। जद साध कहता उवे तो ऊण गाम रो मारग पूछ्यो कहता था अनें आप अठि नें क्यू पधारो। जद स्वामीजी फरमायो हू जाणू छू उणारी कपटाइ। ऊण गाम रो मारग पूछ्यो तो उण गाम नहीं गया अठिनें इज गया दिसै है। आगै जाय नें देखता तो वैठा लाधता। अनें कदेइ गोचरी करता मिलता। साध देख नें वड़ो आश्चर्य करता। आप वडी तोली। उवे लोका रे संका घाले ते ठाम २ स्वामीजी संका मेट निसंक किया। श्रावक श्राविका ने सुद्ध कर दिया। उणाने ओलखाय दिया। मोटा पुरुष वडो उद्यम कियो। भलो जिन मारग दिपायो। चूरू कानीं पधारया जद आगै चंद्रभाणजी तीलोकचंदजी पहिला सिवरामदासजी नें संतोखचंदजी नें फंटाय नें आहार पाणी भेलो कर लियो। पछै स्वामीजी पधारया जद सिवरामदासजी संतोखचंदजी स्वामीजी नें आवतां देखनें मत्थेन वंदामि कहिनें उभा थया। जद चंद्रभाणजी कह्यो आपा रे यारे आहार पाणी तो भेलो नहीं ने थें वंदणा क्यू कीधी। जद सिवरामदासजी सतोखचंदजी वोल्या : आपा रा गुरु है सो वंदना तो करस्या इज। पछै उणा दोया सू स्वामीजी वात करनै समझाया। चंद्रभाण नें ओलखाय दियो। पछै स्वामीजी तो पाछा मारवाड पधारया। लारा सूं उणा चंद्रभाण तीलोकचंद सू आहार पाणी तोड़ दियो। उणा नें ओलख पिण लिया। वोल्या : या नें · ····· जिसा स्वामीजी कहता था जिसाइ निकलिया। पछै सिवरामदासजी संतोकचंद जी दोनूं सुलभ

पणें रह्या। उवे दोनूंइ विमुख रह्या तो पिण स्वामीजी उणारी गिणत राखी नहीं। इसा साहसिक पुरुष एकान्त न्याय रा अर्थी। ❀

: १९६ :

सामजी रामजी बूंदी रा वासी। श्रावगी जातिरा वेद। दोनू भाई वेलारा (जोडै जनम्या)। उणीयारो सूरत एक सरीखी दिसै। केलवे दीक्षा लेवा आया। तिहा सामजी दीक्षा लीधी सं० १८३८ रे वर्ष। पछै थोडा दिनां पछै नाथजी दुवारै में खेतसीजी स्वामी घणा वैराग सू घणा महोच्छव सू रंगूजी नें खेतसी जी स्वामी एक दिन दिक्षा लीधी। जिन मारग रो उद्योत घणों थयो। पछै थोड़ा दिना सू राम स्वामी दीक्षा लीधी। खेतसीजी स्वामी सूं सामजी तो वड़ा अनें रामजी छोटा। केतलै एक काले साम राम रो टोलो कीधो। न्यारा विचरी नें स्वामीजी रा दर्शण करवा विहार करने आवै। जद खेतसीजी स्वामी सामजी रै भोलै रामजी नें वंदणा करै एक सरीखो उणियारो तिण सूं। जद ते कहै हूं रामजी छूं साम जी तो उवै छै। इण मुजब घणीं वार काम पड्यो जद स्वामीजी बुद्धी सूं कह्यो : रामजी थें पहली खेतसीजी न वदना किया करो जद खेतसीजी जाण लेसी लारै बाकी रह्या जिकै सामजी छै। इसी बुद्धी स्वामीजी री। ❀

: १९७ :

कोटावाला दोलतरामजी रे टोलै रा च्यार साध स्वामीजी भेला आया। वर्धमानजी १ वड़ो रूपजी २ छोटो रूपजी ३ सूरतोजी ४। तिण में छोटो रूपजी वोल्यो : मोनें ठंडी रोटी न भावै। जद स्वामीजी आहार नीं पाती करता ठंडी रोटी ऊपर एक२ लाडू मेल दियो। कह्यो : जे ठंडी रोटी छोडै ते लाडू ही छोड देवो। उन्हीं रोटी लेवे तिणरे लाडू न आवै। जद अनुक्रमे आप आपरी पाती ऊठाय लीधी। कोइनें पिण ठंडी उन्हीं वोलवारो काम नहीं। ❀

: १९८ :

गाम जाढण में आसरै छव साधा सूं स्वामीजी पधार्या। गाम मे एक रजपूत रे आरो। जिहा दोय ··· ··· आया सां आरामां हीं थी

लापसी ले आया। पछै साधा नें पिण लोका कह्यो आरा माहीं थी और साध लापसी ल्याया सो थें पिण लेइ आवो। जद साधा कह्यो : म्हानें तो आरा में जाणो कल्पै नहीं। पछै साधा आयनें स्वामीजी नें समाचार कह्या जद स्वामीजी जाण्यों पाली जावा छा कोइ म्हारो नाम अणहुंतोइज ले लेवै। इम विचारी नें कनें जाय पूछ्यो थें आरा माहिं थी लापसी ल्याया के नहीं ल्याया। जद उवै बोल्या : थें क्यूं पूछो थारे म्हारे किसो आहार पाणी भेलो है। स्वामीजी बोल्या : थेंई पाली जावो हो अनैं म्हेंई पाली जावा छा सो ल्याया तो होवो थें अनें कोइ नांम लेवे म्हारो इण वासते पूछा हा सो म्हारा पात्रा तो थें देख लेवो अनें थांरा म्हांनें दिखाय देवो। जद तड़कनैं बोल्या : म्हें ल्याया २ नें फेर ल्याया। जद स्वामीजी बोल्या : तडको क्यूं यूं हिज कहो नी म्हारै रीत है सो म्हें ल्याया। इम बुद्धि सूं साच बोलाय नें ठिकाणें आया। ※

: १९९ :

स्वामीजी टोला में छतां दरजी रे गोचरी गया। जद दरजी बोल्यो : थांरो चेलो काले गुल ले गयो सो आज दिन थानैं कल्पै नहीं। जद स्वामीजी ठिकाणें आयनें सर्वने पूछ्यो के काले दरजी रे घर सूं गुल कुण ल्यायो। पिण सर्व नट गया। पछै स्वामीजी सर्व नें लेय ने दरजी रे घरे आया। दरजी ने पूछ्यो गुल ले गया ते यामे सू किस्यो है सो ओलखने बतावो। जद दरजी जयमलजी रो चेलो रायचन्द बालक हुंतो तिणनें बतायो। जद स्वामीजी तिण नें जाण लियो एहिज गुल ल्याय नें नट गयो दीसै है। इम ठागा रो झूठ रो उघाड कर दियो। ※

: २०० :

पीपाड़ में रो श्रावक मालजी, स्वामीजी सूं चरचा करतां स्वामीजी पूछ्यो मालजी ! छव कायरा जीव खावै तो कांइ हुवै। जद तिण कह्यो पाप है। वली पूछ्यो खवाया काइ हुवै। तिण कह्यो पाप छ। जद स्वामीजी बोल्या : भारमलजी स्याही गाल ने लिखज्यो मालजी पाणी पाया पाप कहे है। जद मालजी उतावलो बोलवा लागा म्हें पाणी पायां

पाप कद कह्यो जद स्वामीजी वोल्या : पाणी छकाया माहें छै के वारै। जद वोल्यो है-है-है लिखज्यो मती २। इम कष्ट कर नें चालतो रह्यो। ❀

: २०१ :

भिलाडै स्वामीजी विराज्या तिहां· · · रा श्रावक आय प्रश्न पूछ्यो : भीखणजी किणही श्रावक सर्व पापरा त्याग किया तिणनें आहार पाणी वहिराया काइ हुवै। जद स्वामीजी वोल्या : धर्म हुवै। जद उण कह्यो : थारे तो श्रावक नें दिया पाप री श्रद्धा है थे धर्म क्यूं कह्यो। जद स्वामीजी वोल्या : थें पूछ्यो सो प्रश्न संभालो। श्रावक सर्व पापरा त्याग किया, जद ते श्रावक रो साध ईज थयो। ते साध नें दिया धर्मईज छै। ❀

: २०२ :

स्वामीजी · ·· माहिं थी नीकली नवो साधपणों पचखवानें त्यार थया। जद कनें साध था ज्यांरी प्रकृति देखी। भारमलजी स्वामी रो पिता किसनोजी त्यारी प्रकृति करड़ी हुंती। आहार वधतो मंगावै। अधिकाइ री रोटी वधै तो उत्तरती लेवे नहीं। चोखी न देतो कजियो करै। जद भीलाडा में भारमलजी स्वामी नें कह्यो : थारो पिता तो साधपणें लायक नहीं सो परहो छोडस्या। थारो काइ मन है। जद भारमलजी स्वामी फरमायो : म्हारै तो आप सूं काम है। आपरी इच्छा आवै ज्यूं कराइजै। पछै किसनोजी नें स्वामीजी कह्यो : थारै म्हारै आहार पाणी भेलो नहीं। इम निसुणी किसनोजी वोल्यो : म्हारा बेटा नें ले जासूं। जद स्वामीजी वोल्या : ऊ न आवै तो उणरी इच्छा। जद जवरन भारमलजी स्वामी नें लेयनें दूजी हाटे जाय नें वेठो। आहार पाणी ल्याय नें करावा लागो। जद भारमलजी स्वामी वोल्या : हुंतो न करूं। नित्य थामें पिण करै नहीं। तीजो दिन आयो जद घणी मनुहार करवा लागो जद भारमलजी स्वामी कह्यो : थारा हाथ रो आहार करवारा जावजीव त्याग है। पछै भीखणजी स्वामी नें आण सूंप्यो। वोल्यो : ओ तो थासूं इज राजी है। था कनें इज राखो। थें नवी दीक्षा न लीधी है जितरे म्हारोइ ठिकाणों वाधो। जद स्वामीजी

लेजाय नें जैमलजी ने सूंप्या। जद जैमलजी बोल्या : देखो भीखणजी री बुद्धि। किसनोजी नें म्हानै सूपता तीन घर बधावणा हुवा। म्हें तो जाणा म्हारै चेलो पानें पड़्यो। किसनोजी जाणै म्हारो ठिकाणों वंध्यो। भीखनजी देखै म्हारो दलिद्र टल्यो। पछै केतलै एक काले किसनोजी आदि दोय साध आरा माहीं थी लापसी ल्याय ने चूकाय ने विहार कीधो। मारग में तृषा घणीं लागी। लापसी खायोड़ी अनें उन्हाले रा दिन। तृषा घणीं लागी सो सहन करी पिण काचो पाणी न पीधो। आऊखो पूरो कर गयो। आरा माहिं थी लापसी ल्याया सो तो उणा रा टोला री रीत है पिण नेम मे दृढ़ रह्यो। काल कर गयो पिण काचो पाणी पीधो नहीं। ❀

: २०३ :

स्वामीजी कनें अथवा साधा कनें लोक वखाण सुणवा आवै। त्यानें .. वरजै। जद स्वामीजी दृष्टान्त दियो। जिनऋष जिनपाल नें रैणा देवी तीन वाग तो वरज्या नहीं अनें दक्षिण नो वाग वरज्यो। झूठ बोली सर्प खावारो भय बतायो। जाण्यो दक्षिण रो वाग जासी तो मोनें खोटी जाणस्यै। ठागा रो उघाड होय जासी। यूं जाणनें दक्षिण नों वाग वरज्यो। ज्यूं , वाइस टोला, चोरासी गच्छ, तीन सो त्रेसठ पाखंड, त्यारे जाता तो विशेप न वरजै अनै शुद्ध साधा कनें जाता वरजै। कारण भीखणजी कनें गया म्हानें खोटा जाण लेसी। उवे म्हारा श्रावक उरहा लेसी तिणसू वरजै। ❀

: २०४ :

तथा लोका ने साधा सू भिडकावै। जद स्वामीजी बोल्या : आगै भगू पुरोहित पिण वेटाने भिडकाया। कह्यो साधा रो विश्वास कीज्यो मती। वारै कहणा थी वेटा पिण साधा ने खोटा जाणें। पछै साधां सू मिल्या जद वाप नें खोटा जाण नें दीक्षा लीधी। जिम ···पिण साध नें खोटा कहै। पिण उत्तम जीव हुवै ते साधां री संगत करनें त्यानें ओलखी ठाय आवै।

: २०५ :

आछा २ खेत्र देखनें ⋯ थाणें वेसें। जद स्वामीजी वोल्या : थाणें न वेसै, खाणें वेसै है। असल थाणो तो अमीचंदजी रो सो सेंतालीसै मारवाड़ में विखो पड़्यो जद दूजा ठाणावाला तो चोमासा में पगा २ विहार कर गया अनें अमीचंदजी तो चोमासा में पींपाड़ सूं पर्यूषणा मे भादवा विद १४ नें रात रा वाजरी रा गाड़ा ऊपर वेसीने गया। मारग में तृषा लागी जद काचो पाणी अलगल पीधो। ते पिण जाट रा हाथ रो। तिण सूं खरो थाणो अमीचंदजी रो सो पगै न हाल्या। ❀

: २०६ :

किणही स्वामीजी नें कह्यो थें अनें वाइस टोला एक होय जावो। जद स्वामीजी पूछ्यो थें अनें आडी जाति गिवारादिक भेला हुवो के नहीं। जद ते वोल्यो : नहीं हुवा। जद स्वामीजी वोल्या : तिम हिज म्हें अनें ⋯ भेला न हुवा। आडी जात ते महाजन रै घरै जनम लिया इज महाजन हुवै। ज्यूं ⋯ नें पिण सम्यक्त्व साधपणों आया इज भेला हुवा : ❀

: २०७ :

⋯ रा श्रावक वोल्या : पड़िमाधारी श्रावक नें सूजतो आहार पाणी दिया काइ हुवै। जद स्वामीजी वोल्या : कोइ नें काचो पाणी पावै तथा मूला खवावै तिण में थें काइ सरधो छो। जद ते वोल्या : म्हानें तो पड़िमाधारी कोइज वतावो। वीजी वात में तो म्हें न समझा। जद स्वामीजी दृष्टात दियो : कोइ वोल्यो मोनें कीड़ी कूंथूवो दिखावो। जद तिण नें पूछ्यो तो नै हाथी दीसै है के नहीं। जद ते वोल्यो के हाथी तो मोनें दीसै नहीं। जद तिण नें कह्यो हाथी पिण तोनें न सूझै तो कीडी कूंथुवा किस तरे सूझसी। ज्यूं जीव खवाया में पाप ते पिण थे न जाणो तो पडिमांधारी नें अव्रत सेवाया पाप थारे किम वेसैं। आ चरचा तो वणीं झीणी है। ❀

: २०८ :

केइ कहै पोथी आगणै मेलणी नहीं। पूठ देणी नहीं। पोथी पाना तो ज्ञान है। तिणरी आशातना करणी नहीं। जद स्वामीजी वोल्या : पोथी पाना नें थें ज्ञान कहो छो ता पोथी पाना फाट गया तो काइ ज्ञान फाट गयो। अथवा पोथी पाना सिड गया तो काई ज्ञान सिड़ गयो। पाना उड गया तो काइ ज्ञान ऊड गयो। पाना वल गया तो काइ ज्ञान वल गयो। पाना चोर ले गया तो काइ ज्ञान नें चोर ले गया। पाना तो अजीव है। अनें ज्ञान जीव है। अक्षरा को आकार तो ओलखणे रे वासते छै। पाना मे लिख्या त्यारो जाणपणो ते ज्ञान है। ते आतमा छै। आपरे कनै छै। अनें पाना अनेरा छै। ❀

: २०९ :

······ गृहस्थ्या ने कहे : अनेरा ने अन्नादिक दीधा पुन्य है तथा मिश्र है। जद गृहस्थ वोल्यो : थारे आहार वध्या थे अनेरा ने देवो के नहीं। जद ते कहे म्हें तो न द्या। म्हाने कल्प नहीं। म्हें देवा तो म्हारो साधपणो भागै। अनें थें अनेरा नें देवो तिणमे थानै पुण्य है तथा मिश्र है। तिण उपर स्वामीजी दृष्टात दियो : जिको वायरो वाज्या हाथी उड़ जाय तो रुइ री पूणी क्यू नहीं उडै। अवश्य उडै ईज। ज्यूं साधू सू अनेरा ने दान देवा थी साधु रो व्रत भागै तो गृहस्थ नें पाप क्यू नहीं लागै। लागै इज। ❀

: २१० :

हिंसाधर्मी कहे हिंस्या विना धर्म नहीं हुवै। वलि दृष्टात देइ कहै : दोय श्रावक था तिण मे एक जणें तो अग्नि आरंभ ना त्याग किया। अनें एक जणै न कीधा। दोनू जणा पइसै पइसै रा चिणा लिया। सोगन न कीधा तिण तो सेकनें भूँगड़ा कीधा। अनें सोगन कीधा ते कोरा चिणा चाव गे है। इतलै मासखमण रै पारणै मुनिराज पधास्या। सो जिणरै ग नहीं तिण तो भूगड़ा वहिरायनें तीर्थंकर गोत्र वाध्यो। अनें गवालो वेठो जुलक र जोवै। ऊ कांइ वहिरावै। इण न्याय हिंसा

थी धर्म हुवे। अने हिंसा विना धर्म न हुवै। इम कहै तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : दोय श्रावक हुँता। तिणमें एक श्रावक तो जाव-जीव लगै शील आदर्‍यो। अनैं एक जणैं कुशील ना त्याग न किया। परणीजीयो। पछै तिणरै पाच पुत्र थया। मोटा हुवा। धर्म में समझ्या। वैराग आयो। दोय बेटानें हरख सूं दीक्षा दीधी। घणो हरख आयो तिण सूं तीर्थंकर गोत्र बाध्यो। थे हिंस्या में धर्म कहो सो थारे लेखै कुशील में पिण धर्म ठहर्‍यो। हिंसा बिना धर्म नहीं तो कुशील विना पिण धर्म नहीं थारे लेखै। इम कह्या कष्ट थयो। पाछो जाव देवा असमर्थ। ❀

: २११ :

कोइनें वेरी न करणों। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : है रे कोइ वेरी। जद संसार मे तो कहै देनी उधारो। अनें धर्म लेखै हे रे कोइ वैरी तो कहै पूछै नीं करली चरचा। करली चरचा पुछ्या जाव न आवै जद आफेई वेरी हुवै। है रे कोइ वेरी तो कहे काढैनी खूंचणों। खूंचणों काढ्या आगलै ने दोरी लागै जद क्रोध में आयनें आफेई वेरी हुवै। ❀

: २१२ :

भीखणजी स्वामी नें किणही कह्यो। आप तो पुखता हो। वर्षा में घणा हो सो पडिकमणो वेठा इज करो। इतरी खेद क्या नें करो। जद स्वामीजी वोल्या : म्हे जो पडिकमणो वेठा २ करा तो लारला सूता २ करवारो ठिकाणो हैं। ❀

: २१३ :

पुर माहै स्वामीजी फरमायो, दश प्रकारे श्रमण धर्म। जद जैचद वीरागी वोल्यो : महाराज! दश प्रकारै यति धर्म। जद स्वामीजी फरमायो भलाइ महात्मा धर्म कहोनी। ❀

: २१४ :

कोइ साध वार २ उपयोग चूकै पिण नीत मे फरक नहीं तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : धान रो कुणको पड्यो देखने किणही साध नें

गुरा कह्यो। ओ धान रो कुणको पड्यो है सो पग दीज्यो मती। जद तिण कह्यो: स्वामीनाथ! को देवू नीं। थोड़ी वार थी फिरतो २ आयनें पग दे दीधो। जद गुरु बोल्या: थानैं इण ऊपर पग देणौ वरज्यो थोनीं। जद ऊ साध बोल्यो: स्वामीनाथ! उपयोग चूक गयो। जव दूजी वेला फेर फिरता २ पग दे घाल्यौ। वलि गुरा निषेध्यो, आगै थांनें वरज्यौ थोनी। जद वले बोल्यो: महाराज! उपयोग चूक गयो। जद गुरु बोल्या: अवै पग लागै हे तो सवेरै विगैरा त्याग है। थोड़ी वेला सूं फिरता २ वले पग दे दियौ। इम उपयोग चूक नें वार २ पग लागो तो ते कुणका उपर पग देवाथी नें विगै टालवा थी राजी नहीं। पिण उपयोग में खामी है। नीत सुद्ध है दोषा री थाप नहीं तिण सूं। नीत साफ पिण उपयोग चूकै कर्मा ना उदय थी तेहथी असाध न हुवै। अनें मोहना उदय थी जाण २ नें दोष सेवै दोष री थाप करै दोष रो प्रायश्चित पिण न लेवै तिणसूं असाध हुवै। ❀

: २१५ :

किणही पूछ्यो थारै नें वावीसटोला वाला रै काइ फेर? जद स्वामीजी बोल्या: एक अक्षर रो फरक। एक अकार नो फेर। साध रै अनें असाध रै एक आखर रो फेर है। तेहीज म्हारे ने थारे फेर है। ❀

: २१६ :

कोइ थानक रे अर्थे रुपिया उठकै। जद स्वामीजी बोल्या: ए रुपिया थानक में रहै ज्याराहीज जाणवा जिण ऊपर दृष्टात: असकड़िया गढ़ में इतरो खजीनो ते खजीनो गढपतिनो ईज जाणवो। ज्यूं स्थानक रै अर्थे रुपिया ते पिण परिग्रह थानक मे रहै ज्यारो हीज जांणवो।

: २१७ :

हेमजी स्वामी लिखणो करता हा। स्वामीजी नें पानो वतायो। ओल्या खागी देखनें स्वामीजी बोल्या: करसणी हल खडै ते पिण चामा खरी काढे है। सो ओल्यां वाकी क्यू लिखी। ओल्या पाधरी लिखणी। हेमजी स्वामी बोल्या: तहत स्वामीनाथ! ❀

: २१८ :

स्वामीजी कनै एक ब्राह्मण आयनें पूछ्यौ साधा व्याकरण भण्या हो। स्वामीजी बोल्या : म्हें तो व्याकरण कोइ भण्या नहीं। जद ब्राह्मण बोल्यो : व्याकरण भण्या विना शास्त्र ना अर्थ हुवै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : थें तो व्याकरण भण्या हो। जद ऊ बोल्यो : हुं तो व्याकरण भण्यो छू। थें शास्त्र ना अर्थ कर लेवो। जद ऊ बोल्यो : हुं तो शास्त्र नां अर्थ कर लेवू। जद स्वामीजी पूछ्यो : कयरे मग्गे अक्खाया इणरो अर्थ कहो। जद ऊ ब्राह्मण बोल्यो : कयरे कहता केर। मग्गे कहता मूग। अक्खाया कहता आखा न खाणा। जद स्वामीजी बोल्या : ओ तो अर्थ आयो नहीं। जद ऊ बोल्यो : इणरो अर्थ किम छै। जद स्वामीजी बोल्या : कयरे कहता किसा। मग्गे कहता मोक्ष रा मार्ग अक्खाया कहता तीर्थंकरे कह्या। एहनों अर्थ इम छै।

: २१९ :

संवत १८५४ स्वामीजी ४ साधा सूं खेरवे चौमासो कीधो। तिहां पज्जूसणा में केयक श्रावक गच्छ वास्या कनें सुणवा गया। उपाश्रय वखाण सुणनें पाछा स्वामीजी कनें आया नें कहिवा लागा : स्वामीनाथ आज उपाश्रय वखाण सुणियो तिणमें इसी वात वाची : कुर्मापुत्र केवल ज्ञान ऊपना पछै ६ मास राज कीधो। एतलै २ साध ऊभा वंदना न करी। जद कुर्मापुत्र बोल्या : म्हानें केवल ज्ञान उपनो है नें थें वंदना न करो सो किण कारण। जद साध बोल्या : आप केवली छौ पिण लिंग गृहस्थ नो छै तिण कारण आपनें वंदणा म्हें न कीधी। जद कुर्मापुत्र बोल्या : ठीक कही। अवै जाणीयौ। आ वात आज उपाश्रय सुणी सो साची है काई। जद स्वामीजी बोल्या : आ वात साची जाणै जिणमें सम्यक्त्व नहीं। राज करै ते तो मोह कर्मा रा उदय थी करै। अनें केवली मोह कर्म नें क्षय कियो। सो केवली थया पछै राज किम करै। आ वात वाचणवाला में तो सम्यक्त्व प्रत्यक्ष न दीसै। पिण था सुणवा वाला री पिण संका पड़े है। इम कहे समजाय दियो।

: २२० :

केलवा में नगजी आख्या अखम श्रावक हुंतो। बुद्धि घणी कोइ नहीं। वीरभाणजी कह्यो म्हें नगजी नें समदृष्टी कीधो। जद स्वामीजी बोल्या : समदृष्टी आवै जिसी तो उणरी बुद्धि दीसै नहीं सो समदृष्टी किसतरै कीधो काइ सीखायो। जद वीरभाणजी बोल्या : ओलखणा दोहरा भव जीवा आ ढाल सिखाइ। अनें एक नंदण मणीयारा नो वखाण सीखायो। पछै केलवे स्वामीजी पधास्या। नगजी नें स्वामीजी पूछ्यो तूं नदणमणीयारा नो वखाण सीख्यो है सो ओ मणीयो लकड़ा रो है के सोना रो है के रुद्राक्ष माला रो है। जद नगजी बोल्यो : शास्त्र मे चाल्यो है सो मणियो सोना रो ह्वेला लकड़ा रो रुद्राक्ष रो कीकर हुसी। वलि स्वामीजी पूछ्यो : रे नगजी साधवीया नें जड़णो चाल्यो। सो ए धवीयां गाड़लिया लोहारां नी छोटी धवीया है के बीजा लोहारा नी मोटी धमणि ते मोटी धवीया है। जद नगजी बोल्यो : नान्हीं धवीया क्यांनें हुवै महाराज शास्त्र में कह्यो है सो धवीया मोटी हुसी। पछै स्वामीजी मन में जाण लियो सो बुद्धि विनां सम्यक्त्वी किम हुवै। वीरभाणजी सम्यक्त्वी कियो केहता सो वात कची ठेहरी। ❀

: २२१ :

कहै कोइनें रुपिया दिया उणरी ममता उतरी तिण रो धर्म हुओ। जद स्वामीजी बोल्या : किण रे वीस हल री तथा २० वीगा री खेती हुंती सो १० वीगा तथा १० हल री खेती किण ही ब्राह्मण नें दीधी तो उण रै लेखै या पिण ममता उतरी। ओ पिण धर्म तिणरै लेख कहिणो। ❀

: २२२ :

पाली में हीरजी जती स्वामीजी दिशा पधास्या जद साथे २ जाय। ऊधी २ चरचा पूछै। तिण री श्रद्धा : हिंसा मे धर्म १। सम्यक्त्वी ने पाप न लागै २। सर्व जगत रा जीव मास्या एक समों संसार वधै नहीं ३। सर्व जीव नीं दया पाल्या एक समों संसार घटै नहीं ४। होणहार हुवै ज्युं हुवे

करणी रो काम नहीं केवली देख्यो जद मोक्ष पर हो जासी ५। इत्यादिक विरुद्ध श्रद्धा स्वामीजी कनै कहै। जद स्वामीजी पाछो जाब दीधो नहीं। मारग चालता न बोलणो जिण कारण। जद हीरजी बोल्यो : म्हें कही जिका श्रद्धा थारे पिण वेठी दीसै है जिण सूं थें पाछो जाब दीधो नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : कोइ भूंडसूंरो भिष्टो खातो हो। साहुकार दिशां जातो सेहजै दृष्टि पड़ी देखनें भूंडसूंरो बोल्यो : साहजी रो पिण मन हुओ दीसै है। ज्यूं थें पिण बोलो हो। पिण आ थारी असुद्ध श्रद्धा भिष्टा समान जाणा छा सो मन करनेइ वांछा नहीं। ❀

: २२३ :

एक दिन हीरजी प्रश्न विपरीतपणें पूछवा लागो। कहै मोनें इणरो जाब देवो। जद स्वामीजी बोल्या : कोइ भिष्टा सूं भरीयो ठीकरों लेइ आयो। कहै इणमें मोनें घी तोल दो। तो असुद्ध बासण में घी कुण घालै। ज्यू असुद्ध खोटो विपरीत हुवै तिण नें शुद्ध जाव वताया गुण दीसै नहीं। जिण सूं अवारूं जाव न देवा। ❀

: २२४ :

वैरागी री वाणी सुण्या वराग आवै। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : कसूंबो पोतै गलै जद वस्त्र रैं रंग चढावै। पिण कसूंवा री गाठ बाधै तो पिण वस्त्र रैं रंग न चढै पोते न गल्यो तिण सू। ज्यू सुद्ध श्रद्धा आचार वंत वैरागी साधु पोते वैराग में लीन हुआ औरे वैराग चढावै। ❀

: २२५ :

केइ कहै साध रो धर्म ओर ने गृहस्थ रो धर्म ओर। जद स्वामीजी बोल्या : चोथा गुण ठाणा री अनें तेरमा गुण ठाणा री, श्रद्धा तो एक छै। अनें फर्शणा जुदी छै। काचा पाणी में अपकाय रा असंख्याता जीव अनें नीलण रा अनंता जीव चोथा छठा तेरमा गुण ठाणावाला सर्व सरधं परूपै। पिण फर्शणा में फेर। चोथा पाचमा गुण ठाणा रा धणी तो पाणी रो आरम्भ करे है। अनें साधु रैं त्याग है। ए फर्शणा जुदी है। हिंसा में पाप चोथा छठा तेरमा गुणवाला सर्व सरधे परूपै। इण लेखै सरधणा तो

एक। अनें चोथा पाचमा वाला हिंसा करै है अनें साधु रे हिंसा रा त्याग है। ए फर्शणा जुदी है। पिण सरधणा जुदी नहीं। चोथा तेरमा गुणठाणा-वाली री सरधा एक छै। तेरमा गुण ठाणावाला री श्रद्धा सूं फरक पड़्या चौथा गुणठाणा रो पहलै गुण ठाणै आय जावै। ❀

: २२६ :

रोयट मे स्वामीजी सालभद्र रो वखाण दीधो सो भाया सुण नें घणा राजी हुआ। स्वामीनाथ आगै सालभद्र रो वखाण तो घणी वार सुण्यो पिण इण रीते तो आगै सुण्यौ नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : वखाण तो ऊहीज है पिण कहिण वाला रें मूंहढा मे फेर है। ❀

: २२७ :

किणही पूछ्यौ पोसा वाला नें जागा दीधी जिणरो कांइ हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : उण कह्यो म्हारी जागा मैं पोसो करो इम कहिण वाला नें धर्म। जद फेर पूछ्यो जागा दीधी जिण नें काइ हुवो। जद स्वामीजी बोल्या : जागा किसी आघी दीधी है। जागा मैं पोसा री आज्ञा दीधी जिण रो धर्म है। जागा तो परिग्रह मांहिं छै ते सेव्या सेवाया धर्म नहीं। सामायक पोसारी आज्ञा देवै ते धर्म है। ❀

: २२८ :

कोइ कहै सामायक मे पूजनें खाज खणै तो श्रावक नें धर्म है। विना पूज्या खाज खणें तो पाप लागै। जद स्वामीजी बोल्या : कीड़ी माछर सामायक में चटको दियौ ते चटको काया रे दियो के सामायक रै दियौ। जद तिण कह्यो : चटको काया रै दियो। जद स्वामीजी बोल्या : पूज नें खाज खणै है सो जावता सामायक रा करै है के काया रा करै है। जद उण ऊंधी श्रद्धा सूं कह्यो : जावता सामायक रा करे है। जद स्वामीजी बोल्या : खाज न खणतो तो ही समायक रा जावता तो अपूठा घणा हुंता। जे विना पूज्या खाज खणवारा त्याग। जो पूजै नहीं तो खाज खणणी नहीं। खाज न खणै तो मछरादिक ना चटका सह्या निर्जरा घणी हुंती। तिण सूं सामायक घणी पुष्ट हुंती। तिण कारण पूंजै सो

करणी रो काम नहीं केवली देख्यो जद मोक्ष पर हो जासी ५। इत्यादिक विरुद्ध श्रद्धा स्वामीजी कनै कहै। जद स्वामीजी पाछो जाब दीधो नहीं। मारग चालता न बोलणो जिण कारण। जद हीरजी बोल्यो : म्हैं कही जिका श्रद्धा थारै पिण बेठी दीसै है जिण सूं थें पाछो जाब दीधो नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : कोइ भूंडसूं रो भिष्टो खातो हो। साहुकार दिशां जातो सेहजै दृष्टि पड़ी देखनें भूडसूंरो बोल्यो : साहजी रो पिण मन हुओ दीसै है। ज्यूं थें पिण बोलो हो। पिण आ थारी असुद्ध श्रद्धा भिष्टा समान जाणा छा सो मन करनेइ वांछा नहीं। ※

: २२३ :

एक दिन हीरजी प्रश्न विपरीतपणें पूछवा लागो। कहै मोनें इणरो जाब देवो। जद स्वामीजी बोल्या : कोइ भिष्टा सूं भरीयो ठीकरों लेइ आयो। कहै इणमें मोनें घी तोल द्यौ। तो असुद्ध बासण में घी कुण घालै। ज्यूं असुद्ध खोटौ विपरीत हुवै तिण ने शुद्ध जाब बताया गुण दीसै नहीं। जिण सूं अबारू जाब न देवा। ※

: २२४ :

वैरागी री वाणी सुण्या वराग आवै। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : कसूंबो पोतै गलै जद वस्त्र रै रंग चढावै। पिण कसूंबा री गाठ बाधै तो पिण वस्त्र रै रंग न चढै पोते न गल्यो तिण सू। ज्यूं सुद्ध श्रद्धा आचार वंत वैरागी साधु पोते वैराग में लीन हुआ औरे वैराग चढावै। ※

: २२५ :

केइ कहै साध रो धर्म ओर नें गृहस्थ रो धर्म ओर। जद स्वामीजी बोल्या : चौथा गुण ठाणा री अनें तेरमा गुण ठाणा री, श्रद्धा तो एक छै। अनें फर्शणा जुदी छै। काचा पाणी मे अपकाय रा असख्याता जीव अनें नीलण रा अनंता जीव चोथा छठा तेरमा गुण ठाणावाला सर्व सरधै परूपै। पिण फर्शणा में फेर। चोथा पाचमा गुण ठाणा रा धणी तो पाणी रो आरम्भ करे है। अनें साधु रै त्याग है। ए फर्शणा जुदी है। हिंसा में पाप चोथा छठा तेरमा गुणवाला सर्व सरधे परूपै। इण लेखै सरधणा तो

एक। अनें चोथा पाचमा वाला हिंसा करै है अनें साधु रे हिंसा रा त्याग है। ए फर्शणा जुदी है। पिण सरधणा जुदी नहीं। चोथा तेरमा गुणठाणा-वाली री सरधा एक छै। तेरमा गुण ठाणावाला री श्रद्धा सूं फरक पड़्यां चौथा गुणठाणा रो पहलै गुण ठाणै आय जावै। ❀

: २२६ :

रोयट में स्वामीजी सालभद्र रो वखाण दीधो सो भाया सुण नें घणां राजी हुआ। स्वामीनाथ आगै सालभद्र रो वखाण तो घणी वार सुण्यो पिण इण रीते तो आगे सुण्यौ नहीं। जद स्वामीजी वोल्या : वखाण तो ऊहीज है पिण कहिण वाला रे मूंहढा में फेर है। ❀

: २२७ :

किणही पूछ्यौ पोसा वाला नें जागा दीधी जिणरो कांइ हुवै। जद स्वामीजी वोल्या : उण कह्यो म्हारी जागा मैं पोसो करो इम कहिण वाला नें धर्म। जद फेर पूछ्यो जागा दीधी जिण नें काइ हुवो। जद स्वामीजी बोल्या : जागा किसी आघी दीधी है। जागा मैं पोसा री आज्ञा दीधी जिण रो धर्म है। जागा तो परिग्रह माहिं छै ते सेव्यां सेवाया धर्म नहीं। सामायक पोसारी आज्ञा देवै ते धर्म है। ❀

: २२८ :

कोइ कहै सामायक में पूजनें खाज खणै तो श्रावक नें धर्म है। विनां पूज्या खाज खणे तो पाप लागै। जद स्वामीजी वोल्या : कीडी माछर सामायक मे चटको दियो ते चटको काया रे दियो के सामायक रै दियौ। जद तिण कह्यो : चटको काया रै दियो। जद स्वामीजी वोल्या : पूज नें खाज खणै है सो जावता सामायक रा करै है के काया रा करे है। जद उण ऊंधी श्रद्धा सूं कह्यो : जावता सामायक रा करे है। जद स्वामीजी वोल्या : खाज न खणतो तो ही समायक रा जावता तो अपूठा घणां हुंता। जे विना पूज्या खाज खणवारा त्याग। जो पूजैं नहीं तो खाज खणणी नहीं। खाज न खणै तो मछरादिक ना चटका सह्या निर्जरा घणी हुंती। तिण सुं सामायक घणी पुष्ट हुंती। तिण कारण पूजै सो

सामायक रा जावता रै अर्थ न पूंजै। अनै जे चटको काया रै दियो पिण सामायक रै न दियो इम तो तेहिज कहै। तो काया रा जावता रे अर्थ शरीर पूंजै ने खाज खणै छै। पिण सामायक रा जावता रै अर्थ पूंजै नहीं। जे अढाई द्वीप वारला तिर्यंच श्रावक सामायक पोसा करै ते किसी पूंजणी राखै छै। अनें सामायक रा जावता तो त्यारै पिण तीखा छै। अजैणा न करै ते हीज सामायक रा जावता छै। ❀

: २२९ :

पोसा मे श्रावक कोइ तो वस्त्र घणा राखै कोइ थोड़ा राखै। घणा राखै जिण रै घणी अव्रत। थोड़ा राखै जिण रै थोड़ी अव्रत। जद कोई कहै पोसा में पड़िलेहण न करै तो उणनें प्रायश्चित्त क्यूं देवै। जद स्वामीजी बोल्या : पोसा में अण पड़िलेह्या उपगरण भोगवण रा त्याग। तिण पड़िलेह्या तो नहीं अनैं भोगव्या जिण लेखै त्याग भागा। तिणरो प्रायश्चित्त आवै। पोसा मे पिण शरीर अव्रत में है। ते शरीर नीं साता रै अर्थ वस्त्रादिक आधा पाछा पूंजणादिक करै ते सावद्य छै। जे वस्त्र राख्या जिणरो पड़िलेहण न करै अनें न भोगवै तो विशेष कष्ट उपजै तिण सूं पोसो अपूठो पुष्ट हुवै। ते कष्ट सहिण री समर्थाई नहीं, तिण सूं वस्त्रादिक पड़िलेही भोगवै छै। जिम कोइ रै अण छाण्यो पाणी पीवा रा त्याग। हिवै ते पाणी छाणै ते पीवा रै वासतै पिण दया रै वासते नहीं। नहीं छाणै तो दया अपूठी चोखी पालै। ते किम। जे न छाणै जद पीणो नहीं। जे अणछाण्यौ पीवारा तो त्याग अनें छाणै नहीं तो पीणो पड़ैई नहीं। इण वासतै जे छाणै ते पोता री अव्रत सेवा रै वासते छाणै। तिण में धर्म नहीं। ❀

: २३० :

केई कहै श्रावक री अव्रत सींच्या व्रत वधै। तिण ऊपर कुहेतु लगावे : नींवरा रूंख में आंबो रूंख ऊगो। नींव री जड़ीया मे पाणी कूडय्या नींवने आंबो दोनूंई प्रफुल्लित हुवै, ज्यूं श्रावक री अव्रत सींच्यां व्रत अव्रत दोनूं वधै। जद स्वामीजी बोल्या : इम अव्रत सींच्या व्रत वधै तो तिण रै लेखै

जावक स्त्री सेवै तिण पिण अव्रत सेवी तिण सूं व्रत पुष्ट हुवै। तथा नींबरी जडीया में अग्नि न्हाख्या दोनूं बलै ज्यूं किणहि जावजीव शील आदर्‌यौ तौ अव्रत बाली तिण रै लेखै व्रत अव्रत दोनूं बलै। तथा गृहस्थ ने पारणो कराया अव्रत सींची तिण सू व्रत वधती कहै तो तिण रै लेखै उपवास कराया अव्रत सूका व्रत पिण सूक जावै। इम हिंसा भूठ चोरी मैथुन परिग्रह सेव्या सेवाया अव्रत सींची तो उण रै लेखै व्रत पिण वधती कहिणी। तथा हिंसा भूठ चोरी मैथुन, परिग्रह रा त्याग किया कराया अव्रत सूकै तो तिण रै लेखै व्रत पिण सूकी कहिणी। ❀

: २३१ :

केइ कहै सावद्य दान में पुन्य पाप मिश्र न कहिणो तिण सूं सावद्य दान में म्हैं मून राखा। जद स्वामीजी मुनी रो दृष्टान्त दियो। ज्यूं एक मुनी गाम मे आयो। साथै मोकला चेला। आटो घी गुल मूंहढा सूं बोलने तो मागै नहीं पिण सानी करनें मागै। आगुलिया ऊंची करै : इतरा सेर आटो इतरा सेर घी इतरी दाल इतरो गुल। जद गाम रा चौदरी पटवारी ओछौ धामें जद चेला नें हुंकारो करनें घर हाटां रा कैलू फोड़ावै। जद लोक बोल्या :

मुनि मून पारसी भणै, हूकारै षट काया हणै।
अण बोल्याई उदम करै, तो बोल्या कहो काह गति करै ॥

स्वामीजी बोल्या : जिसी उण मुनि री मून जिसी सावद्य दान में थारै मून है। मूंहढा सू तो मून कहिता जाए पिण श्रावक श्रावका नें जीमाया पुन्य मिश्र री आमना करै। लाडूआ री दया पलावा री आमना करै। ❀

: २३२ :

···पोते हाथै तो कमाड जड़ै उघाड़ै अनें गृहस्थ खोलनें देवै तो लेवै नहीं तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो : जिम कोइ मानवी पर गाम जाता भंगी भींट लियो। उणनें पूछ्यो तूं कुण। जद तिण कह्यो हूं भगी छ। जद तिण कह्यो म्हारो भातो भींट लियो। इम कहिता माहो मांहि

गालि रालि बोलता बथोबथ आय गया। भंगी ऊपर आय बैठो। भंगी कहै मोनें छोड़। जद ऊ कहै छोड़ूं नहीं। जद भंगी कहै तूं कहै ज्यूं करू मोनें छोड़। जद ऊ बोल्यो : थारी स्त्री कनें चौको दराय कोरा घडा में पाणी मंगाय महाजन रा हाट सूं आटो लेईं इसी री इसी रोटी कराय देवै तो छोड़ूं। जद भंगी कबूल करी। उण कह्यौ जिण रीते स्त्री कनें रोटी कराय दीधी। जे समजणो हुवै ते उणनें मूरख जाणै। जे भंगी री भीटी तो न खाधी नें भंगी री कीधी खाधी तिण सू उणनें विवेकरो विकल जाणै। ज्यूं गृहस्थ कमाड़ खोलनै देवै ते तौ लेवै नहीं अनें अंधारी रात्रि मे हाथ सू कमाड़ जड़ै उघाड़ै तिण री संक आणै नहीं। ❀

: २३३ :

केई कहै कारण पड़िया साधू नें असूझतो लेणो। अनें श्रावक नें पिण अल्प पाप बहुत निरजरा ह्वै। जद स्वामीजी बोल्या : रजपूत रौ बेटो संग्राम करतां न्हास जावै ते सूर किम कहीये। तिण ने राजा पटो किम खावा दे। लोकीक मे आबरूं किम रहै। भूंडो दीसै। ज्यूं भगवत रा साधु बाजै नें कारण पडिया असूझतो दियां अल्प पाप बहुत निरजरा कहै असूझता री थाप करै ते इहलोक परलोक में भूंडा दीसै। ❀

: २३४ :

हलुकर्मी जीव खोटा गुरु छोडनें साचा गुरु करै। जद तथा त्यारा रा श्रावक कहै : पाली में विजैचंद पटवो रुपीया देईनें श्रावक करे है। जद स्वामीजी बोल्या : थारा श्रावक रुपिया साटै परहा जावै जद उणां थारो मारग काई ओलख्यौ। अनै रुपिया साटै ए समज्या कहो छो तो बाकी रा पिण रुपिया साटै परहा जाता दीसै है। इण लेखै थारौ मारग उणा औलख्यौ नहीं। ❀

: २३५ :

सावद्य दान देवै लेवै ते वेला साधु नें पूछें तो वर्तमान काल में मून राखणी तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : हलवाणी रा छेहड़ा टोनू

कानीं वलै अनें वीचै ठंडी। उठी सूं पकड़्या हाथ बलै नें दूजा छेहड़ा सूं पकड़ै तोही हाथ वलै। विचासूं पकड़्या हाथ न बलै। ज्यूं वर्तमान काले सावद्य दान में पुण्य कह्यां छ काय री हिंसा लागै। पाप कह्या अंतराय पड़ै। तिण सूं ते काल में मून राखणी। ❀

: २३६ :

कोई कहै भगवान् नीलोती खावा नें वणाई है। जद स्वामीजी बोल्या : थारै लेखै नाहर आयां तूं क्यू न्हासै। तोनेंई भगवान् नाहर रो भक्ष वणायो है। सो थारै लेखै नाहर रै खावानें तोनेंई वणायौ। जद ऊ बोल्यो : म्हारो जीव दोहरो हुवै दुख पावै। सर्व जीव पिण इम हीज जाण। मार्‌या दुख पावै है। ❀

: २३७ :

हेमजी स्वामी दीक्षा लेवा त्यार थया जद किणही गृहस्थ स्वामीजी नें कह्यौ : महाराज हेमजी दीक्षा लेवा त्यार थया पिण तमाखू रो व्यसन है। जद स्वामीजी वोल्या : काचरीया रौ अटक्यौ किसो विवाह रहे है। ❀

: २३८ :

पुर में छाजू खाभीयो स्वामीजी कनें आयनै आबूगढ़ तीर्थ ताजा आ ढाल कहिवा लागो। तिण मे गाथा। आबूगढ तीर्थ नहिं जुहारयो। तिण एहल जमारो हारयौ। जद स्वामीजी वोल्या : आवूगढ़ थें जुहार्‌यौ के नहीं जुहार्‌यौ। जद छाजूजी बोल्यो महाराज म्हें तो आवूगढ़ कोई जुहार्‌यो नहीं। जद स्वामीजी वोल्या : इण लेखै थारो जमारो तो एहल ईज गयौ। जद छाजूजी वोल्यो : वापजी म्हारा गला मे ईज घाली। ❀

: २३९ :

पुर माहें भानौ खाभीयौ स्वामीजी कनें आय वोल्यो : महाराज भीलाडा में दया पाली। सात रुपिया रा पकवान मुरमुरीयां आदि हुंता तिण मे १६ जणा चूकाय गया। कलाकंद वधियो सो आथण रा दही मे न्हाख सवर २ सबोर गया। जद स्वामीजी कह्यौ : तूं कहितोई इसो लोलपणो करै है सो

खातां किसोयक अनर्थ कीधो हुवैला। जद भानो खामीयो बोल्यो : म्हारे साथै वर्ष पाचेक रो डावरी थो सो उणनें तो हाथ पकड़ उठाय दियो। काले ओ कीसो उपवास करेलो इम कहि डावडा नै उठाय दियो। जद स्वामीजी बोल्या थें तो इसौ आहार कियो है सो स्त्रीयादिक थी अकार्य ही कर उभो रहै अनें ड़ावडो तो इसो काम करतो नहीं। सो तो तोनें पोष्पो ने उण ने उठाय दियो सो इसो थारो धर्म ने इसी थांरी दया है। ✿

: २४० :

भीखणजी स्वामी रुघनाथजी कनें घर छोडवा त्यार थया। जद स्वामीजी री भूआ बोली। दीक्षा लीधी तो हूं कटारी खायनें मर जासू। जद घर में छता स्वामीजी बोल्या : पूणी नहीं है सो पेट में घालै। कटारी घणी करली है सो इसी बात क्यूं करै। ✿

: २४१ :

.... कहे म्हे २२ टोला एक छा। अनें भीखनजी न्यारा है। जद किणही कह्यौ थारे माहों माहिं वणै नहीं नै भीखणजी सूं चरचा रो काम पड़्या एकै क्यूं थावो। जद .... बोल्या : रजपूता रै भाया २ रै तो माहों माहिं वणै नहीं पिण चोर नै काढ़वा सर्व एकै होय जावे। ए बात स्वामीजी सुणी नै दृष्टात दियो। वास रा कुतारै माह माहिं तो कजियौ। उण वास रा कुता दूजा वासवाला नै ।आवा दे नहीं। दूजा वासवाला स्वान उण वासवाला ने आवा दे नहीं आपस में माहों लाहिं कजिया घणा करै। अनें हाथी नीकल्यां सगला भेला होय नै भूसवा लाग जावै। त्यां स्वान रै माहो माहिं कट एको थो। पिण हाथी री वेला सर्व एकै होय जावै। इसौ स्वान रो स्वभाव। ज्यूं .. .... माहों माहिं उवे तो उणा री श्रद्धा खोटी कहै। उवे उणां री श्रद्धा खोटी कहै। माहों माहिं अनेक बोला रो फेर आपस में केयक साध पिण न सरधै। अनै साधा सूं चरचा रो काम पड़ै जद स्वान ज्यूं एकै होय जावै। ✿

: २४२ :

बावीस टोला में केयक तो लाल बाली ठंडी रोटी मे बेंद्री जीव कहै।

पगा में बाला, ज्यूं रोटी में लाला यूं कहै अनै केयक टोला वाला ठंडी रोटी वहिरनै परही खाए छै। जिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : कोई मूठी भरया चणां गोहूं खावै तो उणनें साधु कहीजै के असाधु कहीजै ? जद ते बोल्या : गोहूं खाए तिणनें तो असाध कहीजै। जद स्वामीजी बोल्या : गोहूं खाए तिणनें असाधु कहीजै तो लटा खाए जिणनें साधु किम कहियै। जे ठंडी रोटी में जीव कहे त्यारे लेखे ठंडी रोटी खाए ते लटां रा खाणहार। ते लटा रा खाणहार नें साधु किम कहिये। इण न्याय ठंडी रोटी में जीव कहै त्यारै लेखै ठंडी रोटी खाननहार असाध ठहर्या। अनै जे ठंडी रोटी खाए त्यानें पूछीजे : जे भूठ बोलै ते साध के असाध ? जद ते कहै असाध। जद स्वामीजी बोल्या : थें तो ठंडी रोटी नें अजीव कहो अनै उवे वेइंद्री जीव कहै। इम थारै लेखै इज भूठा बोल्या। उणा नें कहीजै : त्यां भूठा बोलाने साधु किम कहीजै। तथा थें तो ठंडी रोटी नें अजीव कहो अनै उवे ठंडी रोटी में जीव कहै। अनै अजीव ने जीव सरधै तिण नें मिथ्यात्वी कह्या छै। इम थारे लेखै ठंडी रोटी में जीव कहै त्यानें मिथ्यात्वी कहीजै। इम उणा रै लेखै उवे असाध अनै उणांरै लेखै उवे असाध। अनै मुख सू कहै म्हें माहोंमाहिं साध सरधां छा। एहवो त्यारै मिथ्यात्व रूपीयो अंधारो घट में छै। ❀

: २४३ :

किणही कह्यो : भीखनजी थें तो जोड़ा घणी करो। जद स्वामीजी बोल्या : एक साहुकार रे दो बेटा। एक तो जोड़ै ने एक तोड़ै गमावै। हिवै जोड़ै ते आछो के तोड़ै गमावै ते आछो। संसार नै लेखै जोड़ै तिणनें आछो कहै। तोड़ै गमावै तिणनें आछो न कहै। इम कहीं कष्ट कीधो। ❀

: २४४ :

आगरीयां में प्रतापजी कोठारी बोल्यो : स्वामीनाथ ! आप जोड़ा किसतरै करो छो। जद स्वामीजी एक टोपसी में सपेतो हुंतो इतलै वायरो वाज्यो। एहवो प्रस्ताव देखनै आप गाथा जोड़ता थकाईज बोल्या : ।

न्हानीं सी एक टोपसी।
माहें घाल्यो सपेतो।
जत्न घणाकर राखजो।
नही तो पड़ेला रेतो ॥१॥

ए गाथा जोड़ता बोल्या : यूं जोड़ा छां। जद प्रतापजी सुणनें घणौ राजी हुओ। ❀

: २४५ :

श्री जी दुवारा में छपना रै वर्ष एक दादुपंथी आयो। स्वामीजी रो वखाण सुणनें घणो राजी हुओ। सुणता २ एक दिन स्वामीजी ने कहै। आप श्रावकां नै कहो सो मोनैं साता उपजावै। जद स्वामीजी बोल्या : श्रावका नें कहिनै तोनै जीमावौ भावै पात्रा माहिं थी काढने देवो। गृहस्थ नें कहिणो हुवै तो रोट्या वधती वहिरनें ईज तोनें परही देवा। जद दादु-पंथी बोल्यो : तो थारे श्रद्धा लोका नें वरजवारी नें कहिवारी है। जद स्वामीजी बोल्या :। देता नें ना कहो भावै थारो खोसल्यौ। पछै दादुपंथी चालतो रह्यौ। ❀

: २४६ :

पोता नीं महिमा वधारवा छल सूं बोलै ते ओलखायवा अर्थे स्वामीजी दृष्टात दियौ : किणही वेलो कियौ। ते आप रो वेलो चावो करवा उपवास-वाला रा गुण करै : तूं धन है सो इण करली ऋतु में उपवास कियो है। जद उपवासवालो बोल्यौ : म्हें तो उपवास ईज कियो है। पिण थे वेलो कीधो है सो थानें धन है। इम छल वचन करी आप रो वेलो चावो करै ते मानी अहंकारी जाणवो। ❀

: २४७ :

रुघनाथजी री मा पिण घर छोडनें उणा में भेष लियो हुंतो। सो ढील मे कारण पड्यो। जद रुघनाथजी बोल्या : भीखणजी संसार रै लेखें म्हारी मा नें दर्शन दीजो। जद स्वामीजी दर्शन देवा गया। थानक जायनें त्यां आर्या नें पूछ्यो। जद आर्यां कह्यो : उवै तो गोचरी गया। जद

स्वामीजी पाछा आया। जद रुघनाथजी कह्यो : थें दर्शन दिया। जद स्वामीजी बोल्या : किसी ठीक। किण मेडी ऊपरं गोचरी करै। सो हूं कठै दर्शन देवू। आ वात टोला माहि थका री छै। ❀

: २४८ :

केइ हिंसाधर्मी कहै : एकेंद्री विचै पंचैद्री रा पुन्य घणा तिणसू एकेंद्री मार पंचेंद्री वचायां धर्म घणो हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : एकेंद्री थी वेंद्री रा पुन्य अनंत गुणा। वेंद्री थी तेंद्री रा पुन्य अनंत गुणा। चउरेंद्री थी पंचेंद्री रा पुन्य अनंत गुणा। अने कोई पंचेंद्री मरतो हुवै तिणनें पइसाभर लटा खवायनें वचायो तिणनें धर्म हुवै के पाप हुवै। इम पूछ्या जाव देवा असमर्थ थयो। स्वामीजी बोल्या : जिम वेंद्री मार पंचेंद्री वचायां धर्म नही तिम एकेंद्री मार पंचेंद्री वचाया धर्म नहीं। ❀

: २४९ :

हिंसाधर्मी इम कह्यो : आचार्य उपाध्यायादिक वड़ो साधु हुंतो ते विषय रो वाह्यो गृहस्थ होयवा लागो। जद कोई श्रावक आपरी वहिन वेटी सू अकार्य करायनें पाछो थिर कीधो। तिण रो वडो लाभ हुवो। जद स्वामीजी वोल्या : थारा गुरु भ्रष्ट हुंता हुवै तो थांरी वहिन वेटी सूं इसो काम करावो के नहीं? जद ते वोल्या : म्है तो इसो काम न करावा। जद स्वामीजी वोल्या : थें इण वात रो धर्म कहो तो इसो कार्य क्यूं न करावो। थें इसो काम न करावो तो वीजारै वहिन वेटी किणरै ऊगलतू पडी है। इसी ऊंधी परूपणा तो कुशीलिया कुपात्र हुवै सो करै। ❀

: २५० :

अढाई सो वेला आदि तप पूरो थया पछै आप २ री सामग्री में लाडू दरावै छै। जद स्वामीजी वोल्या · ए आपरै मुतलव लाडू दरावै छै। जाणै म्हानेंई वहिरावसी। जद किणही कह्यो सामीनाथ ए लाडू किसा सगलाई वहिरे छै। जद स्वामीजी दृष्टांत दियो : एक साहुकार री वेटी परणीजै जद चंवरी मे ब्राह्मण वेद पाठ भणतो पोता री डावरी कनें घी

चोरावा री धुन उठाई : घी चोरे २ घी चोरे २। जद डावरी बोली : स्या में चोरू ४। जद ब्राह्मण बोल्यो : कोरू करवू ४। जद ड़ावरी बोली : सुंस जासी ४। जद ब्राह्मण बोल्यो : तुम्हारा वाप नों स्यूं जासी ३। जद तिहा गीतां में जाटणी वेठी थी ते घी चोरावा री धुन में समझ गई। जद जाटणी गीत में गावा लागी : सुणजो हो वनरो रा बाबा थारो घृत सूसत है। जद

ब्राह्मण जाटणी नै कह्यौ : रड़ेम करी सवाद। अर्द्धो अर्द्ध समायरे।

स्वामीजी बोल्या : ज्यूं तिण ब्राह्मण कोरा करवा में घी चोरायो। सुसजाए तो पिण जाण्यौ पानें पड़्यो सोही खरो। जाटणी नै आधो घृत पिण देणों ठहराय दियो। तिम· ··· · पिण सामग्री में लाडू दरावै ते सर्व न वहिरावै कायक छोरा-छोरी पिण खाय जावै। तो पिण देखै पानै पड़्यौ सोही खरो। इम आप रे मुतलव ए रीत ठैहराइ है। ❀

: २५१ :

न्याय री सीख न मानें अनें अजोगाई अन्याय करै तिण नें पाधरौ करवा ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो। एक साहुकार री हवेली मूंहढै रावलिया तमासो माड्यो। जद साहुकार वरज्यो। इण ठाम तमासो मत करो। लुगाया बहू वेटी सुणें थें मूहढा सू फीटा बोलो। ते कारण म्हारी हवेली रै मूहढे तमासौ मत करो। इम समजाया पिण रावलिया मान्यो नहीं। तमासो मांड्यो। लोक घणा भेला हुआ। रावलिया तान कर रह्या। जद साहुकार हवेली ऊपर नगारा री जोड़ी चढ़ाय छोहरा नें कह्यो : नगारा वजावौ। जद छोहरा नगारा वजावा लागा। जद रामत में भंग पड्यौ। लोक वीखर गया। रावलिया रे हाथे दान पिण न आयौ नें भूंड़ा पिण दीठा। ज्यूं कोई न्याय री सीख न मानै अन्याय करै जद बुद्धिवत बुद्धिकर कष्ट करें। कला चतुराईकर अन्याई नें पाधरो करै। ❀

: २५२ :

साधु वखाण देवै। तिहा परपदा मोकली देख नें उपगार मोकलो देखनें ········ तथा ··· ···· रा श्रावक साधा री निंदा करे लोका ने भेला

करे तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : किणही साहुकार रै हाटे गराक घणा। भीड़ घणी देखनें पाड़ोसी देवाल्यो तिणनें गमें नहीं। जाण्यौ इण रे इतरी भीड़ तो हूँ पिण मनुष्या नें भेला करूँ। इम विचार कपड़ा न्हाख नागो हूंओ। नाचवा लागौ। मनुष्य तमासो देखवा घणा भेला हुआ। जद ओ मन में राजी हूओ। ज्यू साधा कनें परिषदा देख नें तथा त्यांरा श्रावकां नें गमें नहीं जद ते पिण कदाग्रह करै। मनुष्य भेला करै ❀

: २५३ :

संवत १८५५ पाली चोमासै खेतसीजी स्वामी रे कारण ऊपनो रात्रि दिशा रो उलटी रो। जद स्वामीजी हेमजी स्वामी नें जगायनें खेतसीजी स्वामी रसते पड़या सो आप खाच पकड़नें ले आया। स्वामीजी बोल्या : संसार नीं माया काची। खेतसीजी सरीपो यू होय गयौ। पछै खेतसीजी स्वामी नें सुवाणनें सिराणा माहि थी नवी पछेवडी काढनें ओढाय दीधी। थोड़ी वेला पछै सावचेत थया। मूहढै बोलवा लागा। जद कह्यौ : आप रूपाजी नें आछीतरै भणावजो। जद स्वामीजी बोल्या : तू तो भगवान रो स्मरण कर। रूपाजी री चिंता क्या ने करै। पछै खेतसीजी स्वामी रो पिण कारण मिट गयौ ❀

: २५४ :

सुपात्रदान री कला सीखावबा ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : किणही गाम में साधा चोमासौ कीधो। एकातर गृहस्थ रै अंतराय तुटै तो दोय महिना जोग मिल्या पातरै २ पाव २ घी वहिरावै तो चोमासा मे १५ सेर रै आसरे थयो। ४।५ रुपिया रै आसरै थयो। तिण में रसायण आवै तो तीर्थंकर गोत्र बंधै। कोई अनेक भव छेदकर देवै। अनें छकाय रा प्रतिपाल करै। साता ऊपजै। अनै गृहस्थ रै आरा मोसर में व्याह में अनेक रुपिया लगावै तिण में पाच रुपिया तो कठीने जावै। ए शीख श्रावकां नें तारवा भणी स्वामीजी दीधी। ❀

: २५५ :

किणही साहुकार आरो कियो। घणा गाम नैह्त्या। लोक जीमता कायक वारदानों घट गयौ। जद पर गाम रा आया ते तो जीम्या नहीं तो पिण कहै आरा जगारा है सो घटताइ आया है वधताई आया है। वली वेहिज कहै घड़ी दो घड़ी पछै जीमसा काइ कारण नहीं। अनै एक जणौ उण साहुकार रो घेपी बाजार में आय गदरा ऊपर तो लोटै है अनै मूहढा सू कहै आरौ विगड़यो रे विगड़यो। जद किणही पूछ्यौ करियावर में गुल गालवा में तो थेंई सैमल ईज हुसो नें वारदानौ घट्यौ क्यूं ? जद ऊ बोल्यौ : नहीं सा। म्हानें पूछ्यौ ही कदी। म्हानें पूछ्यौ हुवै तो वारदानो घटै ईज क्यूँ। अने आरौ विगड़ै ईज क्यूं। जद वलि उण ने पूछ्यौ थें जीम्या के नहीं। जद ऊ बोल्यो : म्है तो आछीतरै जीम लिया। पहिलाई जाणता था। इणरै वारदानो घटतो दीसे है। हिवै स्वामीजी बोल्या : इसा पूतला कुपात्रा नें पोख्या सो आरो काइ विगड़ै वापरा रो जमारौ विगड़तो दीसै है। ❀

: २५६ :

आमेट में पुर रा बाइ भाइ वादवा आया। त्या चरचा करता पूछ्यो ६ पर्याय १० प्राण जीव के अजीव। जद कोइ तो जीव कहै। कोइ अजीव कहै। इम आपस में ताण घणी करवा लागा। पछै स्वामीजी नें आय नें पूछा कीधी : महाराज ६ पर्याय नें १० प्राण जीव के अजीव। जद स्वामीजी बोल्या : जिण चरचा मे भर्म हुवै ते चरचा करणीज नहीं ओर ही घणी चरचा है। इम कही समझाय दिया। ताण मेट दीधी ❀

: २५७ :

संसार नो मोह ओलखायवा स्वामीजी दृष्टात दियो। कोइ परण्या पछै बाल अवस्था मे आउपो पूरो कर गयो। जद लोक में घणो भयंकार मच्यौ। लोक हाय हाय करता कहै : वापरी छोहरी रो काइ वाट हुसी। वापरी १२ वर्ष री राड़ हुई सो आ दिन किण रीत सूं काटसी। इम विलाप

करै। स्वामीजी बोल्या : लोक तो जाणै ए दया करै है पिण एतो उणरा कामभोग वाछै है। जाणै ऊ जीवतो रह्यौ हुंतो तो इण रै २।४ डावरा डावरी हुंता। आ सुख भोगवती तो ठीक इम वाछै पिण या न जाणै आ घणा कामभोग भोगवती माठी गति में जाती। जिणरी चिंता नहीं तथा ऊ किसी गति में गयो तिका पिण चिंता नहीं। ज्ञानी पुरुष हुवै ते तो मरण जीवण रो हर्ष सोग न आणै ❀

: २५८ :

हेमजी स्वामी घर में था जद एक वहिन थी तिण नें मामो आय मौसाले ले गयो। हेमजी स्वामी चिंता करवा लागा। भीखणजी स्वामी कनें आय कह्यौ : स्वामीनाथ आज तौ मन उदास घणो। वहिन री मन में घणी आवै। असवार लारे मेलनें पाछी बोलाय लेहूं मन में तो इसी आवै। जद स्वामीजी वोल्या : इसा संसार ना सुख काचा। संजोग रो विजोग पड जावै। शारीरिक मानसिक दुख ऊपजै। जठे भगवान मोक्ष रा सुख सास्वता स्थिर कह्या है। उठै सुखा रो कदेइ विरहो पड़ै ईज नहीं। ए स्वामीजी रा वचन सुणनें संतोष आय गयो। ❀

: २५९ :

एक आर्य्या पाली में वेलो कियो। पछै पारणा री आज्ञा मागनें आरा वाला रा घर सूं दूजै दिन पारणो करवा लापसी आणी। स्वामीजी नें दिखाई। पछै स्वामीजी विचार्यो नें पूछ्यो थें वेलो कियो सो इण लापसी रे वास्ते ईज न कीधो है। साच वोल। जद आर्या बोली : स्वामीनाथ मन में आइतो खरी। जद स्वामीजी ओर साध साधव्या नें आरा रै दूजै दिन जाणो वरज दियो। आचार्य कनें साध साध्वी त्यारी वरजणा न कीधी ❀

: २६० :

संवत १८५७ स्वामीजी पुर चौमासो कीधो। फोजवाला आवता जाण नें स्वामीजी विहार करवा लागा। जद भाया बोल्या : आप विहार क्यूं करो। जद स्वामीजी वोल्या : आगै अठै टोलावाला चौमासो कीधो।

फौज रा जोग सूं गाम रा लोक केइ परहा गया। पिण टोलावाला बोल्या : म्है तो चौमासा में विहार न करा। इसी अडवी सूं विहार न कीधो। पछै फौज आई टोलावाला नागोरयां री गुवारी में जाय रह्या। त्यांनें पकड़नें कह्यौ : माल बतावौ। मरचा री धूई दीधी। मरचां रो तो वडो मूंहढै वाध्यो। परीषह घणो दीधो। तिण कारण विहार करण रा भाव है। रहिवा रा भाव नहीं। जद भाया बोल्या : महाराज ! आप विहार मत करौ। म्हैं आपनें आछी तरै लेजावसा। आपनें मेलनें जावां नहीं। जद स्वामीजी सुसता रह्या। पछै फौज्र रो हलवलौ पड़यौ जद भाया तो रात्रि रा कानी २ न्हास गया। प्रभाते स्वामीजी पिण विहार करनें गुरलां पधारया। केइ भाया पिण गुरला आया। त्यांनें स्वामीजी कह्यौ : थें कहिता था म्हैं साथे आवसा सो पहिला रात्रि रा न्हास नै उरहा आया। जद भाया बोल्या : म्हैं मगरी ऊपर ऊभा देखता था। उवे स्वामीजी पधारै २। जद स्वामीजी बोल्या : अलगा ऊभा देख्यां काई हुवै। थें कहिता था म्हैं साथै रहिसा सो साथै तो रह्या नहीं। गृहस्थ रो काई भरोसो। गृहस्थ रे भरोसै रहिणो नहीं। ❀

: २६१ :

नींवली सूं विहार करने स्वामीजी चेलावास पधारै जद मार्ग पूछवा लागा। जद जैचंदजी श्रावक बोल्यौ : स्वामीनाथ। मार्ग तो हूं जाणूं छूं सुखे २ पधारो। आगै नीला मे ले जाय न्हाख्या। मार्ग चोखो लाधो नहीं। जद स्वामीजी जैचंदजी नें घणो निषेध्यौ। तू कहितो थोनी : हूं मार्ग जाणू छूं। जद जैचंदजी बोल्यौ : हूंतो मार्ग चूक गयो। जद स्वामीजी बोल्या : गृहस्थ रे भरोसै रहिणो नहीं। ❀

: २६२ :

दूजो कोई जाव देवै तिणमेंई न समझै अनें आपरी भापारोई आप अजाण तिण ऊपर स्वामी जी दृष्टान्त दियो : एक बाई बोली : म्हारो भरतार आखर लिखै सो बीजा सूं वंचै नहीं। जद दूजी बाई बोली : म्हारो भरतार लिखै सो आप रा लिख्या आप सूंई न वंचै। इसा जगत

में बुद्धिहीण। ज्यूं केइ आपरी भाषा रा आप ही अजाण। त्यानें केवली भाष्या धर्म री ओलखणा किस तरै आवै। ❀

: २६३ :

साधु गोचरी में आहार मंगाया सूं वधतो ल्यायौ। जद स्वामीजी पूछ्यो : आहार बधतो क्यूं आण्यौ। जद ऊ वोल्यौ : जोरावरी सूं न्हाख दियौ। जद स्वामीजी बोल्या : जोरावरी सूं भाठौ न्हांखै तो लेवो के नहीं। ❀

: २६४ :

एकेंद्री मार पंचेंद्री पाष्यां लाभ है इम किणहि कह्यौ। जद स्वामीजी वोल्या : थारौ अंगोछो किणहि खोसनें ब्राह्मण नें दियो तिण में लाभ है के नहीं। अथवा किणहि रो खोडो खोसनें लूंटाय दियो तिण में लाभ है के नहीं। जद कहै : ओ तो लाभ नहीं। उण धणी रा मन विना दीधो तिण सू। जद स्वामीजी बोल्या : एकेंद्री कद कह्यो म्हारा प्राण लूंटनें ओरा नें पोखजो। इण न्याय एकेंद्री नीं चोरी लागी तिण सूं लाभ नहीं। ❀

: २६५ :

दुख ऊपना लोक विलापात करै तिण ऊपर स्वामी जी दृष्टात दियो : किण ही साहुकार गोहा रा खोडा भस्या। ऊपर दर लीपनें तीखा किया। एक पड़ोसी तिण पिण खोड़ा मे धूल खात कचरो न्हाखनै दर लीपनें ऊपर साफ कीधो। गोहा रा भाव आया। एक २ रा दोय २ हुवै। साहुकार खोडो खोल वैचवा लागौ। पाडोसी पिण गोहा री साई लेइ गराक साथै ल्याय खोडो खोल्यौ। माहे खात नीकल्यौ। रोवा लागौ। देखा देख लोग पिण रोवा लागा। देखो बापरा रै गोहूँ चाहीजै नें खात नीकल्यौ। इम कहि रोवा लागा। जद किण ही समजणे पूछ्यौ : अरे थैं माहे घाल्यौ काइ थो। जद रोवतो बोल्यो : म्हे घाल्यो तो थो

हीज थो। जद ऊ वोल्यौ : घाल्यौ खात तो गोहूँ कठासूं नीकलसी? ज्यूं जीव जिसा पुन्य पाप वाध्या तिसा उदय आवै। विलापात किया काइ हुवै। ❀

: २६६ :

चेलावास रा जूंझारसिंहजी ठाकुर, त्या कनै रुघनाथजी आय वोल्या : म्हारै चेलो भीखन है सो वकरा वचाया पाप कहे है। दान दया उठाय दीधी। जद स्वामीजी आय वोल्या : ठाकरा कलाल रा घर नों पाणी साधु नें लेणो के नहीं। जद ठाकर वोल्या : कलाल रा घर नो तो साधु ने लेणो नहीं। जद स्वामीजी वोल्या : इणा नै पूछो ए लेवै के नहीं। जद रुघनाथजी ऊठ नें चालता रह्या। ❀

: २६७ :

गूंदोच में रुघनाथजी स्वामीजी सूं चरचा करता आवसगसूत्र खोलनें वतायो। ओ देखो काउसग भागनैई उंदरा ने मिनकी कना सूं छोड़ाय देणो। जद स्वामीजी उणा रा टोला माहै थका सं० १८११ रा साल रो आवसग काढ वतायो। ओ थारा देखा देख लिख्यौ। तिण में तो ओ अर्थ कोइ मंड्यौ नहीं। जद रुघनाथजी वोल्या : म्है तो ओर नी देखादेख ओ अर्थ घाल्यौ है। जद स्वामीजी वोल्या : इसो भूठो अर्थ घालणो कठे है। जद पोतीयां वंधणीयां वोली : म्हारा पात्रा में ऊन्हौ पाणी ल्यौ इण में पाना परहा गालो। जद रुघनाथजी ने घणो कष्ट थयो। जिन मारग रो उद्योत थयो। घणा लोक समज्या। ❀

: २६८ :

स्वामीजी सूं कोइ चरचा करता मुंढे श्रद्धा रा वोल वेठा तो पिण वोल्यो : आप कहो सो वात तो ठीक छै। पिण केइ वोल पूरा ग्राह्य मे आवै नहीं। जद स्वामीजी दृष्टात दियो। दस सेर चावला री चरू चूला उपर चढाया उपरला चोखा सीज्या हाथ सूं देख्या तो सैणो हुवै ते हेठला पिण सीज्या जाणै अनै मूर्ख हुवै ते जाणै ऊपरला तो

सीज्या पिण हेठै कोरा नहीं। इम विचार हेठै हाथ घाले तो हाथ बले। ज्यूं चतुर हुवै ते मुदै बोल बेठा जाणै बीजा बोल पिण साचा ईज हुसी ❀

: २६९ :

स्वामीजी सूं चरचा करता न्याय निरणो बताया पिण मानै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : किणहि रोगी ने वेद ओषध पावा लागो कहे ओ ओषध पी जा रोग जातो रहसी। जद रोगी बोल्यौ : मू हढा मे तो घालूं नहीं। म्हारा मौरा में कूड दो। ओषध चोखो है तो मोरा मे कूड्याई रोग परहो जासी। जद वैद बोल्यो : पीधा बिना तो रोग न जाय। ज्यूं सूत्र रो वचन साधा रो वचन सरध्या मिथ्यात्व रूप रोग जाय। पिण सरध्या विना कोरो सुणीया न जाय। ❀

: २७० :

• सं० १८५४ रे वर्ष चदू बीरा नें टोला बारै काढी। जद पींपार में आयनें हेमजी स्वामी विराज्या तिण हाट घणा रा श्रावक सुणता साध आर्ग्यां रा अवगुणवाद बोलवा लागी। जद लोक बोल्या : या देखो थारा टोला मांहै हुती सो अबे भीखनजी रा टोला रा अवर्णवाद बोले है। जद स्वामीजी सामली हाट सूं ऊठने पधारनें बोल्या : आ कहै तिण रो थे साच मानौ हो तो आ आगै रुघनाथजी रा टोला मे फतूजी री चेली हुंती। जद फतूजी रे माथै दोष रो मैजर पड्यौ। जद पहली तो आ चंदूजी यूं कहीती थी सूर्य में खेह हुवै तो म्हारी गुरुणी मे खेह हुवै। पछै इण हिज बाई रो ओढवा रो चोमरो कपडो जाच गुरुणी ने ओढायनें नवी दीक्षा दराइ तिका या है। ए स्वामीजी रो वचन सुणनें लोक कानी २ बीखर गया। चंदूजी पिण चालती रही। तिण रो बाप विजैचद लूणावत आदि न्यातीला पिण तिण ने अजोग जाणी। ❀

: २७१ :

केइ कारै श्रद्धा बैठी तो पिण · · रो संग छोडै नहीं। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो। गाड़ा रा बेहूं चीला रै बीच मे गुसलै घर

कियौ। गाड़ा जातां आवतां माथा में डसी री लागै। तो पिण ठिकाणौ छोडै नहीं। इतरे दूजै सुसलै कह्यो : अठै माथा में लागै सो या जागा परही छोड़। जद सुसलो बोल्यो : सैंहदी जागा छूटै नहीं। ज्यूं साची श्रद्धा री रहिस वेठी तो पिण आगला सैंहदा कुगुरु त्यारो संग छोडै नहीं। ❀

: २७२ :

सं० १८५५ पाली में हेमजी स्वामी टीकमजी सूं चरचा करता एक मेसरी बोल्यो : सर्प ने च्यार पइसा देई कालवेल्या कना थी छुडायो तिण रो काइ थयो। जद टीकमजी बोल्यौ : चोखो धर्म थयो। जद ऊ मेसरी बोल्यो : ते सर्प पाधरो ऊंदरा नें विल में गयौ। जद टीकम जी वोल्यौ : माहै ऊंदरो हुसी नहीं तो। ए वात हेमजी स्वामी स्वामीजी ने आय कही। जद स्वामीजी बोल्या : किणहि कागला ने गोली वाही। कागलो उड़ गयौ तो कागला रो आउषो ऊभो। पिण गोली वावणवाला ने तो पाप लाग चूको। ज्यूं साप छोडायो ते साप ऊंदरा ना विल में गयौ। माहैं ऊंदरो नहीं तो उंदरा माथे भाग। पिण सर्प नें छोड़ावण वालो तो हिंसा रो कामी ठहर चूको। भीखणजी स्वामी हेमजी स्वामी ने कह्यौ इसौ जाव देणौ। ❀

: २७३ :

हेमजी स्वामी दीक्षा लेइ दशवैकालिक सीख्या। पछै उत्तराध्ययन सीखवा लागा। जद स्वामीजी वोल्या : वखाण सीख। कंठकला है तिण सूं। मुदै उपगार तो वखाण रो है। मोटा पुरुपां रे इसी उपगार नीं नीत। ❀

: २७४ :

हेमजी स्वामी नें भारमलजी स्वामी कह्यौ : म्है टोला वाला माहिं थी नीकल्या। जद केतला एक वर्षां तांई चोमासा में अंजणा देवकी रो वखाण तीन २ वार वांचता। वखाण थोड़ा तिण कारण। ❀

: २७५ :

सं० १८२४ भीखनजी स्वामी तो चोमासो कंटालीयै कीधौ। भारमलजी स्वामी नें वगड़ी करायौ। बीच में नदी वहै सो मोटा पुरुषा पहिला कहि राख्यौ तिण सूं नदी री ऊली तीर तो स्वामीजी पधारता अनें पैली तीर भारमलजी स्वामी पधारता। माहोंमाहिं वाता कर हेतु युक्ति सीख सुमति आछी तरै दर्शन देई पाछा कंटालीये पधार जाता। अनें भारमलजी स्वामी वगड़ी पधारता। आ वात भारमलजी स्वामी कहिता था। ❀

: २७६ :

भीखनजी स्वामी हेमजी स्वामी ने कह्यौ। म्हैं उणानें छोड़्या जद ५ वर्ष ताइ तो पूरो आहार न मिल्यौ। घी चोपर तो कठै। कपडौ कदाचित् वासती मिलती ते सवा रुपीया री। तो भारमलजी स्वामी कहिता पछेवड़ी आपरै करौ। जद स्वामीजी कहिता १ चोलपटौ थारै करो १ म्हारै करो। आहार पाणी जाचनें उजाड़ में सर्व साध परहा जावता। रूंखरा री छाया तो आहार पाणी मेलनें आतापना लेता, आथण रा पाछा गाम में आवता। इण रीते कष्ट भोगवता। कर्म काटता। म्हैं या न जाणता म्हारो मारग जमसी, नें म्हा मे यूं दीक्षा लेसी ने यूं श्रावक श्राविका हुसी। जाण्यो आत्मा रा कार्य सारसा मर पूरा देसा इम जाणनें तपस्या करता। पछै कोइ २ रे सरधा वेसवा लागी। समझवा लागा। जद थिरपालजी फतैचन्दजी आदि माहिला साधा कह्यौ लोग तो समझता दीसै है। थें तपस्या क्यूं करौ। तपस्या करण में तो म्हें छाईज। थें तो बुद्धिवान छो सो धर्म रो उद्योत करौ। लोका नें समझावो। जद पछै विशेष खप करवा लागा। आचार अनुकंपा री जोड़ा करी व्रत अव्रत री जोड़ा करी। घणा जीवा नै समझाया। पछै वखाण जोड़्या। ❀

: २७७ :

वालपणा में भारमलजी स्वामी लिखणो करता जद वार २ लेखण कढायवो करे। पछै भीखनजी स्वामी बोल्या: थारे लेखण काढवारा

त्याग है। जद आफेइ काढ़वा लागा। इम करता २ लेखण काढवा री कला घणी चोखी आई। ❀

: २७८ :

किणहि रे रोगादिक ऊपना होय तराय करे। जद स्वामीजी वोल्या: यू न करणो। रोगादिक ऊपनां गाढो रहणो। ज्यूं किणहि रै माथै देणो हो। देबारा परिणाम नहीं हुंता। पिण पैलै जवरी सूं लिया। जद मूर्ख तो विलाप करे। समभ्रण हुवै ते देखे देणो मिट्यो। पछैई देणा पड़ता तो पैहलांइ टंटो मिट्यौ। माथा रो ऋण मिट्यौ। ज्यू रोगादिक ऊपना सैणो जाणै वंध्या कर्म भोगव्या टंटो मिट्यौ। यू जाण नें विलाप न करै ❀

: २७९ :

स्वामीनाथ वखाण में भैरूं शीतला नें निषेधै। जद हेमजी स्वामी वोल्या: आप देवता नें निषेधौ सो दोष करेला। जद स्वामीजी वोल्या: वरता रो समदृष्टी देवता रो है सो फोड़ा पाडै तो समदृष्टी इंद्र वज्र री देवै तिण सू डरता साधा नें दुख न देवै। ❀

: २८० :

स्वामीजी वोल्या: मूओ मनुष्य काम आवै तो साधु ससार लेखै गृहस्थ रै काम आवै। साधु कनै कोइ आयौ। पाच रुपिया भूल गयो। दूजो ले गयौ। साधु जाणै इणरा रुपिया है। अनें ऊ ले गयो, आय नें पूछै म्हारा रुपिया अठै था सो कुण ले गयौ, तो साधु वतावै नहीं। एक धर्म सुणावा रो सीजारो है। वाकी सावद्य कामारे लेखै साधु गृहस्थ रे काम आवै नहीं इसो साधु रो मारग है। ❀

: २८१ :

भीखनजी स्वामी गृहस्थ री थकी पाडिहारी सूई कतरणी छुरी रात्रि १ तथा घणा दिना रात्रि राखता। जद ' वोल्या: साध नें सूई रात्रि राखणी नहीं। छुरी कतरणी पिण रात्रि राखणी नहीं। जद स्वामीजी

बोल्या : बाजोट में लोह रा खीला रहै। तथा शंख पत्थर पत्थर ना ओर सिया पिण पाड़िहारा रात्रि रहै छै। तथा लोह रा हमाम दस्ता आदि पिण पाड़िहारा रात्रि गृहस्थ रा थका रहै तिणमे दोष नहीं तो सूई कतरणी छुरी ए पिण गृहस्थ रा थका पाडिहारा रात्रि रहै तिणमें दोष नहीं। ❀

: २८२ :

· · · · · ·· बोल्या : सूई भागै तो तेला रो प्रायश्चित आवै। जद स्वामीजी बोल्या : थारै लेखै बाजोटो भागै तो संथारो करणो। ❀

: २८३ :

·· · ··· बोल्या भीखनजी ए आचार नीं जोडां गावै है सो वादणा गावे है। जद स्वामीजी बोल्या : वादणा तो वगड़ ज्यारा गवीजै है। शुद्ध रीत प्रमाणै चालै ज्यांरा वांदणा कोइ गवीजै नहीं। ❀

: २८४ :

पींपार में भीखनजी स्वामी गाथा कही।

अचित वस्त नें मोल लरावै।
समिति गुप्ति हुवै खडजी।
महाव्रत तो पाचूंइ भागै।
चौमासा रो दण्डजी।
साध मत जाणो इण चलगत सूं।

आ गाथा सुणनें मोजीरामजी बोहरो बोल्यो : अरे जसू उरहो आवरे रा घर तो लूंट लियो ने माथै वले डंड करै। ज्यूं भीखनजी महाव्रत तो पांचूंई परहा भागा कहै। अनै वले चौमासी रो दंड कहै छै। जद स्वामीजी बोल्या : पांच महाव्रत भागा पछे चोमासी रो दड न कह्यो है। इहां तो इम कह्यो है : महाव्रत पांच भागै पिण कतरा भागै। चौमासी रो दंड आवै जितरा भागै इम कही समझाया। ❀

: २८५ :

केइ कहै सावद्यदान में भगवान मून कही है सो वर्त्तमान काल विना पिण मून राखणी। पुन्य पाप न कहिणो। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो :

तीन जणा रे इसी सरधा। एक जणो सावद्यदान में पुन्य सरधै १। एक जणो सावद्यदान में मिश्र सरधै २। एक जणौ सावद्यदान में पाप सरधै ३। या तीनूं जणा अभिग्रह कियो आ संका मिटै तो घर में रहिवा रा त्याग। अवे ए संका काढवा दरवार में तो जाए नहीं। एतो संका काढवा साधां कने ईज आवै। हिवै साधा नें पूछ्या साधु कहै म्हारै तो मून है। तो त्यारी संका किम मिटै। इण लेखै वर्त्तमान काले मून। सुयगडायङ्ग श्रु० १ अ० ११ तथा श्रु० २ अ० ५ अर्थ में मून कही। अनै उपदेश में भगवती श० ८ उ० ६ भगवान गौतम नें कह्यो : तथारूप असंजती नें सचित्त अचित्त सूझतो असूझतो दियां एकंत पाप। इण न्याय उपदेश में छै जिसा फल वताय समझाय साधपणो परहो देणौ। ❀

: २८६ :

केइ कहै साधु सामायक पड़ावै नहीं तो पाड़णी सीखावै क्यूं। जद स्वामीजी वोल्या : साधु सामायक पड़ावे नहीं। सो किसो सामायक नें धको देई पाड़ै है। एक मूहूर्त्त नी सामायक कीधी। अनें १ मूहूर्त थया सामायक तो आय गई। पाड़ै सो तो दोप अतिचार नीं आलोवणा करे है। ते आलोवणा री भगवान री आज्ञा। जिण पाड़वारी पाटी सीखावै है। अनें वर्त्तमानकाल में पड़ावै नहीं। सो ते ऊठनें परहो जाय तिण आश्री पड़ावै नहीं। पिण दोप री आलोवणा कराया सीखाया दोप नहीं। ❀

: २८७ :

एक जणो स्वामीजी सूं चरचा करता ऊंधो अंवलो वोलै। जद स्वामी जी नें किणहि कह्यौ : महाराज ! ए ऊंधो अंवलो वोलै तिण सूं काई चरचा करौ। जद स्वामीजी वोल्या : नान्हों वालक समज न आई जितरै वाप री मूंछा खांचै। पिता री पाग में देवै। पिण समज आयां पछै ऊहीज चाकरी करै। ज्यूं साधा रा गुण न ओलख्या जितरै ए ऊंधो अवलो वोलै गुण ओलख्या पछै ए हीज भाव भक्ति करसी। ❀

: २८८ :

साध राते वखाण देवै। ..... पिण राते वखाण देवै। साध बाजार में ऊतरै। देखादेख ..... पिण बाजार में ऊतरै। इम देखादेख कार्य करै। पिण शुद्ध श्रद्धा आचार विना पाधरी न पड़ै। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : एक साहुकार में पोते तो समझ नहीं अनें पाड़ोसी नी देखादेख व्यापार करै। पाड़ोसी वस्तु खरीदै तिका वस्तु ओ पिण खरीदे। जद पाडोसी विचार्यौ ओ देखादेख करै है के माहें समझ है। जद पाड़ोसी वेटा नें कहै, अवारूं टीपणा तेज है, सो देसावरा सूं खरीदणा। टीपणा थोड़ा दिना में एक २ रा दोय २ हुवै है। ए बात सुणनें साहुकार देसावर जायनें टीपणा जूंना नवा खरीद्या। सो पूंजी रो नास थयो। ज्यूं साधा री देखादेख ...पिण कार्य करै पिण शुद्ध श्रद्धा आचार विना काइ गरज पलै नहीं। ❀

: २८९ :

किणहि कह्यौ . .पिणतपस्या मास खमणादिक करै। लोच करावै। धोवण ऊन्हौं पाणी पीवै। या करणी यारी यूंही जासी कांई। जद स्वामीजी वोल्या : किणहि लाख रुपिया रो देवालो काढ़्यो। पछै पइसा रो तेल आण्यौ तिणरो पइसो परहो दियो तो पइसा रो साहुकार। रुपिया रा गोहूं आण्या नें रुपियो परहो दियो तो रुपीया रो साहुकार। इम पइसा रुपीया रो तो साहुकार थयो पिण लाख रुपीयां रो देवालो काढ़्यो तिण रो साहुकार नहीं। ज्यूं पाच महाव्रत पचखी आधाकर्मी स्थानक निरंतर भोगवै। इत्यादिक अनेक दोप सेवै। तिण रौ प्रायश्चित पिण नहीं लेवै। ओ मोटो देवालौ लोच सूं नें तपस्या सूं कठै ऊतरै। पछै मास खमणादिक पचखे नें चोखो पालै ते तपस्या नो साहुकार पिण पाच महाव्रत भाग्या ते देवालौ किम उतरै। ❀

: २९० :

किणहि कह्यौ उघाड़ै मूंहढै वोलनें साधा नें वहिरावै तो वहिर लेवें अनें एक दाणा ऊपर पण पग लागा लेवै नहीं। घर असूझतो

गिणै ते किण कारण। जद स्वामीजी बोल्या : साधा नें बहिरावै ते मुख्य काया रो जोग है। तिण काया रा जोग सूं चालता उठतां बेसता अजैणा करता बहिरावै तथा बहिरावता फूंक देवै अनें तिणनें पहिला साधां आरै कीधी है तो घर असूझतो है। अनें साधू आरै कियो नहीं अनें ते उठतो अजैणा करै तो ऊहीज असूझतो थयौ। उघाडै मुख बोलै ते वचन रो जोग है, ते बोलता अजैणा सूं घर तथा बोलणवालो एक ही असूझतो नहीं है। उववाइ में कह्यौ : जे निंदा करनें देवै तो लेणौ। तो जे निंदा-करै गाल बोलै ते किसी जैणा कर। इण कारण बोलवारी अजैणा सू तेह नें असूझतो न कहीयै तिण सूं तिणरा हाथ सूं लिया दोष नहीं। ❀

: २९१ :

सं० १८५५ रे आषाढ़ महीने नाथजीद्वारा स्वामीजी घणा साध आर्य्यां सूं विराज्या। तिहा अजबूजी गौचरी उठ्या। किणहि घी बहिरायौ। आगै गया एक बाई घाट बहिरायनें पूछ्यौ : थें किण री आर्य्यां। जद त्या कह्यौ : म्हे भीखनजी स्वामी रा टोला री। जद ते बोली : हे रांडा ! थें पैलकेई म्हारी रोटी ले गई। उरही दो म्हारी घाट। इम कहि घाट लेवा लागी। जद एक ब्रजवासणी वरजे : हे कीकी ! अतीत नें दियो पाछौ मत ले। जद ते बोली : कुता नें न्हाख देसूं पिण इणा कना सूं तो उरहो लेसूं। इम कहि घी सहित घाट जबरी सू उरही लीधी। अजबूजी ए बात स्वामीजी ने आय कही। जद स्वामीजी घणा विमासवा लागा। पछै बोल्या : इण कलिकाल में नहीं पिण देवै ना पिण कहै जाणनें असूझतो पिण होवै, पिण देनें उरहो लेवै ए बात तो नवीज सुणी। ब्रजवासणी रा कहिण थी बात गाम मे फेली। उणरा धणी नें लोक कहै : हाटे तो थें कमावो नें घरे थारी बहू कमावै। ऊ पिण मन में लाजे। थोरा दिनां पछै राखड़ी रे दिन तो एकाएक बेटो मर गयौ। थोडा दिना मे धणी पिण मर गयो। जद सोभजी श्रावक तुकौ जोड़्यौ।

वादर साहरी दीकरी कीकी थारो नाम।
घाट सहित घी ले लियौ। ठालीकर दियो ठाम ॥१॥

कितरायक काल पछै उण रै घर साधु गोचरी गया। वहिरायवा लागी। साधां पूछ्यौ : थारो नाम काई। जद वोली : उवा हूं। पापणी छू। आर्य्यां रा पात्रा माहिं थी चाट लीधी ते। कोई तो परभव मे देखै म्हे इण भव में देख लीधा पापना फल। इम कहि पछतावा लागी। ❀

: २९२ :

स० १८५६ नाथद्वारा में हेमजी स्वामी, स्वामीजी नें कह्यौ : आपां श्रावका रे ईज गोचरी जावा अनुक्रम घरा री गोचरी जावा नहीं सो कारण काइ। जद स्वामीजी बोल्या : अठै द्वेष घणौ तिण सू अनुक्रमें गौचरी न करा। जद हेमजी स्वामी बोल्या : आप फुरमावो तो हूं जाऊं। जद स्वामीजी बोल्या : भलाइ जावौ। जद मोहनगढ़ में गौचरी फिरता एकण घरे गोचरी गया। पूछ्यौ आहारपाणी री जोगवाई है। जद ते वाई वोली : रोटी लूण ऊपर पड़ी है। जद हेमजी स्वामी मैडी ऊपर दूजो घर है तिहा गौचरी गया। ऊपर लै घर वाई ऊंधी अवली वोली : घणौ मौड़ कीधो। पिण रोटी दीधी। घणी वेला लागी। जद वाई जाण्यौ ए साध म्हारा इज दीसै। पाछा हेठा ऊतरता वाई वोली : आप पधारो आहार वहिरो। इम कहि वहिरावा रोटी हाथ मे लीधी। जद हेमजी स्वामी कह्यौ : वाइ तूं कहिती थी रोटी लूण पर पडी है। जद उवा वोली : म्है तो तेरापंथी जाण्या था तिण सू कह्यौ। जद हेमजी स्वामी कह्यौ : वाई छा तो तेरापंथीज। थारो मन हुवै तो दै। जद दोरीसी विना मन वोली ल्यो। पछै आगला घरा गया। आहार पाणी री जोगवाई पूछी जद ते कहै : म्हारै तो तेरापथ्या नें रोटी देवारा त्याग है। जद हेमजी स्वामी वोल्या : रोटी देवारा त्याग है। पाणी हुवै तो पाणी वहिराव। जद ऊठनै पाणी वहिरायौ। पाछै स्वामीजी ने आयनै समाचार सुणाया। स्वामीजी सुणनै राजी हुआ। ❀

: २९३ :

गुरा री कीमत ऊपर स्वामीजी ताकडी री डाड़ी रो दृष्टांत दियौ : जिम ताकडी री डाडी रे ३ वेज हुवै। विचला वेज मे फरक हुवै तो अंतर-

काणी ह्वै। विचलौ वेज तंत ह्वै तो अंतरकाण न पड़ै। ज्यू देव गुरु धर्म विच में गुरु आया। जो गुरु चोखा ह्वै तो देव पिण चोखा ह्वै। धर्म पिण चोखो वतावै। गुरु खोटा ह्व तो देव में फरक पाड़ देवै अनें धर्म मे ई फरक पाड़ देवै। जो गुरु मिलै ब्राह्मण तो देव वतावै शिव अनें धर्म वतावै ब्राह्मण जीमावौ १। गुरु मिलै जो भोपा तो देव वतावै धर्म राजा। धर्म वतावै भोपा जीमावो पाती लेवौ २। गुरु मिलै कामडिया तो देव वतावै रामदेवजी। धर्म वतावै जमा री रात जगावौ कामडी जीमावौ ३। गुरु मिलै मुल्ला तो देव वतावै अल्ला। धर्म वतावै जवै करौ। एर चरंती मेर चरंती। खेत चरंती वहु तेरा। हुकम आया अल्ला साहिव रा सो गला काटू तेरा ४। अनें जो गुरु मिलै निग्रंथ तो देव वतावै असल अरिहंत। धर्म भगवान री आज्ञा में ५। गजी में मूंदी, वासती। तीनूं एकण गोत। जिणनें जैसा गुरु मिल्या तिसा काढिया पोत। इण दृष्टाते जैसा गुरु मिलै तैसाई देव अनें धर्म वतावै। ॐ

: २९४ :

केई अजाण कहै : म्हे तो ओघा मुहपती नें वादा। म्हारै करणी सूं काई काम। तिण ऊपर स्वामीजी वोल्या : ओघा नें वाद्या तिरै तो ओघो तो ह्वै है ऊंन रो अनै ऊंन होवै है गाडर नी। जो ओघा नें वांद्या तिरै तो गाडर ना पग पकरणा। धन्य है माता तूं सो थारो ओघो पैदास हुवै है। अने मुहपती नें वाद्या तिरै तो मुहपती तो होवे है कपास री अनें कपास हुवै वणरो। जो मुहपती नै वांद्या तिरै तो। वण नें नमस्कार करणौ। धन्य है तूं सो थारी मुहपती हुवै है। ॐ

: २९५ :

कोई कहै ए . . . दोप लगावै तो पिण गृहस्थ विचै तो आछा है। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियौ। एक साहुकार नीं हाटे प्रभाते कोई पइसो लेई आयौ। कहै साहजी पइसा रो गुल है। जद तिण पइसौ लेइ वादनै उरहो लिह्यौ। गुल दे दियौ। जाण्यौ प्रभाते तावा नाणा री

वोहवणी हुई। दूजे दिन रुपियो लेई आयौ। कहै साहजी रुपिया रा टका है। जद तिण रुपियो लेइ वांदने उरहो लियौ। टका गिण दिया। मन में राजी हूओ आज रूपा नाणा रो दर्शण हूओ। तीजै दिन खोटो रुपियो लेई आयौ। कहै साहजी रुपइया रा टका है। जद ते राजी होय वोल्यौ : म्हारै काल को गराक आयौ। रुपियौ हाथ मे लेई देखै तो खोटो। मांहैं तावो नें ऊपर रूपो। अलगो न्हाखनै बोल्यौ : प्रभाते खोटा नाणा रो दर्शन हुओ। जद ऊ बोल्यो : साहजी वैराजी क्यू हुआ। परसूं तो म्हैं पइसो आण्यौ सो तावो नाणो वाद्यौ। काले रुपियौ आण्यौ सो रूपो नाणौ वांद्यौ। अनै इणमें तो तावौ रूपो दोनूं है सो दोय वार वादो। जद ऊ वोल्यौ : रे मूरख परसूं तो एकलौ तावो हो सो ठीक। काले एक लौ रूपो हो सो विशेष चोखौ। उवे तो न्यारा २ हा। तिण सूं खोटा नहीं। अनै इणरै माहै तो तावो अनै ऊपर रूपा रो झोल तिण सूं ए खोटो। ए काम रो नहीं। इण दृष्टाते पइसा समान तो गृहस्थ श्रावक। रुपिया समान साधु। खोटा रुपिया समान ....। ऊपर भेष तो साध रो नें लखण गृहस्थ रा। ए खोटा नाणा सरीपा। ना तो साध में ना गृहस्थ में अधवेरा ए वांदवा जोग नहीं। श्रावक ही प्रशंसवा जोग अराधक। साध ही प्रशंसवा जोग आराधक। पिण खोटा नाणा रा साथी भेपधारी आराधक नहीं। ❀

: २३६ :

किणहि कह्यो टोलावाला नें वंदणा किया उवे कहै : दया पालौ। केई पाछो खमावै। अनें आप जी कहो सो कारण काई। जद स्वामीजी वोल्या : नाथा नें कहै आदेश। जद उवे कहै आदि पुरुप कू। पोतै आदेश झेलै नहीं। पोता मे गुण नहीं तिणसू। आदेश कियो ते आदि पुरुप कू भलायौ। गुसाइ नें कहे नमो नारायण। जद ते वोल्या : नारायण। इणरो मुदो ओ म्हा में करामात कोई नहीं है। नमस्कार नारायण कूं करौ। वैष्णु नें कहै राम २ जद उवे कहै रामजी। उणा पिण रामजी ने भलायौ। पोतै झेल्यो नहीं। फकीर नें कहै साइ साहिव। जद ऊ कहै साहिव। उण पिण साहिव नें भलायौ। जती नें कहै गुराजी वंदनां। जद उवे कहै धर्म लाभ।

धर्म करो तो लाभ हुसी। म्हारै भरोसै रहिजो मती। .... नें कहै खमाउं स्वामी, वादूं स्वामी। उवे कहै दया पालो। दया पाल्या निहाल हुसो पिण म्हानें वाद्यां कोई तिरो नहीं। इण रो मुदौ यो है। ए पिण वंदणा भेलै नहीं। घर में माल विना हूंडी सीकारणी आवै नहीं। अनें साधां नें वंदना करै। जद उवे कहै जी थारी वंदना म्है सतकारी थानें वंदणा रो धर्म होय चूको। कोई कहै जी कहिणो कठै चाल्यो है। तिण रो उत्तर : राय प्रसेणी मे सूर्याभ वंदना कीधी जद भगवान ६ बोल कह्या। तिण में जीयमेय सूरियाभा। ए वंदना करो ते थारो जीत आचार है इम कह्यो। कोई कहै जीय शब्द सूत्र मे है थें जी एक अक्षर ईज किम कहो छो। तेह नो उत्तर : ए जीय शब्द नो एक अक्षर जी ते देश है। ते देश कह्या दोष नहीं। सूत्र मे कठैक तो वचन रो पाठ। वयण आवै अनें कठैक वय आवै। इहा पिण देश आयो। तथा धर्मास्तिकाय नें कठैक तो धम्मत्थिकाए एहवो पाठ। कठैक धम्मा धम्मे आकासे। इहा पिण देश कह्यो : तिम जीय ए पाठ नों देश जी इम कहिवै दोष नहीं।

: २६७ :

स्वामीनाथ बोल्या : धर्म तो दया में है। जद हिंसाधर्मी बोल्या : दया २ स्यू पुकारो छो। दया राड़ पड़ी उखरली में लोटै। जद स्वामीजी कह्यो। दया तो माता कही। उत्तराध्ययन अ० २४ आठ प्रवचन माता कहै छै। तिण में दया आय गई। जिम कोई साहुकार आउखो पूरो कियो। लारै तिण री स्त्री रही। सो सपूत हुवै सो तो पिण माता रा यत्न करै अनें कपूत हुवै ते ऊंधा अवला बोलै। माता नें रड़कारा री गाल बोलै। ज्यूं दया रा धणी तो भगवान ते तो मुक्ति गया। लारे साध श्रावक सपूत ते तो दया माता रा यत्न करै। अनें थां जिसा कपूत प्रगटिया सो राड़ २ कहि नें बोलावो।

: २६८ :

साधपणो लेई शुद्ध न पालै अनें साधरो नाम धरावै नाम धराय पूजावें। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : एक मुसला रै पाछै दोय

छाली नाहर दोड़्या। जद सुसलौ न्हासनें विल में पेस गयौ। विल में आगै लूकड़ी वैठी तिण पूछ्यौ : तू सास धमण होय न्हास नें क्यू आयौ। सुसलो कुवदी ते वोल्यो : अटवी ना जानवर भेला होयनें मोनें चोधर पणौ देवै। सो हूंतो कोई लेऊं नहीं। तिण सू न्हासनें उरहो आयो। जद लूकडी वोली : अरे चोधरपणा मे तो वड़ो स्वाद है। जद सुसलो वोल्यो : थारो मन हुवै तो तू लै। म्हारै तो कोइ चाहीजै नहीं। जद लूंकडी चोधरपणौ लेवा वारै नीकली। जद दोनू छाली नाहर उभा हा। सो दोनूं कान पकड़ लिया। जद लोही झरती पाछी आई। जद सुशलै पूछ्यौ : पाछी क्यूं आई। तव लूंकडी वोली : चोधरपणौ में खाचा ताण घणी सो कान टूट गया तिण सूं पाछी आई। ज्यूं साधपणो लेई चोखा न पालै दोप लगावै प्रायश्चित न ले अनें साध रो नाम धरावै लोका मे पूजावै ते इहलोक परलोक में लूंकड़ी ज्यूं खराव ह्व। नरक निगोद मे गोता खाये। ❀

: २९९ :

किणहि कह्यौ : भीखनजी जिहा थें जावौ तिहा लोका रे धसका पडै। जद स्वामीजी वोल्या : गारडू आवै गाम मे ते कहै डाकणिया नें प्रभाते नीला काटा मे वालसा जद धसका डाकणिया रै पड़ै। तथा त्यारा न्यातीला रै पड़ै। पिण दूजा लोक तो राजी हुवै। ज्यू साध गाम मे आयां भेषधारी हीण आचारी ज्यां रै धसका पडै। के त्यारा श्रावका रै धसका पड़ै। अनें हलुकर्मा जीव ह्वै ते तो घणा राजी ह्वै। जाणै वखाण सुणसा। सुपात्रदान देसा। ज्ञान सीखसा। साधा री सेवा करसा। इम राजी हुवै। ❀

: ३०० :

स्वामीजी सू चरचा करता कोइ ऊधो अंवलो वोलै : थारी श्र... कपट री। आचार मे प्रपंच घणो। जद स्वामीजी वोल्या : म्हारी श्र... आचार तो चोखो है। पिण थानें इसीज दीसै है। आप री आख... पीलियो हुवै जद मनुष्य पीला २ निजर आवै। लोका नें कहै आज...

गाम में पीलियो घणो वापरियो मनुष्य पीला ई पीला दीसै। जद लोक बोल्या : मनुष्य तो फरहा फूटरा है। पिण थारी आख में पीलियो है। तिण सूं मनुष्य थारी निजर में पीला आवै है। ज्यूं श्रद्धा तो पोता री कपट री। गुरु पोता रा खोटा ते सूझै नहीं अनें साधां नें खोटा कहै कपट री श्रद्धा कहै। ❀

: ३०१ :

चोखा गुरु खोटा गुरु ऊपरें नावा रो दृष्टात स्वामीजी दियो : तीन नावा। एक तो काठ की साजी नावा, एक फूटी नावा, एक पत्थर नीं नावा। साजी नावा समान तो साधु आप तिरै ओरां नें तारै। फूटी नावा समान भेषधारी, आप डूबै भोलां नें डबोवै। पत्थर की नावा समान तीन सो तेसठ पाषंडी ते प्रत्यक्ष विरुद्ध दीसै। समझु प्रथम तो त्यांनै मांनै नहीं। कदा जो गुरु किया ह्वै तो छोड़णा सोहरा। फूटी नावा सरीषा भेषधारी त्यानें छोड़णां दोहरा। चतुर बुद्धिवान ह्वै ते छोडै। ❀

: ३०२ :

भूखा मरता रोटी रै वासते भेष पहरै त्या नें कहै साधपणों चोखो पालजो। जद स्वामीजी दृष्टांत दियो : पति मूवा तिणरी स्त्री नें सीडी रे बाधनें वालै तिण नें कहै सती माता तेजरा तोड़ज्यो। तो उवा काइ तेजरा तोड़ै। ज्यूं भूखा मरतां रोटी रे वासते भेष पहरे ते कांइ साधपणों पालै। ❀

: ३०३ :

कुगुरां रा पखपाती नें साधु सुहावै नहीं। ते ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : जीमणवार मे तावचालो जीमवा गयो। बीजा लोका नें कहै : पकवान तो कड़वा कीधा। जद लोक बोल्या : म्हांनें तो चोखा लागै। तोनें कड़वा लागै सो थारा डील में जुर है। ज्यूं मिथ्यात रूपियो रोग तिण नें साधु चोखा न लागै। ❀

: ३०४ :

किणहि कह्यौ : भीखनजी थें ढाला में टोलावाला रा चरित ओलषाया सो थांनें किसी खबर पड़ी। जद स्वामीजी बोल्या : म्हें आषाढ़ महिना रा ज्योतषी नहीं छां। काती महिना रा ज्योतसी छां। ज्यूं आषाढ़ महिनां रो ज्योतषी हुवै ते आगूंच काती महिना रो धान रो भाव बतावै। ज्यूं म्हें आगमियै काल आश्री न कही। अनें काती महिना रो ज्योतषी ते भाव वर्त्तै तेहीज कहै। ज्यू म्हें वर्त्तमान चरित्र देख्या जिसा बताया। ❀

: ३०५ :

मिथ्यात रूपियो रोग गमावारो अर्थी तिणनें सरधा आचार री ढालां विशेष प्यारी लागै तिण ऊपर स्वामी दृष्टांत दियो : ज्यूं वैद कहै लो तेजरा री गोली २। तो तेजरो गमावा रो अर्थी तिणनें तेजरा री गोली विशेष प्यारी लागै। ज्यूं श्रद्धा आचार री ढाला साध श्रावक नें तो प्यारी लागै ईज है। अनें उण नै विशेष प्यारी लागै। ❀

: ३०६ :

मिथ्यात मिटावा स्वामीजी हेतु युक्ति दृष्टात देवै। जद किणहि पूछ्यौ : इतरा हेतु युक्ति दृष्टात क्यूं आणों। जद स्वामीजी बोल्या : नीसाणें चोट लागै है। नीसाण बिना चोट नहीं। ज्यूं मिथ्यात गमावा नें अर्थ हेतु युक्ति दृष्टात देवा हा। ❀

: ३०७ :

किणहि पूछ्यौ : आप रो इसो साकड़ो मारग किताक वर्ष चालतो दीसे है। जद स्वामी बोल्या : सरधा आचार में सेंठा रहै। वस्त्र पात्र उपगरण री मर्यादा न लोपै। थानक नहीं बंधीजै। जठा ताई मारग चोखो हालतो दीसे है। आधाकर्मी थानक बंध्यां वस्त्र पात्र री मर्यादा लोप देवै। कल्प लोप नें रहिवो करै जद ढीला पड़ै अनें मर्यादा प्रमाणै चालै जितरै ढीला न पड़ै। ❀

: ३०८ :

आधाकर्मी थानक में रहै अनें घर छोड्या कहै तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : ज्यूं जती रें उपासरो १। मथेरण रे पोशाल २। फकीर रे तकियो ३। भक्तां रे अस्तल ४। फुटकर भक्त रे मंढी ५। कनफड़ा रे आसण ६। सन्यासी रे मठ ७। रामसनेहियां रे राम दुवारो कठेयक कहै राममोहिलो ८। घर रा धणी रे घर ९। सेठरे हवेली १०। गाम रा धणी रे कोटरी। कठेयक कहै रावलो ११। राजा रे महल तथा दरबार १२। अने साधा रे थानक १३। नाम मे फेर है बाकी सगला घर रा घर है। कठेक कसी वूही। कठेयक कुदाला वूहा। पिण छकाया रो आरम्भ तो ज्यूं रो ज्यूं परहो हुओ। ❀

: ३०९ :

अमरसींगजी रो वड़ेरो वोहतजी ने किणहि पूछ्यौ : शीतलजी रा साधा में साधपणो है। जद वोहतजी कह्यौ : उणा में तो किहां थी हूंतो मोमेंई न सरधूं। जद फेर पूछ्यौ। भीखनजी में साधपणो है। जद वोहत जी कह्यौ : उणामें तो हुवें तो अटकाव नहीं। उवे तो रूप करे है। ❀

: ३१० :

जैमलजी पुर में वखाण देतां घणी परिषदा में किणहि गृहस्थ पूछ्यौ : भरी सभा में मिश्र भाषा बोल्यां महामोहणी कर्म बंधै। भीखनजी साध हे के असाध। जद जैमलजी बोल्या : भीखनजी चोखा साध है पिण म्हानें भेषधारी २ कहै तिण सूं म्हेंई निन्हव कह्या छा। ❀

: ३११ :

जैतारण में धीरो पोखरणो तिणनें टोड़रमलजी कह्यौ : भीखनजी कहै थोड़ा दोष सूं साधपणो भागै। जो यूं साधपणो भागै तो पार्श्वनाथजी री २०६ आर्य्यां हाथ पग धोया काजल घाल्या डावरा डावरी रमाया ते पिण मर ने इन्द्रनी इंद्राणिया हुई अनें एकावतारी हुई। जद धीरजी पोखरणै कह्यौ : पूज्यजी आपा री आर्य्यां रे काजल घलावौ हाथ पग धोवावो डावरा डावरी रमावा री आज्ञा दो। सो ए पिण एकावतारी होय जावैं।

जद टोड़रमलजी कह्यौ : रे मूरख म्हें इसो काम क्या नें करां। जद धीरजी कह्यौ : न करावो तो उणा ने सरावो क्यूं। ❀

: ३१२ :

फेर टोडरमलजी धीरे पोखरणे ने कह्यौ : भीखनजी सूत्र नो पाठ उथाप्यौ। साधु नें असूझतौ दिया अल्प पाप वहुत निर्जरा भगवती मे कह्यौ है। जद धीरजी कह्यौ : पूज्यजी आप गोचरी पधारस्या म्हारै कटोरदान में लाडू है। ते कटोरदान गोहा में है सो थारे काढ वहिराय देसूं। म्हारेई अल्प पाप वहुत निर्जरा हुसी। जद टोड़रमलजी कह्यौ : रे मूरख म्हें क्या नै ल्यां। जद धीरजी कह्यौ : न ल्यौ तो थाप क्यूं करो। ❀

ए दृष्टांत केयक तो स्वामीजी रे मूंढै सुण्या। केयक ओर जागा पिण सुण्या। तिण अनुसारे मंड़ाय कोई संक्षेप हुंतो तिणनें उनमान न्याय जाण नै वधास्यौ। विस्तार जाणनें संकोच्यो। तिण में कोइ विरुद्ध आयो हुवै। तथा झूठ लागो हुवै आघो पाछो विपरीत कह्यौ हुवै तो "मिच्छामि दुक्कड़।"

॥ दुहा ॥

संवत उगणीसे तीए। कातिक मास मझार।
सुदि पख तेरस तिथ भली। सूर्यवार श्रीकार॥ १॥
हेम जीत ऋष आदि दे द्वादश संत दिपंत।
श्रीजीद्वारा सहर में। कियो चोमासो धर खत॥ २॥
हेम लिखाया हर्ष सूं लिख्या जीत धर खत।
सरस रसै करी सोभता। भीक्खु ना दृष्टात॥ ३॥
उत्पतिया बुद्धि आगला। भिक्षु गुण भंडार।
हितकारी दृष्टत तसु। साभलतां सुखकार॥ ४॥

★

